खबरें छुपाता नहीं, छापता है

शाह टाइम्स

देहरादून, सोमवार 13 अक्टूबर 2025 देहरादून संस्करणः वर्ष 25 अंक 66 पृष्ठ 12 मूल्य रुपये 5.00

shahtimes2015@gmail.com कार्तिक कृष्ण पक्ष 7 विक्रमी सम्वत् 2082 20 रबी उल सानी 1447 हिजरी नई दिल्ली, मुजफ्फरनगर, देहरादून, हल्द्वानी, मुरादाबाद, बरेली, मेरठ व लखनऊ से प्रकाशित

ऑपरेशन ब्लू स्टार गलत था: चिदंबरम

कहा: इंदिरा गांधी को जान देकर चुकानी पड़ी कीमत

कसौली (हिमाचल प्रदेश)
वार्ता

पूर्व गृह एवं वित्त मंत्री पी. चिदंबरम ने 1984 में इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली सरकार के तहत ऑपरेशन ब्लू स्टार की आलोचना की और इसे गलत तरीका बताया। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इस गलती की कीमत अपनी जान देकर चुकाई।

खुशवंत सिंह साहित्य महोत्सव 2025 में बोलते हुए, पूर्व केंद्रीय गृह और वित्त मंत्री ने कहा कि सिख पूजा स्थल से सेना को बाहर रखकर स्वर्ण मंदिर को पुन: प्राप्त करने के लिए ऑपरेशन ब्लैक थंडर सही तरीका था। पी. चिदंबरम ने कहा कि जून 1984 का ऑपरेशन ब्लू स्टार सेना, पुलिस, खुफिया और सिविल सेवाओं का एक संचयी निर्णय था। उन्होंने कहा कि यहां किसी भी सैन्य अधिकारी का कोई अनादर नहीं है, लेकिन वह (ब्लू स्टार) स्वर्ण मंदिर को पुन: प्राप्त करने का गलत तरीका था। कुछ साल बाद, हमने सेना को बाहर रखकर स्वर्ण मंदिर को पुन: प्राप्त करने का सही तरीका दिखाया। पूर्व केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आप इसके लिए केवल इंदिरा गांधी को दोषी नहीं ठहरा सकते। चिदंबरम लेखिका हरिंदर बावेजा के साथ वे विल शूट यू, मैडम: माई लाइफ : कॉन्फ्लिक्ट पर एक चर्चा के दौरान एक सभा को संबोधित कर रहे थे। ऑपरेशन ब्लू स्टार 1 जून से 10 जून 1984 तक चला 10 दिनों का सैन्य अभियान था। 6 जून 1984 को, पंजाब में जरनैल सिंह भिंडरावाले के नेतृत्व में सिख उग्रवाद को रोकने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के आदेश पर ऑपरेशन ब्लू स्टार के तहत भारतीय सेना ने स्वर्ण मंदिर में धावा बोला था। ऐसी खबर थी कि भिंडरावाले ने स्वर्ण मंदिर परिसर में भारी मात्रा में हथियार छिपा रखे थे। भिंडरावाले कट्टरपंथी सिख संगठन दमदमी टकसाल का प्रमुख था। जून 1984 में स्वर्ण मंदिर परिसर से उग्रवादियों को बाहर निकालने के लिए भारतीय सेना द्वारा शुरू किए गए ऑपरेशन ब्लू स्टार के दौरान वह अपने सशस्त्र अनुयायियों के साथ मारा गया था।

1984 ऑपरेशन ब्लू स्टार सेना, पुलिस, खुफिया और सिविल सेवाओं का संचयी निर्णय था

चिदंबरम के बयान पर कांग्रेस आलाकमान नाराज

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी. चिदंबरम के बयान (ऑपरेशन ब्लू स्टार) पर पार्टी के अंदर सियासी बवाल मच गया है। कांग्रेस के कई नेताओं ने उनके बयान को लेकर नाराजगी जाहिर की है। सूत्रों के मुताबिक, कांग्रेस आलाकमान भी उनके बयान से नाराज है। शीर्ष नेतृत्व से लेकर आम कार्यकर्ता तक उनके हालिया बयान से नाखुश हैं। सूत्रों के मुताबिक, कांग्रेस आलाकमान का कहना है कि वैसे वरिष्ठ नेता जिन्हें कांग्रेस ने सब कुछ दिया है, उन्हें सावधानीपूर्वक बयान देना चाहिए। बार-बार ऐसे बयान देना सही नहीं है। इससे पार्टी की फजीहत होती है। उन्होंने हाल ही में कुछ ऐसे बयान दिए हैं, जिनसे पार्टी को शर्मिंदगी उठानी पड़ी है।

कांग्रेस का इतिहास कमजोरियों से भरा

नई दिल्ली। चिदंबरम के बयान पर केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि चिदंबरम पहले 26/11 पर विदेशी दबाव का खुलासा कर चुके हैं, अब यह बयान। कांग्रेस का इतिहास कमजोरियों से भरा है। बीजेपी प्रवक्ता आरपी सिंह ने कहा कि चिदंबरम ने सच्चाई कही।

हमारा दिल बड़ा है, पाकिस्तान से पूछिए क्या दिक्कत: मुत्ताकी

नई दिल्ली। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी इन दिनों भारत के दौरे पर हैं। इस दौरान उन्होंने पाकिस्तान-अफगानिस्तान के बीच तनाव और भारत की अफगानिस्तान से बढ़ती नजदीकी से संबंधित कई सावलों के जवाब दिए। नई दिल्ली में एक प्रेस वार्ता के दौरान अफगानिस्तान के विदेश मंत्री अमीर खान मुत्ताकी ने साफ किया कि उनके देश को पाकिस्तान या भारत के साथ किसी तरह की परेशानी नहीं है। जब उनसे पूछा गया कि क्या भारत से अफगानिस्तान की बढ़ती दोस्ती की वजह से पाकिस्तान ने तनाव बढ़ाया है, तो उन्होंने कहा कि ये सवाल पाकिस्तान से पूछिए। हमें तो कोई दिक्कत नहीं है, हमारा दिल बड़ा है। मुत्ताकी ने यह भी कहा कि अफगानिस्तान सभी पड़ोसी देशों के साथ शांति और सहयोगपूर्ण संबंध चाहता है, चाहे वो पाकिस्तान हो या भारत। उन्होंने क्षेत्रीय संबंधों में किसी तनाव को खारिज करते हुए कहा कि अफगानिस्तान का मकसद टकराव नहीं, बल्कि सहयोग है। मुत्ताकी ने पाकिस्तान के साथ चल रहे तनाव और तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) को लेकर बड़ा बयान दिया है।

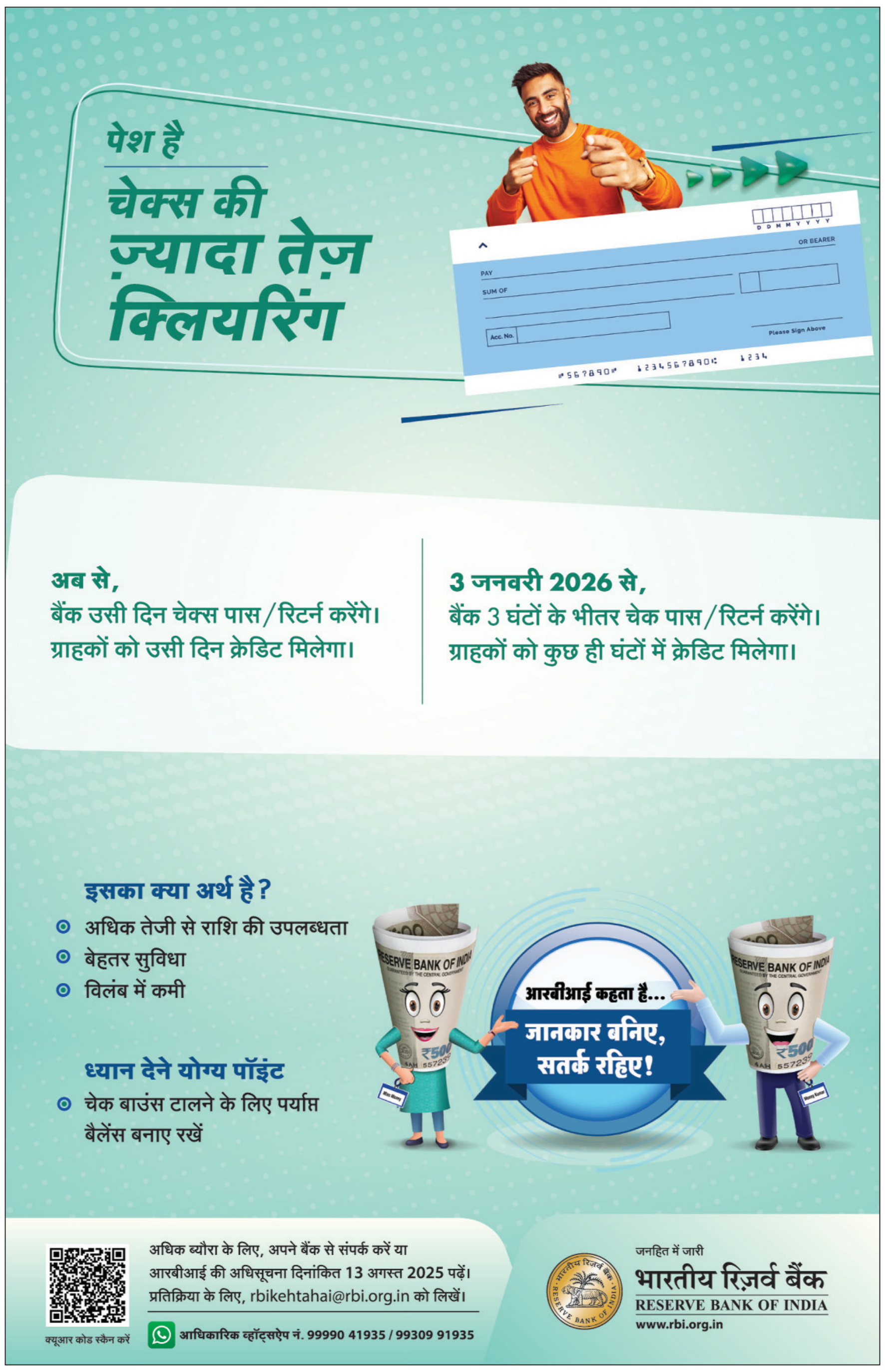

संक्षिप्त समाचार

एनडीए कैडेट अंतरिक्ष की संदिग्ध मौत

बहराइच। उत्तर प्रदेश के बहराइच जनपद के नरैनापुर सुमेरपुर गांव के मूल निवासी 18 वर्षीय अंतरिक्ष कुमार सिंह की पुणे में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। शुक्रवार को उनका शव हॉस्टल के कमरे में छत के कुंडे से लटकता मिला। परिवार ने आरोप लगाया है कि प्रशिक्षण के दौरान एक सीनियर कैडेट द्वारा लगातार उत्पीड़न किया जा रहा था, जिसके चलते यह घटना हुई। अंतरिक्ष के पिता रवि प्रताप सिंह रक्षा सुरक्षा कोर में हवलदार के पद पर गुवाहाटी में तैनात हैं। परिवार पिछले कई वर्षों से लखनऊ के तेजीबाग में रह रहा है। परिवार को जैसे ही घटना की सूचना मिली, मां सीमा सिंह सेंगर, मामा पिंकू सिंह और चाचा रावेंद्र प्रताप सिंह लखनऊ से पुणे के लिए रवाना हो गए, वहीं पिता गुवाहाटी से निकल चुके हैं। अंतरिक्ष का चयन मई 2025 में भारतीय वायुसेना में हुआ था।

एफपीआई ने किया 3,240 करोड़ रुपए का शुद्ध निवेश

मुंबई। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने अक्टूबर में अब तक भारतीय पूंजी बाजार में 3,240 करोड़ रुपए का शुद्ध निवेश किया है। शुद्ध निवेश बाजार में लगाई गई राशि और निकाली गयी राशि का अंतर होता है। इस महीने एफपीआई ने जहां इक्विटी में बिकवाली जारी रखी है, वहीं डेट में उनकी जबरदस्त खरीद जारी है। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने अक्टूबर में शुद्ध रूप से 2,091 करोड़ रुपए की इक्विटी बेची है। वहीं डेट में उन्होंने 4,819 करोड़ रुपए का निवेश किया है। म्यूचुअल फंड से एफपीआई ने 82 करोड़ रुपए की शुद्ध निकासी की जबकि हाइब्रिड इनस्ट्रूमेंट्स में उनका निवेश 594 करोड़ रुपए बढ़ गया।

मोदी सरकार ने आरटीआई को किया कमजोर: कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने कहा है कि 20 साल पहले इसी दिन डा. मनमोहन सिंह की सरकार ने शासन में पारदर्शिता लाने के लिए 'सूचना का अधिकार' (आरटीआई) कानून लागू किया, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने इसे कमजोर करने का काम किया है।

पार्टी ने आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार ने सचाई छिपाने और अपनी कमजोरी जनता के सामने नहीं आने देने के लिए 'सूचना का अधिकार' कानून को सोची समझी रणनीति के तहत कमजोर किया। पार्टी ने कहा कि मोदी सरकार ने इस काम के लिए कानून में संशोधन तक कर डाला। दरअसल उनको डर था कि जनता से किए वादों की पोल खुल न जाए इसलिए सरकार ने कानून ही बदल दिया। कांग्रेस संचार विभाग प्रभारी जयराम रमेश ने रविवार को पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि आरटीआई का मकसद था कि शासन-प्रशासन को जो जानकारी है, वह जनता को भी मिले, लेकिन मोदी सरकार इस कानून को खत्म करने में लगी है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने देश की बागडोर संभालने के चार महीने में ही योजना आयोग खत्म कर दिया और अब उनकी योजना आरटीआई को खत्म करने की है। उनका कहना था कि सूचना आयुक्तों के पदों पर भर्ती नहीं हो रही है।

खड़गे ने पूरण की पत्नी को पत्र लिखकर जताया शोक

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने हरियाणा कैडर के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी वाई. पूरण कुमार के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की और कहा कि शोक की घड़ी में वह पीड़ित परिवार के साथ खड़े हैं। उन्होंने कहा कि जब हम चांद पर झंडा गाड़ कर गौरवान्वित हो रहे हैं, तो संविधान ने जिन लोगों पर जनता के दुख तकलीफ और पीड़ा से मुक्ति दिलाने का दायित्व सौंपा है, उनको भी सुरक्षित नहीं रख पा रहे हैं और यह शर्मनाक और चिंता का विषय है। खड़गे ने पूर्व आईपीएस अधिकारी की पत्नी अमनीत पी. कुमार को लिखे पत्र में कहा कि मैं पत्र को अत्यंत दुख और भावनात्मक व्यथा के साथ लिख रहा हूं।

आजम खां को वाई कैटेगरी सुरक्षा वापस मिली

जेल से बाहर आते ही फिर मिली सिक्योरिटी

शाह टाइम्स ब्यूरो

■ उनकी सुरक्षा में गार्ड एवं गनर उनके आवास पर तैनात कर दिए गए हैं

रामपुर/लखनऊ। समाजवादी पार्टी के नेता और पूर्व कैबिनेट मंत्री आजम खां की सुरक्षा फिर से बहाल कर दी गई है। समाजवादी पार्टी के नेता को फिर से वाई श्रेणी की सुरक्षा प्रदान गई है।

शनिवार से ही उनकी सुरक्षा में तैनात गार्ड एवं गनर तैनात कर दिए गए हैं। इससे पहले कोर्ट से दोषी करार दिए जाने के बाद उनकी विधानसभा सदस्यता खत्म कर दी गई थी। उत्तर प्रदेश सरकार ने समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आजम खान को दी गई 'वाई-श्रेणी' सुरक्षा वापस लेते हुए कहा था कि इसकी जरूरत नहीं थी। उन्हें लखनऊ स्थित सुरक्षा मुख्यालय से एक पत्र मिला था, जिसमें कहा गया था कि रामपुर से 10 बार विधायक रहे आजम खान को वाई-श्रेणी की सुरक्षा देने की कोई जरूरत नहीं है। वाई-श्रेणी की सुरक्षा के तहत आजम खां को तीन बंदूकधारी और सुरक्षाकर्मी दिए गए थे, जो उनके आवास पर चौबीसों घंटे तैनात रहते थे। आज़म खान ने 2022 के उत्तर प्रदेश चुनावों में रामपुर विधानसभा सीट से रिकॉर्ड 10वीं बार जीत हासिल की थी। विधायक बनने के बाद उन्होंने लोकसभा से इस्तीफा दे दिया था। अक्टूबर 2022 में, उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय ने आजम खान को सदन से अयोग्य घोषित करने की घोषणा की, जिसके एक दिन पहले ही अदालत ने उन्हें भड़काऊ भाषण के एक मामले में तीन साल की जेल की सजा सुनाई थी। लेकिन अब 23 महीने के बाद आजम खान जमानत से बाहर आए हैं। उनके जेल से बाहर आने के बाद उनसे मिलने वालों का तांता लगा हुआ है। समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने भी उनसे मुलाकात की थी। उन्होंने आजम खान के खिलाफ केस करने को लेकर भाजपा सरकार पर हमला बोला था। अब जिस तरह से लोग उनसे मुलाकात कर रहे हैं। उनकी सुरक्षा देखते हुए उत्तर प्रदेश प्रशासन ने फिर से वाई श्रेणी की सुरक्षा बहाल कर दी है। शनिवार को बंदूकदारी और गार्ड फिर से उनके आवास पर तैनात कर दी गई है।

योगी ने की सरदार/150 यूनिटी मार्च अभियान की शुरुआत

पटेल के जन्मदिन पर लेंगे नशामुक्ति का संकल्प

लखनऊ, वार्ता

■ 31 अक्टूबर को पूरे यूपी में कार्यक्रम होंगे, स्वदेशी मेले से लोकल फॉर वोकल को बढ़ाया जाएगा

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 31 अक्टूबर से 26 नवंबर तक चलने वाले सरदार/150यूनिटी मार्च अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अभियान को जनता तक पहुंचाने के लिए सरकार और संगठन मिलकर पूरी ताकत से इस अभियान को चलाने का काम करेंगे।

मुख्यमंत्री ने पांच कालिदास मार्ग पर आयोजित संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के बारे में अवगत कराया जा रहा है। वह महान स्वतन्त्र सेनानी होने के साथ ही अखंड भारत के शिल्पकार भी हैं। पूरा देश हमेशा उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है। उन्होंने कई रियासतों को अखंड भारत में मिलाने का काम किया था। श्री आदित्यनाथ ने कहा कि कुछ रियासतें ऐसे भी थीं, जो मनमानी करना चाहती थी लेकिन लौह पुरुष के सामने उनकी एक नहीं चली। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 2014 से ही देशभर में रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। मोदी की अगुवैत में स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी का निर्माण किया गया है। सबसे बड़ी प्रतिमा गुजरात में स्थापित हो चुकी है। यह स्थल आज पूरे देश में पर्यटन का बड़ा केन्द्र बना हुआ है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूरे देश में कार्यक्रमों के आयोजन किए जा रहे हैं। नौजवानों के के लिए विभिन्न तरह के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में सरदार/150यूनिटी मार्च का आयोजन किया गया है। योगी ने कहा कि सरकार ने यह भी निर्णय लिया है कि इसके तहत 10 किलोमीटर की पदयात्रा निकाली जाएगी। इसमें प्रदेश के कलाकरों को भी शामिल किया जाएगा। पदयात्रा के माध्यम से वह 150 किलोमीटर की यात्रा में सहभागी बनेंगे। युवाओं के लिए नशामुक्त भारत अभियान शुरू किया जाएगा। सरकार और संगठन मिलकर पूरे प्रदेश में स्वदेशी मेले का आयोजन किया गया है। इस मेले के माध्यम से सरकार लोकल फॉर वोकल अभियान को मजबूती से आगे बढ़ाने का काम किया जाएगा। स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के संकल्प को आगे बढ़ाने का काम किया जाएगा। इसको लेकर विधानसभा स्तर और लोकसभा स्तर पर कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

सरदार पटेल रन फॉर यूनिटी में दौड़ी मुंबई, मंत्री ने दिखाई हरी झंडी

लखनऊ/मुंबई। एकता, भाईचारे और फिट इंडिया के संदेश के साथ रविवार सुबह मुंबई की सड़कों पर हजारों युवाओं ने दौड़ लगाई। सरदार पटेल रन फॉर यूनिटी मैराथन का शुभारंभ उत्तर प्रदेश सरकार के राज्यमंत्री (अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ एवं हज) दानिश आजाद अंसारी ने प्रात: छह बजे किया। मैराथन के 10, पांच और तीन किलोमीटर वर्गों में मुंबई के विभिन्न इलाकों से आए युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में युवाओं को संबोधित करते हुए मंत्री अंसारी ने कहा कि आज मुंबई की सड़कों से पूरे देश में एकता और भाईचारे का सशक्त संदेश गया है। हजारों युवाओं की भागीदारी यह साबित करती है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'विकसित भारत 2047' का संकल्प अब जन आंदोलन बन चुका है।

राकेश टिकैत ने मायावती की रैली पर उठाए सवाल

बहराइच, वार्ता

■ श्रावस्ती में आयोजित महापंचायत में शामिल हुए

भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश टिकैत रविवार को उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में पहुंचे, जहां उनका भव्य स्वागत किया गया। वह श्रावस्ती में आयोजित एक महापंचायत में भाग लेने जा रहे थे।

कार्यकर्ताओं ने उनका फूल मालाओं से स्वागत किया। इस अवसर पर पत्रकारों से बात करते हुए राकेश टिकैत ने बिहार चुनाव पर टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि अगर चुनाव में बेईमानी हुई, तो यह बेईमानों और पूंजीपतियों की सरकार होगी और अगर ईमानदारी से चुनाव हुआ, तो सत्ता पलट जाएगी। टिकैत ने तालिबान के विदेश मंत्री के बाघा बॉर्डर को खोलने के बयान का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि तालिबान नेता की बात सही है कि बाघा बॉर्डर खुलना चाहिए, ताकि किसानों के लिए परिवहन आसान हो सके। उन्होंने बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती द्वारा लखनऊ में आयोजित एक हालिया रैली पर भी सवाल उठाए। टिकैत ने कहा कि मायावती विपक्ष में हैं और विपक्ष को आपस में लड़ाने का काम कर रही हैं। आजम खान की रिहाई के मुद्दे पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि जब उन पर भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं मिला तो उन्हें बकरी और मुर्गी चोरी के आरोप में 23 महीने तक जेल में रखा गया।

सेंसेक्स 81790.12
निफ्टी 25077.65

सोना रु. 125230
प्रति 10 ग्राम (24 कैरेट)

अर्थ व्यापार

चांदी रु. 180000
प्रति किलो

महंगाई के आंकड़ों पर रहेगी निवेशकों की नजर

मुंबई, वार्ता

सेंसेक्स व निफ्टी बढ़त के साथ बंद

बीते सप्ताह घरेलू शेयर बाजारों में लगातार दूसरी साप्ताहिक तेजी के बाद आने वाले सप्ताह में निवेशकों की नजर महंगाई के आंकड़ों के साथ कंपनियों के तिमाही परिणामों पर भी होगी। आने वाले सप्ताह में खुदरा महंगाई और थोक महंगाई के सितम्बर के आंकड़े जारी होने हैं। इसके अलावा कई दिग्गज कंपनियों की तिमाही परिणाम भी बाजार को प्रभावित कर सकते हैं।

बीते सप्ताह बाजार में तेजी रही। बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 1,293.65 अंक (1.02 प्रतिशत) की छलांग लगाकर सप्ताहांत पर 82,500.82 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी.50 सूचकांक भी 391.10 अंक यानी 1.75 फीसदी चढ़कर 25,285.35 अंक पर पहुंच गया। चौतरफा लिवाली के बीच मझौली और छोटी कंपनियां के शेयरों में भी भेजी रही। निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 2.56 प्रतिशत और निफ्टी स्मॉलकैप-50 सूचकांक 1.43 प्रतिशत चढ़ा। बीते सप्ताह आईटी कंपनियों में जबरदस्ती तेजी रही। एचसीएल टेक्नोलॉजीज का शेयर 7.28 प्रतिशत चढ़ा।

इंफोसिस में 4.68 फीसदी, टीसीएस में 4.35 फीसदी और टेक मलहद्रा में 4.03 फीसदी की तेजी रही। इटरनल का शेयर 6.06 प्रतिशत की बढ़त में रहा। बजाज फाइनेंस में 3.44 प्रतिशत, मारुति सुजुकी में 2.98 प्रतिशत, कोटक महिंद्रा बैंक में 2.32 और भारतीय एयरटेल में भी 2.32 प्रतिशत की तेजी देखी गई। टाइटन का शेयर 2.29 प्रतिशत, सन फार्मा का 2.25 प्रतिशत, अल्ट्राटेक सीमेंट का 2.16 प्रतिशत, एचडीएफसी बैंक का 1.67 प्रतिशत और भारतीय स्टेट बैंक का 1.58 प्रतिशत की साप्ताहिक बढ़त में बंद हुआ। एलएंडटी के शेयर में 1.37 प्रतिशत, रिलायंस इंडस्ट्रीज में 1.36 और आईसीआईसीआई बैंक में 1.15 प्रतिशत की तेजी रही। वहीं टाटा मोटर्स का शेयर सबसे अधिक 5.16 फीसदी लुढ़क गया। ट्रेंट में 2.60 फीसदी, एशियन पेंट्स में 0.76, अडानी पोर्ट्स और एनटीपीसी दोनों में 0.70, और हिंदुस्तान यूनीलिवर में 0.60 फीसदी की गिरावट रही।

धनतेरस से पहले सोने-चांदी की कीमतों में तूफानी तेजी

नई दिल्ली। धनतेरस से पहले सोने-चांदी की कीमतों में एक बार फिर उछाल आया है। 12 अक्टूबर को सराफा बाजारों में सोने और चांदी दोनों की कीमतों में भारी उछाल दर्ज किया गया। त्योहारों का मौसम चल रहा है, लेकिन सोने-चांदी की कीमतों में लगातार उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। आईबीजेए के अनुसार कीमतों में गिरावट कम और तेजी होने से सोने और चांदी की कीमतों ने रिकॉर्ड बना दिया है। चांदी की कीमत भी ऑल टाइम हाई पर है। आज 12 अक्टूबर 2025 को 24 कैरेट सोने का भाव 125230 रुपये प्रति 10 ग्राम है। चांदी की कीमतों की बात करें तो आज चांदी की कीमत 1,80,000 लाख रुपये प्रति किलाग्राम है। देश में फेस्टिव सीजन शुरू है। इस सीजन में लोग गोल्ड-सिल्वर की जमकर खरीदारी करते हैं। ऐसे में खरीदारों के लिए सोने-चांदी खरीदना महंगा हो गया है। धनतेरस-दिवाली पास है, इसलिए इस अवसर पर लोग खूब सोना-चांदी खरीदने का प्लान कर रहे होंगे। इनकी कीमतें लगातार घटती-बढ़ती है। देश के महानगरों दिल्ली में 24 कैरेट सोने का भाव 1,25,230 रुपये प्रति 10 ग्राम है, तो मुंबई में 1,25,080, चेन्नई में 1,25,460, कोलकाता में 1,25,460, जयपुर में 1,25,230, लखनऊ में 1,25,230, चंडीगढ़ में 1,25,230 और अहमदाबाद में 1,25,130 रुपये है। सोना-चांदी की कीमतों में उतार-चढ़ाव विभिन्न कारकों से प्रभावित होते हैं, जैसे वैश्विक सोने की मांग, विभिन्न देशों की मुद्राओं का मूल्य और ब्याज दरें आदि।

दाल, खाद्य तेल, चीनी महंगे, चावल-गेहूं नरम

नई दिल्ली। घरेलू थोक जिंस बाजारों में बीते सप्ताह चावल के औसत भाव में नरमी रही। गेहूं की कीमतों में भी गिरावट देखी गई। वहीं चीनी, खाद्य तेल और दालों के भाव बढ़ गए। घरेलू थोक जिंस बाजारों में सप्ताह के दौरान चावल की औसत कीमत 37 रुपए घटकर सप्ताहांत पर 3,774.53 रुपए प्रति क्विंटल पर रही। गेहूं भी 26 रुपए सस्ता होकर 2,849.28 रुपए प्रति क्विंटल के भाव बिका। आटे की कीमत चार रुपए उतरकर सप्ताहांत पर 3,314.32 रुपए प्रति क्विंटल पर रही। बीते सप्ताह सरसों तेल की औसत कीमत 33 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ी।

पाम ऑयल में भी 20 रुपए की तेजी रही। मूंगफली तेल 166 रुपए और सोया तेल 56 रुपए प्रति क्विंटल महंगा हुआ। सूरजमखी तेल की कीमत 91 रुपए और वनस्पति की 79 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ी। दाल-दलहनों में मसूर दाल की औसत कीमत में 14 रुपए प्रति क्विंटल की साप्ताहिक तेजी दर्ज की गई। चना दाल की कीमत दो रुपए और मूंग दाल की 30 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ गई। तुअर दाल 105 रुपए और उड़द दाल 82 रुपए प्रति क्विंटल महंगी हुई। गुड़-चीनी: सप्ताह के दौरान मीठे के बाजार में गुड़ के औसत भाव 31 रुपए प्रति क्विंटल बढ़ गए। चीनी में भी 43 रुपए प्रति क्विंटल की तेजी रही। खाद्यान्नों के औसत थोक भाव शनिवार को इस प्रकार रहे। दाल-दलहन: दाल चना 7877.80 रुपए, मसूर काली 8144.80 रुपए, मूंग दाल 10108.98 रुपए, उड़द दाल 10453.79 रुपए, अरहर दाल 10525.29 रुपए प्रति क्विंटल। अनाज: गेहूं दड़ा 2849.28 रुपए और चावल 3774.53 रुपए प्रति क्विंटल। चीनी-गुड़: चीनी एस 4350.07 रुपए और गुड़ 5023.14 रुपए प्रति क्विंटल बोले गए। खाद्य तेल: सरसों तेल 17907.00 रुपए, मूंगफली तेल 17680.12 रुपए, सूरजमुखी तेल 15578.12 रुपए, सोया रिफाइंड 13802.48 रुपए, पाम ऑयल 12488.26 रुपए और वनस्पति 14532.62 रुपए प्रति क्विंटल के स्तर पर रहा।

जिहाद के जनक तालिबान को गले लगा रही बीजेपी: महबूबा

श्रीनगर। अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्तकी के भारत दौरे को लेकर जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने रविवार को भाजपा सरकार की आलोचना करते हुए उस पर तालिबान के साथ संबंध बनाते हुए भारत में मुसलमानों को निशाना बनाने का आरोप लगाया।महबूबा मुफ्ती ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट लिखा कि लव जिहाद, भूमि जिहाद, वोट जिहाद और गाय जिहाद के नाम पर भाजपा अपनी ही मुस्लिम आबादी को निशाना बना रही है और उन्हें बदनाम करने वाले नारे लगा रही है। इस बीच भारत, जो लोकतंत्र की जननी है, भाजपा के नेतृत्व में जिहाद के जनक तालिबान को गले लगा रहा है। महबूबा मुफ्ती ने मुस्लिम छात्रों के लिए छात्रवृत्ति वापस लेने के सरकार के फैसले की आलोचना की और इसे दोहरा मापदंड बताया। उन्होंने एक्स पर लिखा- भारत ने अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण के लिए हर तरह की सहायता देने का फैसला किया है, जिसमें अफगान छात्रों के लिए शैक्षिक छात्रवृत्ति भी शामिल है। अफगानिस्तान के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन इससे एक स्पष्ट विरोधाभास पैदा होता है कि भारत की अपनी मुस्लिम आबादी, जिसने देश की पहचान और प्रगति में योगदान दिया है, उसे बुनियादी अधिकारों और अवसरों से वंचित किया जा रहा है। मुस्लिम छात्रों के लिए छात्रवृत्ति वापस लेना इस आंतरिक दोहरे मापदंड को उजागर करता है।

पत्नी की हत्या कर पति ने खुद भी दे दी जान

फतेहपुर। पति ने अवैध संबंध के शक में गोली मारकर पत्नी की हत्या कर दी। इसके बाद खुद की भी जान ले ली, घटना शनिवार रात की है। युवक 2 सप्ताह पहले ही दिल्ली से घर लौटा था। घटना की जानकारी पर पुलिस अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर जांच-पड़ताल की। जिले के गाजीपुर थाना क्षेत्र के लम्हेटा गांव में मुकेश निषाद (35), पत्नी गुड़िया देवी (30) के साथ रहता था। परिवार में 3 मासूम बेटिया हैं। मुकेश दिल्ली में रहकर कोई काम करता था। थानाध्यक्ष गाजीपुर हनुमान प्रताप सिंह सूर्यवंशी ने बताया कि त्योहारों के कारण मुकेश 2 सप्ताह पहले ही गांव लौट आया था। थानाध्यक्ष के अनुसार मुकेश को शक था कि उसकी पत्नी के अवैध संबंध पड़ोसी युवक से हैं। इसे लेकर दंपति के बीच कई दिनों से विवाद चल रहा था।

हर विभाग में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार: सपा

लखनऊ, वार्ता

■ डा. लोहिया के सपने को साकार करने का संकल्प लिया

सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रविवार को डा. राम मनोहर लोहिया की पुण्यतिथि पर उनको नमन किया। उन्होंने गोमतीनगर स्थित लोहिया पार्क पहुंचकर डा. राम मनोहर लोहिया की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के बाद बीजेपी पर जुबानी हमला बोला।

अखिलेश यादव ने आरोप लगाया कि भाजपा द्वारा प्रस्तुत एनसीआरबी के आंकड़ों के अनुसार महिलाएं बड़े पैमाने पर असुरक्षित हैं। भाजपा अपनी नाकामी छिपाना चाहती है। उत्तर प्रदेश में सबसे अधिक उत्पीड़न और अन्याय लगातार हो रहा है, हर विभाग में भ्रष्टाचार है। जिन विभागों को उत्तर प्रदेश के लोगों को सुविधाएं और सहायता प्रदान करनी चाहिए, उनके नौ साल के शासन के दौरान हर विभाग में भ्रष्टाचार व्याप्त है। सपा मुखिया ने अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्तकी की पत्रकार वार्ता में महिला पत्रकारों की एंट्री बैन होने के सवाल पर कहा कि इस पर हम कुछ नहीं कह सकते, यह भारत सरकार की विदेश नीति का मामला है। उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी अपनी नाकामी छुपाना चाहती है। उन्होंने आरोप लगाया कि उत्तर प्रदेश में भ्रष्टाचार हर विभाग में बहुत ज्यादा ही हो रहा है। एक लेखपाल के पास 100 करोड़ की संपत्ति होना इस सरकार की असल तस्वीर दिखाती है। थाने में शिकायतें नहीं लिखी जा रही हैं और सरकार कानून व्यवस्था दुरुस्त होने की बात करती है। उन्होंने आरोप लगाया कि जेपीएनआईसी को बेचने की कोशिश उत्तर प्रदेश सरकार कर रही है, लेकिन मेरे रहते ऐसा नहीं हो पाएगा। यह सरकार विकास कार्य को खत्म कर बर्बाद करने में लगी है।

नेताजी मुलायम सिंह यादव के समय जो पार्क बना था, तब एक भी पेड़ नहीं काटा गया, यही समाजवादी सोच है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार जातिवाद के आधार पर अधिकारियों की तैनाती कर रही है। कई जिलों में पीडीए का अधिकारी तक नहीं है। यह सरकार आरक्षण छीनने का काम कर रही है, बाजार को विदेशी कंपनियों के हवाले कर रही है और स्वदेशी की बात करती है, असल में यह मन से विदेशी है। उन्होंने आरोप लगाया कि डा. लोहिया का सपना समाज में समानता और न्याय था।

शाह टाइम्स क्लासीफाईड्स Sale

स्त्री के सामने लज्जित होने से बेहतर है
आज ही इलाज करा लेना खोई हुई मर्दाना ताकत दोबारा प्राप्त करने के लिए आज ही मिलें या फोन करें।
काजीजादा, अमरोहा-UP
हाशमी दवाखाना
9997161320, 8272800800

काम कोर्स
उदास क्यों?
अधिक संतुष्टि, हैरतअंगेज पावर, शीघ्रपतन, नपुंसकता, बचपन की गलतियों से हमेशा के लिए छुटकारा।
फोन कर घर बैठे औषधियां डाक द्वारा प्राप्त करें।
ऋषि इन्टरनेशनल
08899787114
09808917010

Cipzer
HEALTH WITH CARE
जॉन्डिस क्योर
लिवर का जिगरी दोस्त
भूख की कमी, बदहजमी जॉन्डिस, फैटी लीवर, एल्कोहलिक लिवर डिसीज आदि से लड़ने की ताकत देता है ताकि आप रहे फिट एण्ड एक्टिव
प्रमुख मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध।
86 8484 5757 info@cipzer.com

वैधानिक सूचना
पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार में प्रकाशित होने वाले सभी विज्ञापनों पर कार्यवाही करने से पहले पूरी जांच-पड़ताल कर लें तथा उचित सलाह ले लें। कोई भी अभिदाता जो इस अखबार में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संदर्भ में कोई राशि भेजता है, किसी चिकित्सीय सलाह पर कोई कार्यवाही या खर्च करता है या कोई वचन देता है, तो ऐसा वह स्वविवेक, बुद्धि तथा जोखिम पर करेंगे। कम्पनी, प्रकाशक या उसका कोई कर्मचारी विज्ञापनदाता या उसके किसी उत्पाद या सेवा हेतु किये गये किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन नहीं देते तथा ऐसे विज्ञापनों विश्वास करके किसी व्यक्ति को हुई क्षति, हानि परिणाम के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

पांच डीएम सहित आईएएस व पीसीएस अफसरों के तबादले

22 आईएएस, 18 पीसीएस, 3 सचिवालय सेवा एवं 1 आईएफएस के पदों में फेरबदल

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। उत्तराखंड की धामी सरकार ने रविवार को बड़े पैमाने पर आईएएस एवं पीसीएस अफसरों के तबादले किए हैं। इनमें शासन में वरिष्ठ आईएएस अफसरों यानी सचिवों से लेकर प्रशानिक अफसर तक शामिल हैं। इन तबादलों से ब्यूरोक्रेसी में हलचल मच गई है। सरकार ने एक साथ पांच जिलों के डीएम बदल डाले। नैनीताल में लंबे समय से कार्यरत डीएम वंदना को हटाकर शासन में तैनाती दी गई है। और शासन से ललित मोहन रयाल को डीएम नैनीताल बनाया गया है। कार्मिक विभाग के संयुक्त सचिव राजेंद्र सिंह पतियाल ने अफसरों के ट्रांसफर आदेश रविवार शाम को जारी कर दिए।

बागेश्वर- आकांक्षा कोंडे (IAS-2018)

नैनीताल- ललित मोहन रयाल (IAS-2011)

अल्मोड़ा- अंशुल सिंह (IAS-2018)

चमोली- गौरव कुमार (IAS-2017)

पिथौरागढ़- आशीष भटगाईं (IAS-2017)

इन जिलों के डीएम के हुए ट्रांसफर

सीडीओ हरिद्वार आकांक्षा कोंडे को डीएम बागेश्वर बनाया गया है। ललित मोहन रियाल को शासन से हटाकर नैनीताल का जिलाधिकारी बनाया गया है। नैनीताल की डीएम वंदना को हटाकर कृषि एवं उद्यान विभाग का महा. निदेशक बनाया गया है। अल्मोड़ा के डीएम आलोक पांडे को हटाकर शासन भेजा गया है। हरिद्वार रुड़की विकास प्राधिकरण के वीसी अंशुल सिंह को डीएम अल्मोड़ा बनाया गया है। अपर सचिव गौरव कुमार को शासन से हटाकर जिलाधिकारी चमोली बनाया गया है। चमोली के डीएम डॉक्टर संदीप तिवारी को हटाकर समाज कल्याण का निदेशक बनाया गया है। विनोद गिरि गोस्वामी को डीएम पिथौरागढ़ हटाकर अपर सचिव शहरी विकास विभाग बनाया गया है। जिलाधिकारी बागेश्वर आशीष कुमार भटगाई को डीएम पिथौरागढ़ बनाया गया है।

शासन के अफसरों के विभागों में फेरबदल

वरिष्ठ आईएएस अफसर शासन में सचिव दिलीप जावलकर के पास से ग्रामीण विकास विभाग की जिम्मेदारी हटाई। सचिव डॉ. वीवीआरसी पुरुषोत्तम से निदेशक मत्स्य विभाग का पद हटाया। सचिव चंद्रेश कुमार यादव से पंचायती राज विभाग एवं आयुक्त खाद्य विभाग की जिम्मेदारी हटाई। सचिव रणवीर सिंह चौहान से कृषि एवं उद्यान विभाग के महानिद. ेशक का पद हटाकर आयुक्त खाद्य की जिम्मेदारी दी गई है। सचिव धीरज सिंह गबराल को पहले के विभागों के साथ सचिव ग्रामीण विकास एवं ग्रामीण निर्माण विभाग भी दिया गया है। वरिष्ठ आईएफएस अफसर डॉ. पराग मधुकर धकाते को विशेष सचिव पंचायती राज विभाग भी बनाया गया है। आईएएस विजय कुमार जोगदंडे को अपर सचिव राजस्व की जिम्मेदारी भी दी गई है। विनीत कुमार को अपर सचिव श्रम विभाग की जिम्मेदारी दी है इनके पास से वन विभाग हटा लिया गया है। अपर सचिव हिमांशु खुराना को वन विभाग की जिम्मेदारी मिली है। अपर सचिव अनुराधा पाल को चिकित्सा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग की जिम्मेदारी भी दी गई। अपर सचिव रवनीत चीमा को पुनर्गठन विभाग की जिम्मेदारी दी है लेकिन उनके पास से समाज कल्याण विभाग हटा लिया गया है।

कई प्रशासनिक अधिकारियों के तबादले

हरिद्वार मेलाधिकारी सोनिका को वर्तमान जिम्मेदारियों के साथ-साथ हरिद्वार रुड़की विकास प्राधिकरण का वीसी भी बनाया गया है। अपर सचिव प्रकाश चंद्र को आयुक्त दिव्यांगजन की जिम्मेदारी भी दी है। महानिदेशक विद्यालय शिक्षा दीप्ति सिंह को उद्यान विभाग के निदेशक का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। डिप्टी कलेक्टर पौड़ी सोहन सिंह का रुद्रप्रयाग हुआ ट्रांसफर। डिप्टी कलेक्टर नैनीताल परितोष वर्मा को नगर आयुक्त हल्द्वानी बनाया गया। डिप्टी कलेक्टर उधम सिंह नगर चतर सिंह का पौड़ी गढ़वाल हुआ ट्रांसफर। डिप्टी कलेक्टर पौड़ी अनिल कुमार सान्याल का बागेश्वर तबादला किया गया है। पीसीएस अफसर सचिव लोक सेवा आयोग गिरधारी सिंह रावत को अपर सचिव कार्मिक एवं सतर्कता विभाग बनाया गया है। निदेशक समाज कल्याण चंद्र सिंह धर्मसत्तू को निर्देशक मत्स्य विभाग बनाया गया है। सचिवालय सेवा की अपर सचिव मायावती ढकरियाल को भाषा विभाग की जिम्मेदारी मिली है। अपर सचिव संतोष बडोनी को निदेशक सचिवालय प्रशिक्षण संस्थान बनाया है।

पीसीएस अफसरों को किया इधर से उधर

बाध्य प्रतीक्षा में चल रहे पीसीएस सुनील सिंह को अपर सचिव राजस्व सचिवालय प्रशासन की जिम्मेदारी दी है। अपर निदेशक ललित नारायण मिश्र को सीडीओ हरिद्वार बनाया गया है। पीसीएस अशोक कुमार पांडे को सचिव उत्तराखंड लोक सेवा आयोग की जिम्मेदारी दी गई है। सुंदरलाल सेमवाल को सीडीओ उत्तरकाशी से हटाकर उद्यान विभाग का निद. ेशक बनाया गया है। पीसीएस चंद्र सिंह मार्तोलिया को एडीएम अल्मोड़ा से हटाकर संभागीय खाद्य नियंत्रक कुमाऊं बनाया गया। एडीएम प्रशासन देहरादून जय भारत सिंह को सीडीओ उत्तरकाशी बनाया गया है। पीसीएस राजा अब्बास से अपर नगर आयुक्त नगर निगम देहरादून का पद हटाया गया। एडीएम चंपावत जयवर्धन शर्मा को हटाकर परीक्षा नियंत्रक लोक सेवा आयोग बनाया गया। उप सचिव युक्ता मिश्रा को एडीएम अल्मोड़ा बनाया गया है। कृष्ण नाथ गोस्वामी है को एसडीएम नैनीताल से हटाकर एडीएम चंपावत बनाया गया है। नरेश चंद्र दुर्गापाल को नगर आयुक्त रुद्रपुर से हटाकर संयुक्त संचालक चकबंदी बनाया गया है।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना का किसानों को मिल रहा लाभ

ऊधमसिंहनगर। मुख्यमंत्री ने कहा कि मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के द्वारा खेतों की मिट्टी की वैज्ञानिक जांच कर किसानों को पोषक तत्वों की कमी और आवश्यक उर्वरकों की जानकारी भी दी जा रही है, जिससे उनकी उपज की गुणवत्ता और भूमि की उर्वरता दोनों में सुधार हो रहा है, और इसके साथ ही, किसान मानधन योजना, मिलेट मिशन, बागवानी विकास मिशन, कृषि यंत्र सब्सिडी, बूंदबूंद सिंचाई योजना, डिजिटल कृषि मिशन जैसी अनेकों योजनाओं द्वारा किसानों को लाभ पहुंचाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस वर्ष के बजट में कृषि को विकास का प्रमुख इंजन मानते हुए जहां एक ओर किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट को 3 लाख रुपये से बढाकर 5 लाख रुपये करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया है, वहीं प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ सिंचाई और कृषि तकनीकों के विकास पर भी विशेष फोकस किया गया है। उन्होंने कहा कि आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने देश के अन्नदाताओं को बड़ी सौगात देते हुए 24 हजार करोड़ रुपये की पीएम धन धान्य कृषि योजना और दलहन उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु लगभग 11 हजार 500 करोड़ रुपये की लगात के दलहन उत्पादकता मिशन का शुभारंभ किया है।

पंतनगर में 118 वां अखिल भारतीय किसान मेला व कृषि उद्योग प्रदर्शनी

मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने किया शुभारंभ, संवाद कार्यक्रम में भी हुए शामिल

शाह टाइम्स ब्यूरो

ऊधमसिंह नगर /देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने पंतनगर विश्वविद्यालय में आयोजित 118 वे अखिल भारतीय किसान मेले एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी में प्रतिभाग किया। मुख्यमंत्री ने पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा उत्पादित नवीन दलहनी प्रजातियों का लोकार्पण व पंतनगर प्रवाह नामक पुस्तक का विमोचन किया। मेले में आयोजित रजत जयंती राज्य स्थापना गोष्ठी एवं संवाद कार्यक्रम में संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि इस वर्ष के किसान मेले और कृषि प्रदर्शनी में 400 से अधिक स्टॉल लगाए गए हैं, जिनमें से 200 से अधिक स्टॉल देश के विभिन्न राज्यों से आए कृषि क्षेत्र से जुड़े उद्योगों, स्टार्टअप्स और

उद्यमियों द्वारा लगाए गए हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन मात्र कृषि उत्पादों और यंत्रों के प्रदर्शन तक सीमित नहीं होते, बल्कि ये किसानों, वैज्ञानिकों और उद्यमियों के बीच ज्ञान, अनुभव और नवाचार के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण माध्यम भी होते हैं।

सेब, कीवी, मिलेट, ड्रैगन फ्रूट नीति से बागवानी को नई दिशा इस प्रकार के कृषि मेलों के माध्यम से जहां एक ओर हमारे किसान भाई एक ही स्थान पर नवीनतम कृषि तकनीकों, उन्नत बीजों, आधुनिक यंत्रों और नई शोधों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, वहीं उन्हें विशेषज्ञों के अनुभवों से सीखने और अपने अनुभव साझा करने का अवसर भी मिलता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस मेले में प्रदर्शित की जा रही आधुनिक तकनीकों और नवाचारों के माध्यम से हमारे किसान भाई पारंपरिक तरीकों के साथ-साथ नई वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर अपनी खेती को और भी अधिक उत्पादक, टिकाऊ और लाभकारी बना पाएंगे। उन्होंने कहा कि जिससे न केवल उनकी आय में वृद्धि होगी, बल्कि प्रदेश की कृषि व्यवस्था भी सशक्त और समृद्ध बनेगी। कार्यक्रम में विधायक शिव अरोरा, त्रिलोक सिंह चीमा, सुरेश गाड़िया, राजेश शुक्ला, जिलाधिकारी नितिन सिंह भदौरिया, एसएसपी मणिकांत मिश्रा सभी जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद थे।

नकल विरोधी कानून के लिए कुलपति ने जताया आभार

कुलपति डॉ मनमोहन सिंह चौहान ने यूसीसी व नकल विरोधी कानून लागू करने के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन व निर्देशन में विश्वविद्यालय शोध व प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में पूरे प्रदेश में इंटिग्रेटेड फार्मिंग पर कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि आज प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय बढ़कर 2 लाख 61 हजार हो गई है जो 26 प्रतिशत ग्रोथ रेट पर है। उन्होंने बताया कि मेले में 507 स्टॉल लगाए गए हैं व अभी तक लगभग 20 हजार किसानों द्वारा प्रतिभाग किया गया है।

किसी धर्म के खिलाफ नहीं समान नागरिक संहिता: सीएम

ऊधमसिंहनगर। मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं,यह भी स्पष्ट करना चाहता हूं कि समान नागरिक संहिता किसी धर्म या पंथ के खिलाफ नहीं, बल्कि समाज की कुप्रथाओं को मिटाकर सभी नागरिकों के बीच समानता से समरसता स्थापित करने का एक संवैधानिक उपाय है। परन्तु ये देश का दुर्भाग्य रहा कि स्वतंत्रता के पश्चात कई दशकों तक देश में एक ऐसी पार्टी का शासन रहा जिसने अपने वोट बैंक के चक्कर में यूसीसी को लागू नहीं होने दिया। जबकि विश्व के प्रमुख मुस्लिम देशों सहित दुनिया के सभी सभ्य देशों में पहले से ही समान नागरिक संहिता लागू है। उन्होंने कहा कि हम भली-भांति जानते थे कि भारत में सर्वप्रथम यूसीसी लागू करने का मार्ग सरल नहीं होगा परंतु जब नीयत साफ हो और जनभावना साथ हो, तो कोई भी बदलाव असंभव नहीं रहता।

जोशी ने किया आपदा प्रभावित क्षेत्र सरखेत व घंतूकासेरा का निरीक्षण

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने रविवार मसूरी विधानसभा क्षेत्र के आपदा प्रभावित क्षेत्रों सरखेत और घंतूकासेरा का स्थलीय निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने स्थानीय लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं को विस्तार से जाना और हर संभव सहायता का भरोसा दिलाया।

मंत्री जोशी ने कहा कि राज्य सरकार आपदा प्रभावित परिवारों के साथ खड़ी है और किसी को भी कठिनाई नहीं होने दी जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को दूरभाष के माध्यम से निर्देशित किया कि पुनर्निर्माण और राहत कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूर्ण किया जाए, ताकि प्रभावित क्षेत्रों में जल्द सामान्य स्थिति बहाल हो सके। कैबिनेट मंत्री ने आपदा प्रभावित परिवारों को आश्वस्त

करते हुए कहा कि सरकार तेजी से राहत और पुनर्वास कार्य कर रही है, और जो भी सहायता आवश्यक होगी, वह शीघ्र उपलब्ध कराई जाएगी। इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य वीर सिंह चौहान, अनुज कौशल, विनोद कैंतुरा, कविता सहित क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

भर्ती परीक्षा रद्द होने पर बेरोजगार संघ ने सीएम धामी का जताया आभार

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से रविवार को मुख्यमंत्री आवास में उत्तराखंड बेरोजगार संघ व तकनीकी डिप्लोमा प्राप्त छात्रों के प्रतिनिधिमंडल ने भेंट की। इस अवसर पर प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया कि राज्य सरकार ने युवाओं की भावनाओं का सम्मान करते हुए परीक्षा प्रक्रिया में अनियमितताओं की शिकायतों पर गंभीरता से संज्ञान लिया और संबंधित परीक्षा को निरस्त करने का निर्णय लिया। इस अवसर पर बेरोजगार संघ के अध्यक्ष राम कंडवाल सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

संघ के पदाधिकारियों ने कहा कि सरकार द्वारा परीक्षा की

पारदर्शिता एवं निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए कदम युवाओं में विश्वास और आशा का संचार करते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने जिस तत्परता और संवेदनशीलता के साथ इस मुद्दे पर कार्रवाई की, वह युवाओं के हित में एक ऐतिहासिक निर्णय है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रतिनिधियों को आश्वस्त किया कि राज्य सरकार योग्यता और पारदर्शिता पर आधारित भर्ती प्रक्रिया के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। संघ के प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री से अनुरोध किया कि भविष्य की परीक्षाओं में नकल-रोधी प्रावधानों को और अधिक सुदृढ़ किया जाए तथा भर्ती प्रक्रिया को समयबद्ध रूप से संचालित किया जाए। मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधियों के सुझावों की सराहना करते हुए कहा कि पारदर्शी भर्ती ही सुशासन की पहचान है, और राज्य सरकार इसी दिशा में निरंतर कार्य कर रही है।

पारदर्शिता व जवाबदेही की रक्षा को कांग्रेस का संघर्ष जारी रहेगा

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष करन माहरा ने सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम की 20वीं वर्षगांठ पर कहा कि आरटीआई आधुनिक भारत के सबसे महत्वपूर्ण लो. कतांत्रिक सुधारों में से एक है और इसकी कमजोरी, लोकतंत्र की कमजोरी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का संकल्प पारदर्शिता और जवाबदेही की रक्षा के लिए संघर्ष को जारी रखना है।

माहरा ने कहा कि डॉ. मनमो. हन सिंह के नेतृत्व में यूपीए सरकार और सोनिया गांधी के दूरदर्शी मार्गदर्शन में 12 अक्टूबर 2005 को आरटीआई कानून अस्तित्व में आया था। यह कानून नागरिकों को शासन की पारदर्शिता सुनिश्चित करने और

- आरटीआई की 20वीं वर्षगांठ पर बोले करन माहरा
- आयोग में अधिकांश पद खाली, लाखों अपीलें लंबित और आरटीआई कार्यकर्ता लगातार खतरे में हैं

जवाबदेही तय करने का सशक्त औजार बना। आरटीआई ने आम नागरिकों को उनके अधिकारों ख्र जैसे राशन, पेंशन, मजदूरी और छात्रवृत्ति दिलाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने आरोप लगाया कि 2014 के बाद मोदी सरकार ने इस कानून को कमजोर करने का सिल. सिला शुरू कर दिया। 2019 में हुए संशोधन से सूचना आयोगों की स्वतंत्रता प्रभावित हुई, वहीं 2023 के डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन अधिनियम ने व्यक्तिगत जानकारी के दायरे को इतना बढ़ा दिया कि अब कई जनहित सूचनाएं भी अपवाद बन गई हैं। माहरा ने कहा कि आज केंद्रीय सूचना आयोग में अधिकांश पद खाली हैं, लाखों अपीलें लंबित हैं और आरटीआई कार्यकर्ता लगातार खतरे में हैं। उन्होंने मांग की कि 2019 के संशोधन को निरस्त किया जाए, आयोगों में रिक्तियाँ भरी जाएँ और व्हिसलब्लोअर प्रोटेक्शन एक्ट को तत्काल लागू किया जाए। माहरा ने कहा, "कांग्रेस पार्टी आरटीआई की मजबूती के लिए प्रतिबद्ध है, ताकि हर नागरिक निडर होकर सवाल पूछ सके और जवाब पा सके।" इस अवसर पर मीडिया सलाहकार अमरजीत सिंह, प्रदेश प्रवक्ता सुजाता पॉल, शीशपाल सिंह बिष्ट, महानगर अध्यक्ष जसविंदर सिंह जोगी और महामंत्री नवीन जोशी मौजूद रहे।

कांग्रेस पार्टी की मांगें

1. 2019 के संशोधनों को निरस्त कर सूचना आयोगों की स्वतंत्रता बहाल की जाए। 2. डीपीडीपी अधिनियम की धारा 44(3) की समीक्षा की जाए, जो आर टी आई के जनहित उद्देश्य को कमजोर करती है। 3. केंद्रीय और राज्य आयोगों में सभी रिक्तियाँ पारदर्शी व समयबद्ध प्रक्रिया से भरी जाएँ। 4. आयोगों के लिए कार्य निष्पादन मानक तय किए जाएँ और निपटान दर की सार्वजनिक रिपोर्टिंग अनिवार्य की जाए। 5. व्हिसलब्लोअर प्रोटेक्शन अधिनियम को लागू कर आर टी आई उपयोगकर्ताओं और व्हिसलब्लोअर्स को सशक्त सुरक्षा दी जाए। 6. आयोगों में विविधता सुनिश्चित की जाए, पत्रकारों, कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों और महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिले।

1347 एलटी शिक्षकों को मिलेंगे नियुक्ति पत्र: डॉ. रावत

14 अक्टूबर को देहरादून में मुख्यमंत्री धामी के हाथों किए जाएंगे वितरित

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के माध्यम से चयनित 1347 सहायक अध्यापकों (एलटी) को आगामी 14 अक्टूबर को नियुक्ति पत्र वितरित किये जायेंगे। पटेलनगर स्थित राजकीय दून मेडिकल कालेज के प्रेक्षागृह में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के हाथों सभी चयनित शिक्षकों को नियुक्ति पत्र प्रदान किये जायेंगे। इसके साथ ही चयनित शिक्षकों को प्रदेश के दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यालयों में प्रथम तैनाती दी जायेगी, जिससे दुर्गम क्षेत्रों में शिक्षकों की कमी दूर होगी और छात्र-छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।

सूबे के विद्यालयी शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने बताया कि सहायक अध्यापक (एलटी) भर्ती को लेकर उच्च न्यायालय के आद. ेश के बाद उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग ने माध्यमिक शिक्षा विभाग को चयनित अभ्यर्थियों की सूची उपलब्ध करा दी है। जिसके क्रम में आयोग से चयनित 1347 शिक्षकों को आगामी 14 अक्टूबर को नियुक्ति पत्र वितरित कर दिये जायेंगे। जिसको लेकर विभाग ने सभी तैयारियां पूरी कर ली है। डॉ. रावत ने बताया कि चयनित अभ्यर्थियों को राजकीय दून मेडिकल कालेज पटेलनगर के प्रेक्षागृह में विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के हाथों नियुक्ति पत्र दिये जायेंगे। विभागीय मंत्री ने बताया कि आयोग द्वारा घोषित भर्ती परिणाम को लेकर कुछ अभ्यर्थियों द्वारा उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी। न्यायालय ने सभी वादों का निस्तारण कर 1347 पदों पर नियुक्ति देने के आदेश पारित किये हैं जबकि शेष पदों को रिजर्व रखने के निर्देश दिये गये हैं। डॉ. रावत ने बताया कि इन सभी चयनित शिक्षकों को प्रथम तैनाती राज्य के दूरस्थ एवं दुर्गम क्षेत्रों के विद्यालयों में दी जायेगी ताकि वहां शिक्षकों की कमी दूर कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जा सके। डॉ. रावत ने बताया कि राज्य सरकार का लक्ष्य प्रदेश के प्रत्येक विद्यालयों में विषयवार शिक्षक उपलब्ध कराना है। विभाग लगातार शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने की दिशा में काम कर रहा है। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही प्राथमिक शिक्षा विभाग में 2100 सहायक अध्यापकों व माध्यमिक शिक्षा विभाग में 800 से अधिक पदों पर प्रवक्ताओं की नियुक्ति की जायेगी।

गढ़वाल में 681 और कुमाऊ मंडल में 671 पदों पर शिक्षकों का चयन

देहरादून। विद्यालयी शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने बताया कि आयोग द्वारा उपलब्ध सूची के तहत गढ़वाल मंडल में सामान्य व महिला शाखा में 681 पदों पर शिक्षकों का चयन हुआ है। जिसमें हिन्दी विषय में 112, अंग्रेजी 98, संस्कृत 9, गणित 66, विज्ञान तथा सामान्य विषय 109-109, कला 103, व्यायाम 59, गृह विज्ञान 3, वाणिज्य 11 तथा संगीत विषय में 2 शिक्षक शामिल हैं। इसी प्रकार कुमाऊं मंडल में सामान्य व महिला शाखा में 671 पदों पर शिक्षकों का चयन हुआ है। जिसमें हिन्दी विषय में 90, अंग्रेजी 73, संस्कृत 12, गणित 89, विज्ञान 88, सामान्य विषय 128, कला 127, व्यायाम 45, गृह विज्ञान 8, संगीत 6, उर्दू 1 तथा वाणिज्य विषय में 4 शिक्षक शामिल है।

सीबीआई जांच और पुनः परीक्षा, शंका निवारण को सभी पक्ष रखें धैर्य: भट्ट

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून । भाजपा ने सीबीआई जांच और दोबारा परीक्षा को छात्रों के मन की शंका निवारण के लिए जरूरी बताते हुए, सभी पक्षों से सब्र रखने की अपील की है। प्रदेशाध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट ने कांग्रेसी बयानबाजियों पर तंज कसा कि जिनकी स्वयं जनता में विश्वसनीयता नही बची हो, वे युवाओं के भविष्य के मुद्दे पर भ्रम एवं अफवाह फैलाने में जुटे हैं।

उन्होंने विभिन्न माध्यमों से पूछे गए मीडिया ने सवालों का जवाब देते हुए कहा, मुख्यमंत्री धामी के नेतृत्व में हमारी सरकार युवाओं के भविष्य को लेकर प्रतिबद्ध होकर कार्य कर रही है। हमारे प्रयासों पर प्रदेश की जनता को पूर्णतया

- जिनकी जनता में विश्वनीयता नहीं, वे युवाओं भविष्य के मुद्दे पर भ्रम फैलाने में जुटे : भाजपा

विश्वास हैऔर ये दावा हम यूं ही नहीं करते। विगत 4 वर्षों में हम युवाओं को राज्य निर्माण की सभी सरकारों में दी गई कुल नियुक्तियों से भी अधिक नौकरी देने में सफल हुए हैं। उसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है कि एक भी गड़बड़ी, नकल या पेपर लीक का आरोप नहीं लगा। जिसमें बड़ी भूमिका धामी सरकार द्वारा देश का सबसे कठोर नकल कानून लागू करना रहा। हमने पूर्ववर्ती सरकारों, विशेषकर कांग्रेस सरकारों में जड़ जमाए नकल माफियाओं को उखाड़ने का काम किया, सैकड़ों नकल के आरोपी बड़े छोटे सभी लोगों को गिरफ्तार किया गया। हमारी सरकार वर्तमान सरकार में राज्यवासियों का विश्वास नियुक्ति प्रक्रियाओं में स्थापित करने में सफल हुए हैं। उन्होंने कहा, इसमें कोई दो राय नहीं कि हाल में यूकेएसएसएससी की स्नातक स्तरीय परीक्षा में नकल की एक घटना के दुस्साहस से छात्रों के एक वर्ग में संशय निर्मित हुआ है।

न्यायमूर्ति ने किया विधिक सेवा शिविर के आयोजन का शुभारंभ

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। टिहरी जनपद के ढालवाला स्थित मॉडर्न इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में वृहद विधिक सेवा शिविर का आयोजन बड़े पैमाने पर किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ उत्तराखंड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ति गुहनाथन नरेन्दर ने दीप प्रज्वलित कर किया। शिविर का उद्देश्य आमजन को सरकारी योजनाओं, विधिक सहायता और सामाजिक कल्याणकारी कार्यक्रमों से जोड़ना रहा।

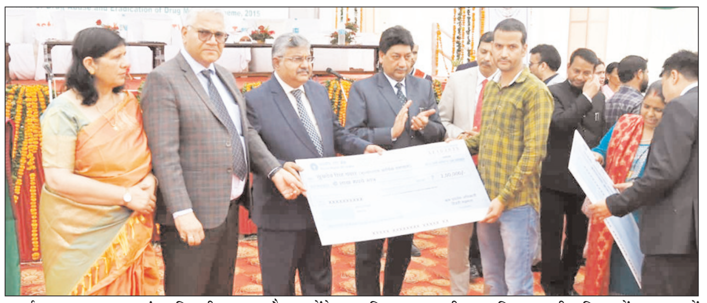

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी (कार्यपालक अध्यक्ष, उत्तराखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण नैनीताल), जिला न्यायाधीश टिहरी अमित कुमार सिरोही, रजिस्ट्रार जनरल योगेश कुमार गुप्ता, सदस्य सचिव प्रदीप कुमार मणि, कार्यपालक अध्यक्ष मंजू तिवारी, जिलाधिकारी नितिका खंडेलवाल, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक आयुष अग्रवाल और जिला बार एसोसिएशन के सचिव सी.एस. राणा सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

मुख्य न्यायमूर्ति गुहनाथन नरेन्दर ने अपने संबोधन में कहा कि आज न्याय विभाग जनता के बीच आकर सेवा दे रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार की अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं इस शिविर के माध्यम से सीधे जनता तक पहुंचाई जा रही हैं। उन्होंने नालसा के तहत आपदा पीड़ितों, नशा पीड़ितों और जरूरतमंद नागरिकों को नि:शुल्क विधिक सहायता उपलब्ध कराने की जानकारी देते हुए लोगों से अपील की कि वे विधिक सेवा प्राधिकरण की सुविधाओं का लाभ लें और अपने अधिकारों के प्रति सजग रहें।

न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी ने कहा कि इस प्रकार के शिविर न्यायपालिका और शासन के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं। राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के सदस्य सचिव प्रदीप कुमार मणि ने बताया कि "वन विलेज वन पीएलवी" योजना के अंतर्गत उत्तराखंड में साढ़े 15 हजार पैरालीगल वॉलंटियर कार्यरत हैं, जो देश में सबसे अधिक संख्या है। उन्होंने बताया कि जनपद टिहरी में अब तक 805 ऑनलाइन शिकायतें प्राप्त हुई हैं, जिनमें से 25 मामलों में मुकदमे दर्ज कर 16 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया है। मुख्य अतिथि द्वारा समाज कल्याण विभाग की ओर से रविंद्र, अर्जुन लाल और राम कुमार को अटल आवास योजना के तहत ध1.30 लाख के चेक, अजीत जोशी, सूरज सिंह और सीमा उनियाल को व्हीलचेयर तथा आजाद भट्ट को बैसाखी प्रदान की गई। श्रम विभाग ने मृतक आश्रितों को 2 लाख की आर्थिक सहायता और विभिन्न लाभार्थियों को 51,000 के चेक वित. रित किए। बाल विकास विभाग ने दस लाभार्थियों को मुख्यमंत्री महालक्ष्मी किट प्रदान की। शिविर में नशामुक्ति से जुड़े पूर्व पीड़ित गोविंद कुमार, सचिन रावत और सचिन नेगी ने अपने जीवन अनुभव साझा कर युवाओं से नशे से दूर रहने की अपील की। स्कूली बच्चों ने नुक्कड़ नाटक और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से समाज में जागरूकता का संदेश दिया।

इस अवसर पर अपर जिला जज नसीम अहमद, प्रधान कुटुंब न्यायाधीश अब्दुल कय्यूम, अपर जिलाधिकारी अवधेश कुमार, जिला विकास अधिकारी मोहम्मद असलम, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट मिथलेश पांडेय, न्यायिक मजिस्ट्रेट कुलदीप नारायण, सचिव आलोक राम त्रिपाठी सहित अन्य न्यायिक अधिकारी, अधिवक्ता, विभागीय अधिकारी और बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

रुद्रप्रयाग में मिलेट मिशन को मिल रहा बल

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। राज्य सरकार की ओर से शुरू की गई स्टेट मिलेट मिशन योजना के अंतर्गत जनपद में पारंपरिक फसल मंडुवा (रागी) के प्रोत्साहन एवं किसानों को उचित मूल्य सुनिश्चित करने को लेकर महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इस वर्ष के लिए सरकार ने मंडुवा का न्यूनतम समर्थन मूल्य एमएसपी 48.86 प्रति किलोग्राम निर्धारित किया गया है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य पर्वतीय क्षेत्रों के कृषकों एवं स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और मोटे अनाजों (मिलेट) की खेती को बढ़ावा देना है।

इस क्रम में मुख्य विकास अधिकारी राजेंद्र सिंह रावत की अध्यक्षता में आयोजित एक समीक्षा बैठक में इस पहल को गति दी गई। बैठक में ग्रामोत्थान परियोजना जिला इकाई के जिला परियोजना प्रबंधक एवं यूएसआरएलएम से जुडेध स्वयं सहायता समूहों एसएचजीएस ने कुल 2500 क्विंटल मंडुवा का संग्रहण किये जाने का लक्ष्य की प्राप्ति के लिये विशेष अभियान चलाने की बात कही। यह संग्रहण लक्ष्य मुख्य रूप से जनपद के कृषकों, स्वयं सहायता समूहों एसएचजीएस उत्पादक समूहों, ग्राम संगठनों, कलस्टर लेवल फेडरेशन (सीएलएफ) एवं आजी. विका संघों के माध्यम से प्राप्त किया जाएगा।मुख्य विकास अधिकारी राजेंद्र सिंह रावत ने बताया कि इस पहल से न केवल कृषकों को उनकी उपज का उचित मूल्य प्राप्त होगा, बल्कि जनपद में मोटे अनाजों की दिशा में एक सकारात्मक वातावरण भी बनेगा।

जड़ी-बूटियों की तस्करी रोकने में वन विभाग नाकाम क्यों

शाह टाइम्स संवाददाता

उत्तरकाशी : उत्तरकाशी जिला वन संपदा का धनी जनपद की सीमा पड़ोसी राज्य हिमाचल, एवं देहराद. ून, टिहरी जनपद से लगी है। भौगोलिक दृष्टि से उत्तरकाशी जनपद उत्तराखंड का सबसे बड़ा जनपद है। जिले से क्षेत्र में जड़ी-बूटियों की तस्करी रोकने में वन विभाग नाकाम साबित हो रहा है। वन विभाग के बैरियर केवल उगाई करने के लिए बनें है। साली में उत्तरकाशी पुलिस ने डुंडा के पास काजल कांठ लकड़ी बरामद किया है। तस्करों ने वन विभाग के गंगोरी और डुंडा बैरियर को कैसे लांघ कर गया?। आगे जाकर पुलिस पकड़ रही है।

कुल मिलाकर उत्तरकाशी जिले में दुर्लभ जड़ी-बूटियों की तस्करी की जा रही है। जंगल की घेराबंदी नहीं होने के कारण तस्कर आराम से जड़ी-बूटियां निकाल लेते हैं। फिर उसे पड़ोसी राज्य हिमाचल के अलावा बड़े शहरों तक भेजा जाता है।

यह जंगल दुर्लभ जड़ी बूटियों का खजाना है। असाध्य रोगों के इलाज में इनका प्रयोग किया जाता है।गौरतलब है कि पूर्व में उत्तरकाशी जिले से 12 से 15 बाघ की खाल बरामद हुए थे। अब ऐसी कोई घर पकड़ होने से कई सवाल खड़े हो रहे हैं की क्या तस्करों ने ईमानदारी का चोला ओढ़ लिया कि उत्तरक. ाशी वन विभाग गंभीर क्यों नहीं।

जड़ी-बूटी के साथ तस्कर गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

उत्तरकाशी: थाना मोरी पुलिस ने बेशकीमती मेडा व पंजा जड़ी-बूटी के साथ 2 तस्करों को गिरफ्तार किया है, जिनके कब्जे से भारी मात्रा में जडी बूटी बरामद हुयी है। शनिवार को थानाध्यक्ष मोरी मोहन कठैत नेतृत्व में पुलिस टीम मोरी-नेटवाड रोड, कुनारा तिराहे पर चौकिंग के दौरान वाहन संख्या न्ज्ञ 07ज्क 1167 (कैम्पर) को चौक किया गया तो वाहन सवार 2 लोगों राजेन्द्र(चालक) व सूरत सिंह के कब्जे से 6 अलग-अलग कट्टों मे भरी 152 किलोग्राम प्रतिबन्धित मेडा तथा एक कट्टे में 15 किला. ेग्राम पंजा जड़ी-बूटी बरामद की गयी।

अभियुक्त गणों द्वारा पूछताछ में बताया गया कि उनके द्वारा यह जड़ी बूटी लिवाड़ी, मोरी के जंगलों से निकालकर एकत्रित की गई है, जिसे बेचने के लिए देहरादून ले जाने के फिराक मे थे।

पुलिस द्वारा वाहन को कब्जे में लेकर सीज किया गया है।

बरामद वन सम्पदा/प्रतिबन्धित जड़ी बूटी के आधार पर अभियुक्तों के विरुद्ध थाना मोरी पर धारा 26/41/42 भारतीय वन अधिनियम के अन्तर्गत अभियोग पंजीकृत किया गया है। मामले में अग्रिम विधिक कार्रवाई जारी है।

गिरफ्तार अभियुक्त, राजेन्द्र सिंह चालक,सूरत सिंह , बरामद माल मेडा जड़ी बूटी -1.52 किलोग्राम,पंजा जड़ी बूटी- 15 किलोग्राम ,इलेक्ट्रॉनिक तराजू- , पुलिस

एएसआई भगत राम नौटियाल, कानि0 आदित्य पंवार,कानि0 बिशन लालकानि0 गणेश राणा, पीआरडी दीपक डोभाल शामिल थे।

एक नजर ....

मिनी मैराथन दौड़ का किया गया आयोजन

कोटद्वार । नगर निगम के अंतर्गत बलभद्रपुर स्थित डीएवी पब्लिक स्कूल की ओर से रविवार को रन फार डीएवी मिनी मैराथन के अंतर्गत पांच किमी. मिनी मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। दौड़ का शुभारंभविद्यालय के प्रधानाचार्य नितिन भाटिया ने हरी झंडी दिखाकर किया। दौड़ में छठवीं से लेकर बारहवीं कक्षा तक के लगभग 150 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। दौड़ मालवीय उद्यान से प्रारंभ होकर झंडा चौक, तीलू रौतेली चौक व गब्बर सिंह कैंप कौडिया से होते हुए वापस डी ए वी स्कूल पहुंचकर समाप्त हुई। दौड़ में आठवीं से बारहवीं कक्षा वर्ग में निशांत गुसाईं ने प्रथम, शुभम नेगी ने द्वितीय एवं पार्थ नेगी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छठवीं एवं सातवीं कक्षा वर्ग में ईवा डोगरा ने पहला, प्रियांशु ने दूसरा और तनुश्री भारद्वाज ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। प्रधानाचार्य नितिन भाटिया ने विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए अन्य प्रतिभागियों की हौसला अफजाई करते हुए कहा कि खेलों का उद्देश्य छात्रों की खेल प्रतिभा को निखारना व खेलों में हिस्सा लेने के लिए प्रेरित करना है, इसलिए सभी छात्रों को खेलकूद में भी प्रतिभाग करना चाहिए। इस अवसर पर विद्यालय का समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

स्नातक स्तरीय परीक्षा तीन महीने के अंदर कराने की मांग

कोटद्वार । बीएड प्रशिक्षित युवा संघ के प्रवक्ता अरविंद दुदपुड़ी ने यूकेएसएसएससी की रद्द की गयी स्नातक स्तरीय परीक्षा हर हाल में तीन महीने के अंदर कराने की मांग की है। रविवार को यहां जारी एक बयान में उन्होंने कहा कि भर्ती परीक्षाओं के न होने व पेपर लीक से युवाओं में आक्रोश फैल रहा है, जो कभी भी आंदोलन का रूप ले सकता है। कहा कि पूर्व में इंटर कालेज प्रवक्ता सहित कुछ अन्य परीक्षाएं स्थगित की गई थी, जो अभी तक नहीं हो पाई हैं। इसलिए युवा हित को देखते हुए सरकार को भर्ती परीक्षाओं को हर हाल में करवाना चाहिए।

कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदेश सरकार के अब तक के कार्यकाल को बताया निराशाजनक

कोटद्वार । जिला कांग्रेस पदाधिकारियों ने प्रदेश सरकार के अब तक के कार्यकाल को निराशाजनक बताया है। कहा कि प्रदेश सरकार विकास के हर मोर्चे पर विफल साबित हुई है। इस संबध में रविवार को पार्टी कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में कांग्रेस जिलाध्यक्ष विनोद डबराल व वरिष्ठ नेत्री रंजना रावत ने कहा कि केंद्र व प्रदेश सरकार आम जन के हितों पर कुठाराघात कर रही है। कोटद्वार विधान सभा के विकास के लिए की गई घोषणाएं अभी तक धरातल पर नहीं उतर पाई हैं। केंद्र व प्रदेश सरकार के इशारे पर मतदाता सूचियों से मतदाताओं के नाम काटे जा रहे हैं। इसी क्रम में कोटद्वार निकाय चुनावों में लगभग दस हजार वोटरों के नाम सूची से काट दिए गए। कहा कि कांग्रेस इस संबंध में साक्ष्य जुटाकर कार्रवाई करेगी। लालढ़ांग-चिलरखाल मोटर मार्ग निर्माण के लिए जनता आंदोलनरत है, लेकिन प्रदेश सरकार सुध ही नहीं ले रही है। क्षेत्र में लोगों के घरों में मना करने के बाद भी जबरन बिजली के स्मार्ट मीटर लगाए जा रहे हैं। शहर की सड़कों पर घूमते आवरा गौ वंशों, आवारा कुत्तों और बंदरों के आतंक से क्षेत्रवासी परेशान हैं, लेकिन सरकारी तंत्र सुध लेने को राजी नहीं है। जंगली जानवर आए दिन काश्तकारों की फसलों को चौपट करने सहित लोगों पर हमला कर रहे हैं, लेकिन प्रदेश सरकार कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं कर पाई है। कहा कि पार्टी इन सब बिंदुओं को लेकर हस्ताक्षर अभियान चलाते हुए जनता को जागरूक करेगी। इस अवसर पर बलबीर रावत, मनवर सिंह रावत और कृपाल सिंह नेगी आदि वरिष्ठ कार्यकर्ता मौजूद रहे।

विधायक ने किया सुमाड़ी में नवोदय विद्यालय का निरीक्षण

रुद्रप्रयाग। रुद्रप्रयाग विधायक भरत सिंह चौधरी ने विकासखंड जखोली के अंतर्गत सुमाड़ी भरदार में निमार्णधीन राजीव गांधी नवोदय विद्यालय का स्थलीय निरीक्षण कर निमार्ण कार्यो का जायजा लिया।

इस दौरान कार्यदायी संस्था के अधिकारियों ने मौके पर बताया कि विद्यालय का 50 प्रतिशत से अधिक कंस्ट्रक्शन का कार्य पूर्ण हो चुका है। वर्ष 2026 के अंत तक विद्यालय बनकर तैयार हो जाएगा। विधायक भरत सिंह चौधरी ने कार्यदायी संस्था को तय सीमा पर गुणवत्ता के साथ कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस विद्यालय के निर्माण से जिले में शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित होंगे जिसका लाभ आने वाले समय में जनपद के बच्चों को मिलेगा।

श्रीनगर के सितारे के लिए आडिशन 16 से

शाह टाइम्स संवाददाता

श्रीनगर। प्रसिद्ध बैकुंठ चतुर्दशी एवं विकास प्रदर्शनी में होने वाली श्रीनगर के सितारे के लिए आडिशन 16 अक्टूबर से होंगे। श्रीनगर के सितारे में प्रतिभाग करने वाले इच्छुक छात्र-छात्राएं आवेदन फार्म नगर निगम श्रीनगर से प्राप्त कर सकते है। श्रीनगर के सितारे प्रतियोगिता के प्रभारी संजय राणा ने बताया कि श्रीनगर के सितारे के लिए आडिशन 16 से 18 अक्टूबर तक होंगे। बताया कि 16 अक्टूबर को होटल वैली इन, 17 को मंगलम वेडिंग हाल उफल्डा और 18 को सुबह 10 बजे से नगर निगम श्रीनगर में आडिशन आयोजित किए जायेंगे। बताया कि प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागी के उम्र 14 से 24 वर्ष तक होनी चाहिए। प्रतिभागी गायन या नृत्य में से एक में ही प्रतिभाग कर सकता है। बताया कि श्रीनगर के सितारे के लिए आवेदन फार्म 15 अक्टूबर तक नगर निगम में जमा करना होगा, तय तिथि के आवेदन फार्म स्वीकार नहीं किए जायेंगे। वहीं दूसरी ओर बैकुंठ चतुर्दशी मेला के उपलक्ष्य में पहली बार श्रीनगर में पहाड़ी परिधान में फैशन शो होगा। महापौर आरती भंडारी ने बताया कि बैकुंठ चतुर्दशी मेले के उपलक्ष्य में होने जा रहे पहाड़ी परिधान फैशन शो में मिस्टर और मिसेज श्रीनगर (पति पत्नी), मास्टर श्रीनगर और मिस श्रीनगर के खिताब से नवाजा जायेगा।

ग्राम वासियों ने सांसद से मुलाकात कर आभार व्यक्त किया

शाह टाइम्स संवाददाता

थराली / देवाल विकासखंड के सैन्य बाहुल्य गांव सवाड़ में लंबे समय से केंद्रीय विद्यालय की मांग कर रहे ग्रामीणों की मांग पूरी हो चुकी है .सैन्य बाहुल्य गांव सवाड़ में केंद्रीय विद्यालय की स्वीकृत मिलने के बाद थराली विधायक भूपाल टम्टा और देवाल के ब्लाक प्रमुख तेजपाल रावत और सवाड़ गाँव के ग्रामीणों ने गढ़वाल सांसद अनिल बलूनी से नई दिल्ली में उनसे मुलाकात की और बलूनी का आभार व्यक्त किया

थराली विधायक भूपाल राम टम्टा ने कहा कि देवाल विकासखंड के दूरस्थ क्षेत्र सैन्य बाहुल्य गांव सवाड़ जिन वीर सैनिकों ने प्रथम विश्व युद्ध से लेकर चाइना वार, द्वितीय विश्व युद्ध तमाम युद्ध में यहां के सैनिकों ने अपना योगदान दिया देश की सरहदों पर चट्टान की तरह डटकर उन्होंने मातृ भूमि के लिए। अपने प्राणों की भी आहुति दी है ।

उन वीरों की भूमि में केंद्रीय विद्यालय स्वीकृत होने पर ग्रामीणों में खुशी का माहौल है, देवाल ब्लॉक प्रमुख तेजपाल रावत उमेश मिश्रा एवं क्षेत्रीय लोगों ने भूपाल राम टम्टा का धन्यवाद अदा किया कहां की लंबे समय से क्षेत्रीय विधायक केंद्रीय विद्यालय स्वीकृत की पहल पर निरंतर प्रयास कर रहे थे आखिरकार वह केंद्रीय विद्यालय स्वीकृत हो गया है

अब यहां के नौनिहालों को अच्छी शिक्षा मिलेगी और वह देश के शीर्ष पदों पर रहकर देश की सेवा करेंगे केंद्रीय विद्यालय की स्वीकृत मिलने पर इस अवसर पर सवाड़ गांव के मेला अध्यक्ष आलम सिंह,थराली के पूर्व मंडल अध्यक्ष नंदू बहुगुणा , विधायक प्रतिनिधि देव सिंह नेगी , पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष दयाल सिंह ,छात्र संघ अध्यक्ष हेमवती नंदन गढ़वाल विश्वविद्यालय महिपाल बिष्ट , नरेंद्र सिंह ,गोविंद सिंह धन सिंह धपोला सभी लोगों ने गढ़वाल सांसद का धन्यवाद किया और कहा कि लंबे समय से केंद्रीय विद्यालय की मांग आखिरकार पूरी हो गई है।

उन्होंने कहा कि ग्रामीणों द्वारा पहले ही भूमिदान की गई थी ,यहां पर टीन सेट भी ग्रामीणों के द्वारा तैयार गये है।

250लोगों ने लिया निशुल्क नेत्र जांच शिविर का लाभ

श्रीनगर। विकासखंड कीर्तिनगर के मढ़ी चौरास में रविवार को हंस फाउंडेशन के ओर से निशुल्क नेत्र जांच शिविर आयोजित किया गया। शिविर में चौरास सहित आसपास क्षेत्र के लोगों ने निशुल्क परामर्श लिया। साथ ही दवाइंया और चश्में वितरित किए गये। जिला पंचायत सदस्य निर्मला भंडारी और पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य डा. प्रताप भंडारी के विशेष सहयोग से लगे शिविर में 250 से भी अधिक लोगों ने शिविर में पहुंचे। शिविर में नेत्र रोग विशेषज्ञ डा. अमित ने मरीजों के आंखों का चौकअप कर परामर्श दिया। जांच शिविर में अधिकांश लोगों में मोतियाबिंद की शिकायत देखी गई।

चुनाव जीतने के बाद जनता से दूरी बना रहे जनप्रतिनिधि: कमलेश

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। जनता की पीड़ा को कोई नहीं समझ रहा है, जिस कारण पलायन होने में लगा है। रुद्रप्रयाग विधानसभा की जनता आंसू बहा रही है। क्षेत्र में गुलदार, सुअर, भालू का आतंक बना हुआ है। पेयजल, बिजली और सड़क के अभाव में लोग परेशान हैं। जनप्रतिनिधियों का दायित्व बनता है कि वे भी जनता के बीच जाएं और उनकी समस्याओं को सुने। चुनाव जीतने के बाद जनप्रतिनिधि जनता के बीच नहीं जा रहे हैं, जिस कारण लोगों की समस्याओं का समाधान नहीं हो पा रहा है।

रुद्रप्रयाग विधानसभा में समस्याओं का अम्बार, सड़कों का निर्माण करना ही विकास नहीं, अन्य समस्याओं का समाधान भी जरूरी,भाजपा प्रदेश सह मीडिया प्रभारी ने की रुद्रप्रयाग में पत्रकार वार्ता

रुद्रप्रयाग जिला मुख्यालय में पत्रकारों से वार्ता करते हुए भाजपा प्रदेश सह मीडिया प्रभारी कमलेश उनियाल ने कहा कि विधानसभा रुद्रप्रयाग के दूरस्थ इलाकों से लेकर तीन सौ के करीब गांवों का भ्रमण किया गया है। क्षेत्र में आज भी जनता मूलभूत समस्याओं से जूझ रही है। क्षेत्रीय जनता अपने जनप्रति. निधियों को सिर्फ चुनाव के समय देख रही है और चुनाव के जीतने के बाद कोई भी जनता का प्रतिनिधि उनके बीच नहीं जा रहा है, जिस कारण ग्रामीण जनता आज भी खुद को ठगा सा महसूस कर रही है। उन्होंने कहा कि विधानसभा के कई इलाकों में जंगली जानवरों का आतंक बना हुआ है। ग्रामीणों की खेती को नुकसान पहुंचाया जा रहा है तो उन्हें अपनी जान का भी भय बना रहता है। गुलदार, सुअर के साथ भालू के आतंक से ग्रामीणों की रात की नींद हराम हो गयी है। उन्होंने कहा कि वे भाजपा के सच्चे सिपाही हैं और उनका मकसद चुनाव लड़ने का नहीं है, बल्कि क्षेत्र की समस्याओं को प्रशासन, शासन और सरकार के समक्ष रखना है। क्षेत्र में जाने पर पता चलता है कि जीते हुए जनप्रतिनिधि कभी क्षेत्र में आने को तैयार नहीं हैं। जनता की समस्याओं को नहीं सुना जा रहा है, जिस कारण जनता आंसू बहाने को मजबूर है। भाजपा नेता ने कहा कि सिर्फ सड़कों का निर्माण करना ही विकास नहीं है। जनता की मूलभूत समस्याओं का समाधान करना भी जरूरी है।

वरिष्ठ कांग्रेस नेता डॉ हरक सिंह रावत के रुद्रप्रयाग विधानसभा से चुनाव लड़ने के बयान पर भाजपा नेता कमलेश उनियाल ने कहा कि चर्चाओं में बने रहने के लिए डॉ रावत ऐसा कृत्य करते हैं। रुद्रप्रयाग विधानसभा की जनता सबकुछ जानती है। सैनिक स्कूल का कार्य आज तक अधर में लटका पड़ा है। उनके तत्कालीन विधायक रहते हुए रुद्रप्रयाग विधानसभा की जनता को बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ा है और आज भी स्थिति जस की तस बनी हुई है।

खुरपका-मुंहपका रोग से पशु पालक रहें सावधान

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। खुरपका-मुंहपका रोग को लेकर पशु संचालकों को सावधानी बरतने की जरूरत है। ये एक अत्यधिक संक्रामक वायरल बीमारी है, जो मवेशियों को प्रभावित करती है। इसके मुख्य लक्षणों में तेज बुखार, मुंह और खुरों के बीच छाले, लार टपकना और चारा न खाना शामिल है। यह रोग सीधे या दूषित वस्तुओं और हवा के माध्यम से फैलता है और आर्थिक रूप से बहुत हानिकारक हो सकता है। ऐसे में इस बीमारी के नियंत्रण को लेकर पशु पालन विभाग टीकाकरण और संक्रमित पशुओं को अलग करने की कार्यवाही में जुटा हुआ है।

इन दिनों जिले में पशु पालन विभाग की ओर से खुरपका-मुंहपका रोग की रोकथाम को लेकर टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है। बीते चार अक्टूबर से 7वें राउंड का वैक्सीनेशन कार्यक्रम किया जा रहा है। जनपद में लगभग 75 हजार बडेध और 35 हजार के करीब छोटे पशु हैं। पशुओं को इस बीमारी के प्रकोप से बचाने के लिए टीकाकरण ही एक मात्र उपाय है। 45 दिनों में 70 हजार पशुओं के टीकाकरण का लक्ष्य रखा गया है। इसमें पशुपालन विभाग की टीम लगी हुई है। पशुपालन विभाग की माने तो आने वाले समय में इस बीमारी को जड़ से समाप्त करने की कोशिश की जा रही है।

उप मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ अशोक लीलाधर बिष्ट ने कहा कि खुरपका एवं मुंहपका रोग एक विषाणु (वायरस) के कारण होता है, जिसे एफ्थोवायरस कहा जाता है। यह वायरस सीधे संपर्क, दूषित वस्तुओं, चारा, या हवा के माध्यम से फैलता है और जानवरों में बुखार, मुंह, थन और खुरों के बीच छाले जैसे घावों का कारण बनता है.।

इसमें पशुओं में कमजोरी और दुबलापन देखा जाता है और युवा पशुओं में मृत्यु दर अधिक हो सकती है। इसका नियमित अंतराल पर टीकाकरण करवाना सबसे प्रभावी तरीका है, जबकि इसके लक्षण पाये जाने पर संक्रमित पशुओं को तुरंत स्वस्थ पशुओं से अलग किया जाना चाहिए। बीमार पशुओं के बाड़े और उनके संपर्क में आने वाली हर चीज को कीटाणुनाशक से साफ किया जाना चाहिए। पशुओं की देखभाल करने वाले व्यक्तियों को स्वच्छता बरतनी चाहिए और प्रभावित पशुओं के लार और घावों के संपर्क में आने से बचना चाहिए। उनके संपर्क में आने के बाद हाथ अच्छी तरह धोना चाहिए। लार और घावों के संपर्क में आने वाली दूषित वस्तुओं को जला देना चाहिए या जमीन में गाड़ देना चाहिए।

सहकारिता और कृषि विभाग के संयुक्त प्रयासों से किसान आत्मनिर्भर बन रहे: उनियाल

शाह टाइम्स संवाददाता

श्रीनगर आवास विकास मैदान में आयोजित सहकारिता मेले में रविवार को पौड़ी जनपद के 156 किसानों को कुल 2 करोड़ 21 लाख 50 हजार रुपये का ब्याजमुक्त ऋण वितरित किया गया। इस मौके पर समूहों के ओर आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने दर्शकों का मनमोहा।

कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि वन एवं पर्यावरण मंत्री सुबोध उनियाल एवं सहकारिता मंत्री डा. धन सिंह रावत ने मेले का संयुक्त रूप से शुभारंभ किया। मौके पर कैबिनेट मंत्री सुबोध उनियाल ने कहा कि सहकारिता और कृषि विभाग के संयुक्त प्रयासों से किसान आत्मनिर्भर बन रहे हैं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी व सहकारिता मंत्री डा. धन सिंह रावत के नेतृत्व में राज्य का सहकारी क्षेत्र देश में उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। सहकारिता मंत्री डा. रावत ने कहा कि मेलों के माध्यम से किसानों व महिला समूहों को अपने उत्पाद बेचने और योजनाओं की जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है। उन्होंने बताया कि राज्य सरकार लघु व सीमांत कृषकों को 1 लाख तक फसली ऋण तथा पशुपालन व मशरूम उत्पादन के लिए 1.60 लाख से 5 लाख तक ब्याजमुक्त ऋण उपलब्ध करा रही है। इस दौरान पंडित दीनदयाल उपाध्याय सहका. रिता किसान कल्याण योजना के अंतर्गत 156 किसानों को कुल 2 करोड़ 21 लाख 50 हजार रुपये का ब्याजमुक्त ऋण वितरित किया गया। जिसमें रिखणीखाल ब्लॉक के 55 किसानों को 79 लाख, नैनीडांडा ब्लॉक के 61 किसानों को 84.50 लाख, बिरोखाल ब्लॉक के 40 किसानों को 58 लाख रुपए का ब्याज मुक्त ऋण मिला। कार्यक्रम में विधायक लैंसडाउन महंत दिलीप रावत, मुख्य विकास अधिकारी पौड़ी गिरीश गुणवंत, अपर निबंधक सहक. ारिता आनंद शुक्ल, मेला संयोजक मातवार सिंह रावत सहित अनेक अधिकारी, कर्मचारी, महिला समूह और ग्रामीण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

45 लाख की हेरोइन जब्त नशा तस्कर गिरफ्तार

ऊधम सिंह नगर में बड़ी सफलता, 151 ग्राम हेरोइन व बाइक बरामद

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड को श्ड्रग्स फ्री देवभूमिश बनाने की मुहिम में स्पेशल टास्क फोर्स ने एक और बड़ी सफलता हासिल की है। एंटी नारकोटिक्स टास्क फोर्स ने ऊधम सिंह नगर जिले के थाना नानकमत्ता क्षेत्र में एक नशा तस्कर को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से करीब घ्45 लाख मूल्य की 151.17 ग्राम अवैध हेरोइन जब्त की है।

एसटीएफ के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक नवनीत भुल्लर के निर्देश पर, अपर पुलिस अधीक्षक स्वप्न किशोर सिंह और सीओ परवेज अली के निर्देशन में यह कार्रवाई हुई। प्रभारी निरीक्षक पावन स्वरुप के नेतृत्व में एसटीएफ कुमाऊं यूनिट ने

नानकमत्ता पुलिस टीम के साथ मिलकर कल शाम लालपुर से तस्कर बलदेव सिंह निवासी गुलाब सिंह का माजरा थाना कैलाखेड़ा को गिरफ्तार किया। हेरोइन के साथ ही एक बिना नंबर प्लेट की पल्सर मोटरसाइकिल भी बरामद की गई है।

सामने आया तस्करी का नेटवर्क

पूछताछ में अभियुक्त बलदेव सिंह ने बताया कि उसे यह हेरोइन नानकमत्ता के प्रिंस सिंह ने दी थी। प्रिंस सिंह की माँ सुरेंद्र कौर उर्फ जमुना पर भी नानकमत्ता थाने में हेरोइन तस्करी का मुक. दमा दर्ज है।गिरफ्तार तस्कर का आपराधिक इतिहास भी सामने आया है। बलदेव सिंह पर उत्तर प्रदेश (रामपुर के थाना मिलक) और उत्तराखंड (थाना कैलाखेड़ा व थाना गदरपुर) में पहले से ही कई मुकदमे दर्ज हैं। एसटीएफ की टीम अन्य ड्रग्स तस्करों के नामों पर भी अब सख्त कार्रवाई की तैयारी कर रही है।

नगर पंचायत अध्यक्ष सुमित चौधरी ड्राइवर की छुट्टी पर खुद बने चालक

विकासनगर। जिम्मेदारी और सेवा भावना की मिसाल पेश करते हुए नगर पंचायत सेलाकुई के चेयरमैन सुमित चौधरी ने आज ऐसा उदाहरण पेश किया जिसने सभी का दिल जीत लिया। जानकारी के अनुसार, शनिवार को पालिका के एक ड्राइवर की छुट्टी के चलते आज सुबह शहर में कूड़ा निस्तारण का कार्य प्रभावित हो गया था। जब यह जानकारी चेयरमैन सुमित चौधरी को मिली, तो उन्होंने बिना किसी देर किए स्वयं आगे बढ़कर कमान संभाली। सुमित चौधरी खुद ट्रैक्टर-ट्रॉली चलाते हुए कूड़ा संग्रहण स्थल से कूड़ा उठाकर डंपयार्ड तक पहुंचे और निस्तारण कार्य पूरा कराया। चेयरमैन का यह जिम्मेदारी भरा कदम देखकर पालिका कर्मियों और स्थानीय लोगों ने उनकी खूब सराहना की। लोगों का कहना है कि सुमित चौधरी ने यह साबित कर दिया है कि "नेतृत्व सिर्फ आदेश देने का नहीं, बल्कि खुद उदाहरण बनने का नाम है।" उनके इस जज्बे ने न केवल कर्मचारियों को प्रेरित किया।

नफरत की राजनीति के खिलाफ होगा संघर्ष

शाह टाइम्स संवाददाता

अल्मोड़ा। अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति का जिला संग्रहालय सभागार में आठवां जिला सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन में महिलाओं ने शिक्षा, स्वास्थ्य, महंगाई, बेरा. जगारी के मुद्दे उठाए। महिलाओं पर हो रहे हमलों और नफरत की राजनीति के खिलाफ संघर्ष तेज करने का आह्वान किया। पर्यवेक्षक समिति की राज्य अध्यक्ष अधिवक्ता सुनीता पांडे ने कहा कि वर्तमान राजनीतिक परिवेश आम आदमी को उसके नागरिक अधिकारों से कोसों दूर कर रहा है। कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और निर्णय लेने के फैसलों पर बेड़ियां कस रही है। प्रगतिशील ताकतों और महिला आंदोलनों को कुचलने के प्रयास किए जा रहे हैं। डा. विजया ढौंडियाल ने कहा राज्य बनने के 25 साल बाद भी मुजफ्फर

नगर कांड के दोषियों को सजा नहीं मिल पाई है, जबकि राज्य बनने में महिलाओं का संघर्ष एवं बलिदान अहम रहा है, लेकिन पहाड़ में महिलाएं चौतरफा बोझ से दबी हुई है। डा. आराधना शुक्ला ने कहा की आज के दिन की सबसे बड़ी जरूरत है कि महिलाएं संवैधानिक अवसरों का इस्तेमाल करते हुए अपने आत्मसम्मान के लिए एकजुट होकर अधिकारों को हासिल करें। सम्मेलन में जिला समिति की 17 सदस्यीय नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से जिला अध्यक्ष पद पद डा. आराधना शुक्ला, सचिव ऋतु रावत, कोषाध्यक्ष राधा नेगी को मनोनीत किए गए। वहीं सम्मेलन में जिले की विगत तीन वर्षों की सांगठनिक रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। यहां आशा भारती, जय पांडे, कांता नेगी, पार्वती रावत, नीमा, जयंती, सरस्वती, भगवती, सरोज, अलका, इंदु राज, आनंदी, नीमा, भगवती मौजूद रहे।

आतिशबाजी की दुकानें लगाए जाने को एसडीएम ने ली बैठक

काशीपुर। दीपावली त्यौहार पर आतिशबाजी की दुकानें लगाए जाने के लिए एसडीएम अभय प्रताप सिंह ने फायर सर्विस, नगर निगम व व्यापार मंडल की बैठक ली। बैठक में व्यापार मंडल ने चैती मेला मैदान में आतिशबाजी की दुकानें लगाने का सुझाव दिया। एसडीएम ने कहा कि सभी दुकानदार शासन व डीएम द्वारा निर्धारित सुरक्षा मानकों का पालन करेंगे। उन्होंने अग्निशमन विभाग को निर्देशित करते हुए कहा कि आतिशबाजी की दुकानों के क्षेत्र में अग्निशमन वाहनों की तैनाती व मॉकड्रिल के माध्यम से वाहनों का आवागमन सुनिश्चित कर लिया जाए। दुकानें लगाने के लिए संबंधित विभागों की अनुमति प्राप्त करना अनिवार्य होगा। बिना अनुमति के किसी भी स्थान पर पटाखे नहीं बेचे जाएंगे। उल्लेखनीय है कि 80 के दशक तक आतिशबाजी की दुकानें मुख्य बाजार में बूरा बताशा गली के मोड़ पर लगती थीं। 90 के दशक में ये दुकानें नगरपालिका व एनडीटी मार्केट में लगीं।

'लोकल फॉर वोकल' व 'मेक इन इंडिया' आत्मनिर्भर भारत की मजबूत नींव: धामी

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन द्वारा आयोजित दीपावली मेले में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी रविवार को सम्मिलित हुए द्य इस अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने महाराजा अग्रसेन जी को नमन करते हुए उपस्थित जनो को दीपावली की अग्रिम बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि दीपावली का पर्व हम सभी के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करने का एक विशिष्ट माध्यम है, जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर और बुराई से अच्छाई की ओर जाने की प्रेरणा देता है। कार्यक्रम कार्यक्रम में विना.

■ मुख्यमंत्री पुष्कर धामी अंतर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन के दीपावली मेले में हुए शामिल

द चमोली, खजान दास, प्रेमचंद अग्रवाल, मेयर देहरादून सौरभ थपलियाल सहित विभिन्न जनप्रति. निधि, व्यापारी, स्थानीय लोग उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वैश्य समाज सदियों से सनातन संस्कृति का ध्वजवाहक बनकर संपूर्ण समाज में सहयोग, सौहार्द और विकास का प्रकाश फैला रहा है। वैश्य समाज हमारे राष्ट्र की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक शक्ति का प्रतीक है। वैश्य समाज ने हमेशा सनातन धर्म की रक्षा और सामाजिक कार्यों के विस्तार के लिए दिल खोलकर सहयोग किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन इस मेले के माध्यम से न केवल व्यापार को प्रोत्साहित कर रहा है, बल्कि सामाजिक एकता, स्वदेशी उत्पादों के प्रोत्साहन और लोक संस्कृति के संरक्षण का भी कार्य कर रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में एक ओर जहां हमारी सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में कार्य किया जा रहा है।

उत्तरांचल प्रेस क्लब के दीपावली उत्सव में मुख्यमंत्री हुए शामिल

पत्रकार पेंशन योजना के तहत कोष बढ़ाकर किया 10 करोड़: धामी

शाह टाइम्स ब्यूरो

देहरादून। उत्तरांचल प्रेस क्लब द्वारा आयोजित दीपावली महोत्सव-2025 कार्यक्रम में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को देहरादून में प्रतिभाग किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने लक्की ड्रॉ विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तरांचल प्रेस क्लब की भूमि के आवंटन की कार्यवाही गतिमान है। इस कार्यवाही के पूरे होने के बाद, उत्तरांचल प्रेस क्लब के लिए भव्य भवन का भी निर्माण कार्य किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने पत्रकारों के योगदान की सराहना करते हुए उत्तराखंड राज्य आंदोलन से लेकर

आज तक, उत्तराखंड के अनेकों पत्रकारों ने प्रदेश के सर्वांगीण विकास में लेखनी के जरिए अपनी अहम भूमिका निभाई है।

मुख्यमंत्री ने कहा राज्य सरकार, पत्रकारों की समस्याओं के प्रति संवे. दनशील है। पत्रकारों की सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा, आकस्मिक सहायता और आवासीय योजनाओं को लेकर सरकार ने कई कदम उठाए हैं। वरिष्ठ पत्रकार सम्मान योजना के अंतर्गत अनेक वरिष्ठ पत्रकारों को सम्मानित किया जा रहा है। पत्रकारों की पेंशन में वृद्धि, विभिन्न जिलों से देहरादून आने वाले पत्रकारों को पूर्व की भांति सूचना विभाग के जरिये देहरादून में रहने की उचित व्यवस्था करने का भी प्रयास किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा मुख्यमंत्री पत्रकार पेंशन योजना के तहत पत्रकार कल्याण कोष का बजट 5 करोड़ रूपए से बढ़ाकर 10 करोड़ रुपए किया गया है। पत्रकारों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य शिविरों का भी आयोजन किया जा रहा है। राज्यभर में मीडिया सेन्टरों के आधुनिकीकरण और प्रेस क्लबों के सशक्तिकरण का कार्य शुरू किया गया है। इस अवसर पर विधायक खजान दास, आपदा प्रबंधन सलाहकार समिति के उपाध्यक्ष विनय रुहेला, दायित्वधारी हेमराज बिष्ट, महानिदेशक सूचना बंशीधर तिवारी, उत्तरांचल प्रेस क्लब के अध्यक्ष भूपेंद्र कंडारी, महामंत्री सुरेंद्र डसीला एवं अन्य पत्रकार मौजूद थे।

महाभारत कालीन युद्ध का सजीव वर्णन हुआ जीवंत

शाह टाइम्स संवाददाता

उत्तरकाशी: जिला मुख्यालय के रामलीला मैदान में आयोजित सात दिवसीय दिपावली मेला में भारी जनसमूह उमड़ रहा है। विश्वनाथ पूर्व सैनिक कल्याण की और से आयोजित सैनिक दीपावली मेले में पुजार गांव धनारी के कलाकारों ने वीर अभिमन्यु नाटक एवं चक्रव्यूह मंजन, पांडव गाथा का दिव्या एवं भव्य प्रदर्शन कर महाभारत काल का युद्ध का संजीव वर्णन को जीवंत कर दिया।

विश्वनाथ पूर्व सैनिक समिति ने सभी कलाकारों को सम्मानित किया है । इससे पूर्व मेले की

संस्कृति सन्ध्या में विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने प्रतिभाग जिसमें विवे. कानंद फाउंडेशन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया , दूसरा स्थान अल्पाइन पब्लिक स्कूल तिलोथ, तीसरा स्थान सहारा क्रिश्चियन एकेडमी ने प्राप्त किया ।

वहीं भटवाड़ी ब्लॉक की 18 वीर विरांगनाओं को सम्मानित किया समिति की ओर से 1100रूपये की धनराशि और एक साड़ी समेत एक केरी बैंग सभी बीर विरांगनाओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर संरक्षक मेजर आर.एस जमनाल,अध्यक्ष सूबेदार मेजर वीरेंद्र सिंह नेगी, अध्यक्ष धनारी मंडल - पी . डी . भट्ट ,आई टी .संयोजक धनारी मंडल , नाइव सूबेदार -अनंत राम भट्ट, अध्यक्ष - डा ० के . डी उनियाल . सिद्धेश्वर पुजार गांव धनारी, अध्यक्ष -नवीन प्रकाश उनियाल सिद्धेश्वर कला मंच पुजार गांव धनारी , सचिव -जय प्रकाश भट्ट ग्राम प्रधान पुजार गांव धनारी,-मंच संचारक -विक्रम सिंह पंवार अर्जुन -कृष्ण चंद्र सेमवाल, युधिष्ठिर -शंभू प्रसाद उनियाल ,भीम - कन्हैया भट्ट आदि ने अभिनय किया।

कृषि मंत्री जोशी ने किया रामलीला का शुभारंभ

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने रामलीला समिति विलासपुर कांडली द्वारा आयोजित तृतीय भव्य रामलीला मंचन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग किया। मंत्री जोशी ने रामलीला का रिबन काटकर विधिवत शुभारंभ किया और समिति को इस भव्य आयोजन के लिए शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने 11 जी.आर.आर.सी.जूनियर हाई स्कूल घघोड़ा विलासपुर कांडली में अपने स्वर्गीय पिता श्याम दत्त जोशी की पुण्य स्मृति में निर्मित शैक्षिक एवं 'सांस्कृतिक मंच' का लोकार्पण भी किया। गौरतलब है कि अप्रैल माह में एक कार्यक्रम के दौरान स्थानीय जनता द्वारा सांस्कृतिक मंच की मांग की गई थी, जिस पर मंत्री जोशी ने घोषणा करते हुए अपने निजी मद से इस मंच का निर्माण कराया। उन्होंने कहा कि यह मंच विद्यालय में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ-साथ आसपास के क्षेत्रवासियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। रामलीला के शुभारंभ अवसर पर जोशी ने कहा कि रामलीला केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि यह मर्यादा, धर्म और आदर्शों का सजीव पाठ है। इस अवसर पर अध्यक्ष कुलद. ीप सिंह नेगी, प्रबंधक विक्रम सिंह, वंदना ठाकुर सहित कई लोग उपस्थित थे।

विरासत महोत्सव में सुपर बाइक रैली का रोमांच

■ 26 बाइकर्स ने जोशीली राइड में लिया हिस्सा

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। विरासत महोत्सव रविवार को सुपर बाइक रैली का आयोजन किया गया। रैली में इंजनों की गर्जना रोमांच के साथ जीवंत हो उठी, जब 26 बाइकर्स ने एक जोशीली राइड में हिस्सा लिया। यह आयोजन सुबह विरासत स्थल से शुरू हुआ और देहरादून कैंट, दिलाराम चौक, राजपुर रोड से होते हुए जाखन, मसूरी डायवर्जन से वापस बीआर अंबेडकर स्टेडियम, कॉलागढ़ रोड देहरादून विरासत के प्रांगण में समाप्त हुआ।

इस राइड में देहरादून के उत्साही मोटरसाइकिल सवार एक साथ आए और अपनी शक्ति और भाईचारे का प्रदर्शन किया। इन प्रतिभागियों में सबसे प्रमुख थे शशांक ढोबल, जो समूह की सबसे उच्च-प्रदर्शन वाली बाइकों में से एक, कावासाकी निंजा 1400 आरआर चला रहे थे। उनके साथ कॉन्टिनेंटल जीटी 650 सीसी बाइक्स के साथ कई राइडर्स भी थे, जिनके बेड़े में क्लासिक एवं आकर्षण विविधता से भरे सुपर बाइक्स शामिल रहे।

बाइक रैली न केवल बाइकिंग के शौकीनों की एकता का प्रतीक रही, बल्कि स्वतंत्रता, संस्कृति और एकजुटता का जश्न मनाने वाली विरासत की भावना को भी दर्शाया।

अनिल वर्मा ने पूर्व डीएवी छात्र संघ अध्यक्ष जितेंद्र बिष्ट के निधन पर जताया शोक

देहरादून। डीएवी (पी जी) कालेज छात्रसंघ के पूर्व उपाध्यक्ष 4 बार व 10 वर्षों तक मुख्य सलाहकार रहे डॉ अनिल वर्मा ने सत्र 2018-19 में छात्रसंघ अध्यक्ष रहे जितेंद्र सिंह बिष्ट के आकस्मिक निधन पर गहरी संवे. दना व्यक्त करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित कीं। उन्होंने इस घटना पर हार्दिक दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि वर्ष 2018 में 25 अक्टूबर को महाविद्यालय में छात्रसंघ उद्घाटन समारोह में उन्हें 134 बार रक्तदान करने के लिए "उत्तराखंड प्रतिभा सम्मान " से सम्मानित करने के पलों की याद करके उनकी ऑखें भर आई। जितेन्द्र सिंह बिष्ट मृदुभाषी, दूसरों के दुखदर्द में सहभागी तथा मददगार नेता थे। उनकी कमी सदैव खलती रहेगी ।

गाड़ी बैक करते समय खाई में गिरा चालक, मौत

बागेश्वर। तहसील कपकोट के ग्राम लीती में अपनी मैक्स वाहन को बैग करते समय चालक वाहन से संतुलन खो बैठे। वे अचानक गहरी में जा गिरे। आस पास मौजूद लोगों ने तत्काल युवक को खाई से बाहर निकाला, जिसके बाद 108 की मदद से उन्हें जिला अस्पताल भेजा गया। यहां डाक्टरों ने घायल का प्राथमिक उपचार कर हालत नाजुक बताते हुए हायर सेंटर रेफर किया। प्राप्त जानक. ारी के अनुसार लीती निवासी 27 वर्षीय डिगर सिंह कोरंगा पुत्र लाल सिंह अपनी मैक्स गाड़ी को बैग कर रहे थे। तभी उनकी गाड़ी असंतुलित होकर गहरी खाई में जा गिरी।

एआई-वीआर आधारित मेडिकल सिमुलेशन उत्कृष्टता केंद्र का शुभारंभ

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। मेडिसिम वीआर ने हिमालयन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (एचआईएमएस) में उत्तराखंड का पहला एआई और वीआर-आधारित मेडिकल सिम. ुलेशन उत्कृष्टता केंद्र शुरू किया है। यह पहल स्वास्थ्य सेवा शिक्षा में इमर्सिव तकनीकों के एकीकरण और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना को आगे बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस केंद्र का उद्घाटन नीति आयोग के सदस्य डॉ. विनोद के. पॉल ने किया, जिन्होंने एआई और वीआर तकनीकों के माध्यम से चिकित्सा प्रशिक्षण को व्यापक रूप से अपनाने का आह्वान किया।

स्वामी राम हिमालयन विश्व. विद्यालय के प्रो-वाइस चांसलर डॉ. अशोक कुमार देवरारी ने कहा, "यह केंद्र चिकित्सा शिक्षा में यथार्थवादी, सुरक्षित और इंटरैक्टिव शिक्षण का नया अध्याय खोलेगा, जो छात्रों की क्षमता, आलोचनात्मक सोच और नवाचार को बढ़ाएगा।" मेडिसिम वीआर के सीईओ सबरीश चंद्रशेखरन ने बताया कि यह पहल पारंपरिक प्रशिक्षण और भविष्य की अनुभवात्मक शिक्षा के बीच सेतु का कार्य करेगी, जिससे भावी स्वास्थ्य सेवा पेशेवर सशक्त बनेंगे।

वाल्मीकि समाज हिंदुत्व का अभिन्न अंग: गणेश जोशी

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने आज सर्वे चौक स्थित आई.आर.डी.टी. सभागार में राष्ट्रीय वाल्मीकि क्रांतिकारी मोर्चा द्वारा आयोजित भगवान वाल्मीकि प्रकटोत्सव समापन समारोह, सामाजिक समरसता दिवस एवं प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री सुबोध उनियाल भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले लोगों को सम्मानित किया और उन्हें भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

■ वाल्मीकि प्रकटोत्सव समापन समारोह व सामा. जिक समरसता दिवस एवं प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम में शामिल हुए कैबिनेट मंत्री, वन मंत्री सुबोध उनियाल और विधायक खजान दास रहे मौजूद

अपने संबोधन में मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि ने रामायण जैसी अमर कृति की रचना कर समाज को आदर्श जीवन का मार्ग दिखाया। उन्होंने कहा कि महर्षि वाल्मीकि के विचार आज भी समाज को समानता, सद्भाव और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। जोशी ने कहा कि वाल्मीकि समाज हिंदुत्व का अभिन्न अंग है, जिसने सदैव समाज और राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज समाज के सभी वर्गों को समान अवसर और सम्मान मिल रहा है। इस अवसर पर विधायक राजपुर खजानदास, राज्यमंत्री भगवत प्रसाद मकवाना, दायित्वधारी पुनीत मित्तल, पूर्व मेयर सुनील उनियाल गामा, अशोक वर्मा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष राजेंद्र, विनोद घाघट सहित कई लोग उपस्थित रहे।

स्वदेशी उत्पादों को अपनाकर भारत की अर्थव्यवस्था को दें मजबूती

मुख्य संवाददाता शाह टाइम्स

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने रविवार को अपने कैंप कार्यालय में मसूरी विधानसभा क्षेत्र के श्रीदेव सुमन नगर मंडल के पार्टी पदाधिकारियों के साथ बैठक कर आगामी आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत आयोजित होने वाले कार्यक्रम की तैयारियों की बैठक की।

बैठक के दौरान डीएवी विश्व. विद्यालय के पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष एवं भारतीय जनता युवा मोर्चा के महानगर मंत्री जितेन्द्र बिष्ट के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। उपस्थितजनों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की। बैठक में मंडल

■ श्रीदेव सुमन नगर मंडल के पार्टी पदाधिकारियों के साथ आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत आयोजित होने वाले कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर बैठक

अध्यक्षों, मोर्चों के पदाधिकारियों, पार्षदों, बूथ अध्यक्षों, पन्ना प्रमुखों और पार्टी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। मंत्री जोशी ने सभी कार्यकर्ताओं से कहा कि 17 अक्टूबर को आयोजित होने वाले मसूरी विधानसभा के आत्मनिर्भर भारत अभियान की कार्यशाला को सफल बनाने के लिए पूरे मनोयोग से कार्य करें। उन्होंने कहा कि यह कार्यशाला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को धरातल पर उतारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल होगी।

जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में आज देश ने आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी रूप से नई ऊँचाइयों को छुआ है। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत अभियान ने न केवल देश में स्थानीय उद्योगों को बल दिया है, बल्कि युवाओं को रोजगार, नवाचार और स्वावलंबन की दिशा में प्रेरित किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का "लोकल के लिए वोकल बनो" का संदेश आज जन-जन की भावना बन चुका है। हर नागरिक को चाहिए कि वह स्वदेशी उत्पादों को अपनाकर भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करे। मंत्री जोशी ने कहा कि उत्तराखण्ड इस दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है, जहाँ कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प, जैविक खेती और पर्वतीय उत्पाद राज्य की आत्मनिर्भरता का प्रतीक बन चुके हैं।उन्होंने कहा कि महिला स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण उद्यमी और युवा स्टार्टअप आत्मनिर्भर भारत की नई पहचान बन रहे हैं। इस अवसर पर नेहा जोशी, प्रदीप रावत, आर.एस. परिहार, निरंजन डोभाल, आशीष थापा, अरविंद डोभाल, पूनम नौटियाल सहित कई लोग उपस्थित रहे।

विवाहिता को जिंदा जलाने की शिकायत पर महिला आयोग ने लिया संज्ञान

दोषियों पर कड़ी कार्रवाई के सख्त निर्देश

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। हरिद्वार जनपद के रोशनाबाद के गाँव मे ससुराल पक्ष द्वारा विवाहिता को जिंदा जलाने के मामले राज्य महिला आयोग ने संज्ञान लिया है। विवाहिता भारती, जिसकी शादी एक साल पहले अक्टूबर 2024 को आशीष कुमार पुत्र विजय पाल से रोशनाबाद के एक गाँव हुई थी, को ससुराल पक्ष ने दहेज की मांग पूरी न होने पर पेट्रोल डालकर जिंदा जला दिया है। प्राप्त शिकायत के अनुसार पीड़िता की बहन द्वारा जानकारी दी गयी की शादी के शुरुआती महीने सामान्य रहे, परंतु इसके बाद भारती को दहेज के लिए प्रताड़ित किया जाने लगा। पीड़िता की बहन ने बताया की परिवार की ओर से कई बार समझौते के प्रयास किए गए, लेकिन अत्याचार रुकने का नाम नहीं लिया।

पिता ने शिकायती पत्र में बताया की 24 सितम्बर 2025 को भारती की बेटी के जन्म के बाद भारती पर अत्याचार और बढ़ गए। उसे गाली-गलौज, मारपीट और मारने तक कि धमकी दी गयी, और 11 अक्टूबर 2025 को पति आशीष कुमार उसके पिता विजय पाल व सास, नन्द और जेठ ने कथित रूप से पेट्रोल डालकर भारती को जिंदा जला दिया, जिससे वह 80% तक झुलस गई और गंभीर अवस्था में अस्पताल में भर्ती है। इस निंदापूर्ण प्रकरण की शिकायत मिलते ही उत्तराखण्ड राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष कुसुम कण्डवाल ने जानकारी के आधार पर कड़ा संज्ञान लेते हुए हरिद्वार के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रमेन्द्र डोभाल को तुरंत और सख्त कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। कुसुम कण्डवाल ने कहा यह अत्यंत निंदनीय और मानवता को झकझोर देने वाली घटना है। किसी भी कीमत पर आरोपी बख्शे नहीं जाएंगे। हर दोषी को कानून के तहत कठोरतम सजा दिलाई जाएगी।"

उन्होंने पीड़ित परिवार के प्रति गहरा दुख और संवेदना व्यक्त की है, साथ ही हरिद्वार पुलिस को निर्देशित किया है कि "किसी भी स्तर पर ढिलाई नहीं बरती जाए, यह मामला महिला सुरक्षा और न्याय की कसौटी बने। एसओ सिडकुल ने जानकारी में बताया की मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। फिलहाल पीड़िता का उपचार एम्स ऋषिकेश में चल रहा है। मामले की उच्चस्तरीय जांच की जा रही है।

गायत्री विद्यापीठ में राज्य स्तरीय दो दिवसीय कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन

विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल प्रमुख शैफाली पण्ड्या व मुख्य शिक्षा अधिकारी ने किया शुभारंभ

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। गायत्री विद्यापीठ शांतिकुंज में राज्य स्तरीय दो दिवसीय कुश्ती प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। उद्घाटन समारोह में वैदिक परंपरा के अनुसार दीप प्रज्वलन किया गया, जिसे विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल की प्रमुख श्रीमती शैफाली पण्ड्या एवं अतिथियों ने संपन्न किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमती शैफाली पण्ड्या ने खिलाडियों को संबोधित करते हुए खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला और युवाओं को खेल भावना से ओतप्रोत होकर अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। प्रतियोगिता में हरिद्वार, देहरादून, ऊध मसिंहनगर और नैनीताल जनपदों से आए 250 पहलवानों ने भाग लिया। मुकाबलों में जहां एक ओर खिलाडियों ने कुश्ती के रोमांचक दांव-पेच दिखाए, वहीं कई बाउट्स में रेफरी को निर्णय लेने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। कुछ प्रतिभाशाली खिलाडियों ने अपने अनुभव और तकनीक से अत्यंत कम समय में मुकाबला जीतकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। खिलाडियों के उत्साहवर्धन हेतु सांसद डॉ कल्पना सैनी, गायत्री विद्यापीठ के प्रधानाचार्य सीताराम सिन्हा सहित कई गणमान्यजन उपस्थित रहे। इस प्रतियोगिता के संयोजक मुख्य शिक्षा अधिकारी आशुतोष भण्डारी, खण्ड शिक्षा अधिकारी बृजपाल सिंह राठौर रहे। प्रतियोगिता के अंत में विजयी खिलाडियों को श्रीमती शैफाली पण्ड्या एवं अन्य अतिथियों द्वारा पुरस्कार भेंट कर सम्मानित किया गया।

धर्म परिवर्तन व गैंगरेप का आरोप, महिला ने न्याय की गुहार लगाई

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। कर्नाटक निवासी सोनू रानी शर्मा ने प्रेस वार्ता कर बताया कि उसे धर्म परिवर्तन कराने और गैंगरेप का शिकार बनाया गया है। उन्होंने बताया कि सहारनपुर निवासी साजमा उर्फ सोनिया राठौर ने उसकी शादी दुबई में करवाई और उसके परिवार की संपत्ति पर बेचने का दबाव बनाया। सोनू ने कहा कि ध र्म परिवर्तन का दबाव डालने वाले छांगुर उर्फ जलालुद्दीन को सीएम योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर गिरफ्तार कराया गया। बावजूद इसके, उत्पीड़न करने वाले परिवार के खिलाफ अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। सीएम योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर पुलिस ने छांगुर को गिरफ्तार कर लिया। लेकिन उसका उत्पीड़न करने वाले परिवार के खिलाफ आज तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। सोनू रानी शर्मा ने सहारनपुर पुलिस पर भी गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि वह न्याय के लिए हरिद्वार आयी है।

विश्व में सबसे बड़ा अखाड़ा होगा रविदास अखाड़ा : रविंद्र पुरी

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद एवं मनसा देवी ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रीमहंत रविंद्रपुरी ने कहा कि संत रविदास की शिक्षाओं का पालन कर जातिवाद खत्म करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि महामंडलेश्वर बनने के लिए किसी प्रभावशाली समाज का होना जरूरी नहीं, जिस समाज में संत रविदास जन्मे, उसका व्यक्ति ही महामंडलेश्वर बने। श्रीमंहत रविंद्रपुरी ने बताया कि आगामी कुंभ में पेशवाई, शाही स्नान और विश्व स्तर का रविदास अखाड़ा होगा। उन्होंने कहा, साधू बनना आसान है, संत बनना कठिन। संत बनने के लिए ज्ञान, तपस्या और घर का त्याग जरूरी है। शिरोमणि गुरु रविदास विश्व महापीठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरजीत कुमार ने कहा कि हमारा समाज सबसे बड़ा है। उन्होंने बताया कि राम मंदिर की लड़ाई 500 साल चली, जबकि तुगलकाबाद में रविदास मंदिर की लड़ाई मात्र छह वर्षों में पूरी हुई। प्रदेश अध्यक्ष प्रो. धर्मेंद्र कुमार ने कहा कि अखाड़े के शाही स्नान के लिए जूना या निरंजनी अखाड़े से तालमेल किया जाएगा। अधिवेशन का संचालन प्रदेश महामंत्री सतीश कुमार ने किया।

इस मौके पर पूर्व डिप्टी स्पीकर आत्माराम परमार, अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष मुकेश कुमार, समाज कल्याण परिषद उपाध्यक्ष देशराज कर्णवाल, डा. जयपाल सिंह चौहान, शोभराज प्रजापति, विशाल मुखिया, सुशील चौहान, सुबोध राकेश, राजेश गौतम, मोदीमल तेगवाल, किशोर पाल, अशोक भारती, बरखा रानी, मनोज कुमार, देशराज कपिल, विजयपाल सिंह, महंत मेहर दास, भूपसिंह, स्वराज सिंह, मनीराम, यशवीर सैनी, संदीप कुमार, संजय कुमार सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीने वाले 35 गिरफ्तार, 5 वाहन सीज

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। सिडकुल पुलिस ने सार्वजनिक स्थानों और ढाबों पर शराब पीकर हंगामा करने वाले 35 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इन पर 81 पुलिस एक्ट के तहत चालान कर 8,750 रुपये का जुर्माना वसूला। सभी को भविष्य में सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीने से बचने की चेतावनी दी गई।

पुलिस ने असामाजिक तत्वों और शराब परोसने वाले ढाबों के खिलाफ भी कार्रवाई करते हुए 5 वाहनों को सीज किया। यह कार्रवाई एसएसपी हरिद्वार के निर्देश पर की गई, ताकि सार्वजनिक शांति बनाये रखी जा सके। इस कार्रवाई में वरिष्ठ उप निरीक्षक देवेंद्र तोमर, एसआई शैलेन्द्र ममगई और उप निरीक्षक मनीषानगी की टीमें लगी हुई थीं।

भाजपाइयों ने आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान पर की चर्चा

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। भाजपा पदाधिकारियों ने हरिद्वार में आत्मनिर्भर भारत संकल्प अभियान को लेकर श्री पंचायती अखाड़ा बड़ा उदासीन के महामंडलेश्वर स्वामी रूपेंद्र प्रकाश से भेंट की। इस अवसर पर प्रेस क्लब अध्यक्ष धर्मेंद्र चौधरी भी मौजूद रहे। महामंडलेश्वर स्वामी रूपेंद्र प्रकाश ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत का अर्थ है देश अपनी आवश्यकताओं को स्वयं पूरा करे, स्थानीय संसाधनों, प्रतिभाओं और उद्योगों का उपयोग बढ़े और भारत आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी रूप से सशक्त बने। प्रेस क्लब अध्यक्ष धर्मेंद्र चौधरी ने कहा कि यह अभियान केवल नारा नहीं बल्कि जनभागीदारी से निर्मित राष्ट्र शक्ति है। प्रेस क्लब महामंत्री दीपक मिश्रा ने कहा कि अभियान देश की संस्कृति और अर्थव्यवस्था दोनों को मजबूत करेगा। भाजपा प्रदेश सह मीडिया संयोजक विकास तिवारी ने कहा कि देशवासियों में स्वभाषा और स्वभूषा का भाव होना चाहिए और छोटे उद्यमियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। भाजपा जिला महामंत्री हीरा सिंह बिष्ट ने बताया कि कार्यशालाओं में दीपावली पर स्वदेशी वस्तुएं खरीदने का आह्वान किया जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी, मुख्यमंत्री पुष्कर धामी और सांसद त्रिवेंद्र सिंह रावत के आह्वान पर हर घर स्वदेशी अभियान चलाया जा रहा है। अभियान 25 सितम्बर से 25 दिसम्बर तक चलेगा। अवसर पर भाजपा प्रदेश मीडिया सह संयोजक विकास तिवारी, जिला महामंत्री व अभियान संयोजक हीरा सिंह बिष्ट, जिला उपाध्यक्ष तरुण नैयर, जिला मंत्री पारुल चौहान, डा. विशाल गर्ग, शिवेंद्र कुमार गहलोत आदि मौजूद रहे।

लाखों की चोरी कर आश्रम का कोठारी हुआ फरार

28 लाख नकद, रूद्राक्ष जड़ित सोने की चेन, चांदी की कटोरियां ले जाने का आरोप

आश्रम के परमाध्यक्ष स्वामी यमुना पुरी ने कराया मुकदमा दर्ज

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। कनखल थाना क्षेत्र के जगजीतपुर स्थित महामृत्युंजय मठ में चोरी का मामला सामने आया है। आश्रम के परमाध्यक्ष जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर स्वामी यमुना पुरी ने आश्रम के कोठारी पर 28 लाख नकद, रूद्राक्ष जड़ित सोने की चेन व चांदी की कटोरियां आदि चोरी कर फरार होने का आरोप लगाते हुए पुलिस को तहरीर दी है। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच कर दी है। पुलिस की शुरूआती जांच पड़ताल में मिले एक सीसीटीवी फुटेज में आरोपी बैरागी कैंप की और जाता दिखाई दे रहा है। स्वामी यमुना पुरी ने बताया कि उन्होंने मूलरूप से कस्बा बैसूम हस्तिनापुर यूपी के मूल निवासी विकास सिंघल को 2009 में सन्यास दीक्षा प्रदान की थी। सन्यास के बाद उसे वैराग्य पुरी नाम दिया गया।

उन्होंने उसे अपना उत्तराधिकारी भी घोषित कर दिया था। आश्रम के लेन देन समेत सारी जिम्मेदारी वैराग्य पुरी ही संभालता था। उसके नाम से उन्होंने अपने आश्रम महामृत्युंजय मठ के बगल में ही एक आश्रम का निर्माण भी कराया है। स्वामी यमुना पुरी ने बताया कि वे 10 अक्तूबर की रात पंजाब से आश्रम लौटे थे। सवेरे सात बजे उनके फोन पर वैराग्य पुरी का मैसेज आया कि वह जा रहा है। पहले तो उन्हें कुछ समझ नहीं आया। जब उन्होंनें उसके कमरे में जाकर देखा तो आश्रम में चल रहे निर्माण कार्य के खर्च के लिए अलमारी में रखे रूपए, चेन व चांदी की कटोरियां गायब मिली। इसके बाद उन्होंने पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलने पर पुलिस आश्रम पहुंची और जांच पड़ताल की। स्वामी यमुना पुरी ने बताया कि वैराग्य पुरी आश्रम के नाम पर कई दुकानदारों और लोगों से भी लाखों रूपए ले गया है। पुलिस उसे जल्द से जल्द गिरफतार कर चोरी किया गया धन और अन्य सामान बरामद करे। महामंडलेश्वर स्वामी प्रबोधानंद गिरी एवं महामंडलेश्वर स्वामी रामेश्वरानंद सरस्वती ने कहा कि पुलिस प्रशासन को आरोपी को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर कड़ा दंड दिलाना चाहिए। जिससे अन्य कोई व्यक्ति इस प्रकार से विश्वासघात करने की कोशिश ना कर सके। इस दौरान स्वामी अनंतानंद, स्वामी ऋषिराज, स्वामी विवेकानंद गिरी, स्वामी नरेशानंद सहित कई संत मौजूद रहे।

दहेज के लिए विवाहिता को पेट्रोल डालकर जलाया, ससुराल पक्ष के खिलाफ मुकदमा दर्ज

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। सिडकुल थाना क्षेत्र में दहेजलोभियों की हैवानियत का सनसनीखेज मामला सामने आया है। विवाहिता को उसके ससुराल पक्ष ने कथित रूप से पेट्रोल डालकर आग के हवाले कर दिया। विवाहिता गंभीर रूप से झुलसी तो उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उसकी हालत नाजुक बनी हुई है। प्राप्त जानकारी के अनुसार, डोईवाला निवासी जयप्रकाश पुत्र स्व. गुरूदयाल ने थाना सिडकुल में तहरीर देकर बताया कि उसकी बहन भरती की शादी दिनांक 27 अक्टूबर 2024 को आशीष पुत्र विजय सिंह, निवासी ग्राम हेत्तमपुर, पोस्ट रोशनाबाद, हरिद्वार से हुई थी। विवाह के बाद से ही ससुराल पक्ष द्वारा दहेज की मांग को लेकर विवाहिता को प्रताड़ित किया जा रहा था।

भाई का आरोप है 24 सितंबर 2025 को जब उसकी बहन ने एक पुत्री को जन्म दिया, तो उसके बाद से ससुराल पक्ष की प्रताड़ना और बढ़ गई। आरोप है कि शनिवार को पति, ससुर, सास और अन्य परिजनों ने मिलकर भरती पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी। जिससे वह करीब 80 प्रतिशत जल गई।

सिडकुल थानअध्यक्ष नितेश शर्मा ने बताया कि तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।मामले की गंभीरता को देखते हुए दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी।

28 शराबियों को सरेराह शराब पीते पकड़ा, 7000 वसूला जुर्माना

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। एसएसपी के निर्देश पर सार्वजनिक स्थानों, ढाबों व सड़कों पर शराब पीने और हुड़दंग मचाने वालों के विरुद्ध कोतवाली ज्वालापुर पुलिस ने शनिवार को सख्त कार्रवाई की। वरिष्ठ उप निरीक्षक खेमेंद्र गंगवार ने बताया कि पुलिस की अलग-अलग टीमों ने शहर के विभिन्न हिस्सों में अभियान चलाकर 28 व्यक्तियों को मौके पर ही पकड़ लिया। सभी के विरुद्ध धारा 81 पुलिस एक्ट के तहत चालानी कार्रवाई करते हुए 7000 का संयोजन शुल्क वसूला गया।पुलिस ने चेतावनी दी है कि भविष्य में कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीते या पिलाते पाया गया तो उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस का यह अभियान आगे भी निरंतर जारी रहेगा। कार्रवाई करने वाली टीम में वरिष्ठ उप निरीक्षक खेमेंद्र गंगवार, एसआई समीप पाण्डेय (प्रभारी चौकी रेल), एसआई रविन्द्र जोशी, अपर उप निरीक्षक गंभीर तोमर, तथा सिपाही अमित गौड़, राजेश बिष्ट, रवि, अंकुर चौधरी, दिनेश, सतवीर सिंह, रोहित, मनोज डोभाल, प्रमोद पुरोहित और चेतक कर्मी शामिल रहे।

धान की फसल काट रहे मजदूरों के सामने आया अजगर

युवाओं ने रेस्क्यू कर वन विभाग को सौंपा

शाह टाइम्स संवाददाता

बहादराबाद। टोल प्लाजा के नजदीक एक खेत में धान की फसल काटने गए मजदूरों को अजगर दिखाई दे गया। जिससे किसानों और मजदूरों में हड़कंप मच गया। किसानों ने वन अधिकारियों को अजगर की मौजदूगी की सूचना दी। काफी देर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। जब सुबह किसान अरविंद चौहान के खेत में मजदूर धान की फसल को काटने गए थे। जब मजदूरों को धान की खड़ी फसल से आहट सुनाई दी। मजदूरों ने खेत में अंदर जाकर देखा तो खेत के बीच भी बड़ा अजगर पड़ा है। जिससे मजदूरों में हड़कंप मच गया। उन्होंने उसे भगाने की कोशिश की। घटना की जानकारी किसान अरविंद चौहान ने वन विभाग की अधिकारियों को दी। लेकिन सूचना के कई घंटे बाद वन विभाग टीम मौके पर पहुंची। लेकिन खेत में दलदल होने की वजह

से अजगर को नहीं पकड़ सकी। जिस कारण आसपास खेतों में काम कर रहे किसान भी मौके पर एकत्र हो गए। लेकिन अजगर टस से मस नहीं हुआ। जिस पर गांव के कुछ युवा मौके पर पहुंचे।उन्होंने सरिए को आगे से मोड़कर अजगर को उसने फसाकर खेत से बाहर खींच लिया। जिसके बाद वन विभाग की टीम ने अजगर को रेस्क्यू कर जंगल में छोड़ दिया।

11 अपराधियों पर की गुंडा एक्ट में कार्रवाई

शाह टाइम्स संवाददाता

बहादराबाद। थाना क्षेत्र की पुलिस ने गोकशी, पादक पदार्थों की तस्करी, अवैध शस्त्रों, शराब की तस्करी, लूट, चोरी, लडाई-झगड़ा जैसे अपराधों में लिप्त रहने वाले 11 अपराधियों के खिलाफ गुंडा एक्ट में कार्रवाई की है। थाना अध्यक्ष अंकुर शर्मा ने बताया कि 20 अपराधियों के खिलाफ नई हिस्ट्रीशीट खोलने हेतु कार्रवाई प्रचालित है। बहादराबाद पुलिस ने ने कार्यवाही करते हुए 11 अपराधियों पर गुंडा एक्ट कार्यवाही की है। जिसमें शहजाद अली पुत्र नईम, निवासी बढेडी राजपूतान बहादराबाद, नौशाद पुत्र अली हसन, आजम पुत्र इसरार, युसुफ पुत्र मंजूर, खुर्शीद पुत्र मंजूर, शौहेल उर्फ सेबू उर्फ शौहेब बाबू पुत्र इसरार, सुशील कश्यप पुत्र कालूराम, अकरम पुत्र मौहब्बत, सोनू पुत्र ध्यान सिंह उर्फ धन्नू, सिन्टू पुत्र ऋषिपाल, नीरज पुत्र दयाराम सभी निवासी बहादरपुर, हरिद्वार शामिल हैं।

तृप्ति भट्ट के नेतृत्व में मिली पुलिस को सफलता

जीआरपी हरिद्वार ने दो शातिर चारों किया गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। त्योहारी सीजन में जहां यात्रियों की भीड़ के बीच अपराधी सक्रिय होने की फिराक में रहते हैं, वहीं जीआरपी हरिद्वार की सतर्क टीम ने कप्तान तृप्ति भट्ट के कड़े नेतृत्व में अपराध पर सटीक प्रहार करते हुए दो शातिर अपराधियों को सलाखों के पीछे पहुंचा दिया।

जीआरपी हरिद्वार की इस सफलता ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि कप्तान तृप्ति भट्ट के नेतृत्व में पुलिस न केवल मुस्तैद है बल्कि संवेदनशील और प्रोफेशनल रवैये से यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित कर रही है। उनके निर्देशन में एएसपी अरुणा भारती व सीओ स्वप्निल मुयाल के पर्यवेक्षण में काम कर रही टीमें लगातार रेलवे स्टेशन व ट्रेन यात्राओं की सुरक्षा पर पैनी नजर रखे हुए हैं। त्योहारों के दौरान यात्रियों की बढ़ती आवाजाही के बीच पुलिस की सक्रियता का ही परिणाम है कि दो अलग-अलग वारदातों में जेबकतरा शौकीन अली (देहरादून निवासी) और उठाईगीर जावर अली (कलियर निवासी) को चोरी की संपत्ति सहित गिरफ्तार कर जेल भेजा गया। दोनों आरोपी नशे की जरूरतों को पूरा करने के लिए चोरी की घटनाओं को अंजाम देते थे। हरिद्वार जीआरपी थाना अध्यक्ष विपिन पाठक ने बताया कि आरोपी ने बलिया (उ.प्र.) निवासी सोनू गुप्ता से ट्रेन में चढ़ते समय पर्स चोरी किया। यात्री ने तत्परता दिखाते हुए आरोपी को मौके पर ही पकड़ लिया और जीआरपी को सौंप दिया। पुलिस ने आरोपी शौकीन अली के पास से 300 रुपये नकद व आधार कार्ड बरामद कर मुकदमा दर्ज किया। वहीं, दूसरी और मधेपुरा (बिहार) निवासी करण कश्यप का ट्रॉली बैग

स्टेशन से चोरी हुआ। जीआरपी हरिद्वार की टीम ने तेज कार्रवाई करते हुए मुखबिर की सूचना पर आरोपी जावर अली को सफारी कंपनी के ट्रॉली बैग सहित गिरफ्तार कर जेल भेजा। पुलिस टीम में एसआई सुशील तिवारी, एचसी पृथ्वी नेगी, कांस्टेबल जाहुल मिर्जा शामिल रहे हैं।

किरायेदारों के सत्यापन अभियान में ज्वालापुर पुलिस की सख्ती

चार मकान मालिकों पर 40 हजार का जुर्माना, 65 व्यक्तियों का मौके पर सत्यापन

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक हरिद्वार के निर्देशन में कोतवाली ज्वालापुर पुलिस ने रविवार को सघन सत्यापन अभियान चलाते हुए किरायेदारों, घरेलू नौकरों और बाहरी व्यक्तियों की जांच की। पुलिस ने अभियान के दौरान 65 व्यक्तियों का मौके पर ही सत्यापन किया।

अभियान के दौरान किरायेदारों का सत्यापन न कराने पर चार मकान मालिकों के विरुद्ध धारा 83 पुलिस एक्ट के तहत कार्रवाई की गई। प्रत्येक पर दस-दस हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया। कुल 40 हजार रुपये का चालान तैयार कर चलानी रिपोर्ट न्यायालय को भेजी गई। सत्यापन अभियान के दौरान 10 संदिग्ध व्यक्तियों के विरुद्ध धारा 81 पुलिस एक्ट के अंतर्गत कार्रवाई कर ढाई हजार रुपये का चालान भी किया गया।

ज्वालापुर कोतवाली प्रभारी कुन्दन सिंह राणा के निर्देशन में प्रभारी चौकी रेल उप निरीक्षक समीप पाण्डेय व प्रभारी चौकी बाजार अपर उप निरीक्षक राकेश कुमार के नेतृत्व में की गई। पुलिस टीम ने सुभाष नगर, आर्य नगर व सराय क्षेत्र में घर-घर जाकर किरायेदारों व घरेलू नौकरों का सत्यापन किया।

सत्यापन अभियान में पुलिस टीम में उप निरीक्षक मनीष भण्डारी, अपर उप निरीक्षक प्रताप दत्त शर्मा, अपर उप निरीक्षक गंभीरसिंह तोमर, कांस्टेबल खजान चौहान, प्रमोद पुरोहित, सुरेंद्र तोमर, अरुण कोटनाला और भागचंद राणा शामिल रहे।

मेयर किरण जैसल ने वार्ड 44 में स्वच्छ, स्वस्थ एवं सुंदर वार्ड अभियान का किया शुभारंभ

वार्ड 44 को करेंगे आदर्श वार्ड के रूप में स्थापित : अहसान अंसारी

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। मेयर किरण जैसल ने वार्ड 44 त्रिमूर्ति नगर की आनंद विहार कॉलोनी में रविवार को स्वच्छ वार्ड, स्वस्थ एवं सुंदर वार्ड अभियान का शुभारंभ किया। अभियान का उद्देश्य शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाना है, और इसमें स्थानीय निवासियों और पर्यावरण मित्रों की भागीदारी हो रही है। मेयर किरण जैसल ने कहा कि यह अपने आप में अनूठा अभियान है। जो स्वच्छता के प्रति जागरूकता के साथ-साथ हमारे शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाए रखने में भी मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने कहा कि वार्ड 44 से इस अभियान की शुरुआत हो गई है और हम नगर निगम के 60 वार्डों में इस अभियान को प्रारंभ करेंगे।

पार्षद अहसान अंसारी ने कहा कि वार्ड 44 को आदर्श वार्ड के रूप में स्थापित करना है और वार्ड की सड़कों को गंदगी मुक्त रखना है। उन्होंने वार्ड की जनता से भी अपील की कि स्वच्छ, सुंदर और स्वस्थ वार्ड के इस अभियान में सभी की सहभागिता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बीमारियों से मुक्ति चाहते हैं तो अपने घरों के आसपास गंदगी न होने दें और डेंगू का खतरा भी बना हुआ है, इसलिए सफाई का विशेष ध्यान रखें। इस अवसर पर पर्यावरण पर्यवेक्षक कुसुम पाल, अशोक छाछर, सुनील राजौर, अखिल कुमार, जाफिर अंसारी, रणवीर सैनी, सुरिंदर सिंह, इमरान मंसूरी, अब्दुल अंसारी, गुलफाम, हाजी जमील, रिटायर्ड दरोगा अर्जुन सिंह और समस्त पर्यावरण मित्रों सहित स्थानीय वार्ड वासियों ने बढ़-चढ़कर अभियान में हिस्सेदारी की।

सतों ने गंगा की पवित्रता और सनातन धर्म को आगे बढ़ाने पर किया चिंतन

शाह टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। कनखल स्थित श्री पंचायती अखाड़ा निर्मल में संत समाज की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक मे कई प्रमुख संत शामिल हुए और गंगा की पवित्रता बचाने तथा सनातन धर्म को आगे बढ़ाने पर चिंतन किया।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए अखाड़े के कोठारी महंत जसविन्दर सिंह महाराज ने कहा कि समस्त प्राणी जगत के कल्याण के लिए धरती पर आयी मां गंगा मानवीय गलतियों के चलते लगातार प्रदूषित हो रही है। जीवनदायिनी मां गंगा का प्रदूषित होना चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि गंगा की पवित्रता बनाए रखना सभी देशवासियों का कर्तव्य है। गंगा को प्रदूषण मुक्त करने और सनातन धर्म में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए संत समाज को एकजुट होकर प्रयास करने होंगे। सभी संत अपने भक्तों को गंगा की पवित्रता के प्रति जागरूक करें। सनातन धर्म संस्कृति का अधिक से अधिक प्रचार करें। बाबा हठयोगी कहा कि धर्मनगरी हरिद्वार देवभूमि उत्तराखंड का प्रवेश द्वार है। प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु हरिद्वार में गंगा स्नान कर चारधाम यात्रा का शुभारंभ करते हैं। संतों की प्रमुख संस्था अखाड़ा परिषद के प्रमुख पदाधिकारी भी हरिद्वार में निवास करते हैं। ऐसे में हरिद्वार के संतों को आगे बढ़कर अखाड़ा परिषद के नेतृत्व में गंगा और सनातन धर्म के प्रति अपनी जिम्मेदारी को निभाना चाहिए। बाबा हठयोगी ने कहा कि सनातन धर्म को बचाने के लिए केंद्र सरकार को देश में चल रहे धर्म परिवर्तन पर भी रोक लगानी चाहिए। स्वामी ऋषिश्वरानंद ने कहा कि 2027 में हरिद्वार में होने वाले कुंभ मेले में आने वाले लाखों श्रद्धालुओं को गंगा और सनातन धर्म के प्रति जागरूक करने के लिए अभियान चलाया जाएगा। बैठक में संघ नेता अनिल वर्मा, महंत खेम सिंह, महंत प्यारा सिह, संत बलवीर सिंह सहित कई संत महंत शामिल हुए।

हरिद्वार में समाचार व विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें :
सिटी कार्यालय दैनिक
शाह टाइम्स हरिद्वार
कमरा न. 103, द्वितीय तल, भगवती कॉम्पलेक्स, रानीपुर मोड, हरिद्वार
डी. एस. वर्मा
प्रभारी हरिद्वार/ब्यूरो चीफ
मो.: 9411100741

कैबिनेट मंत्री ने की आत्मनिर्भर भारत कार्यक्रम में शिरकत

शाह टाइम्स संवाददाता

विकासनगर। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने रविवार को विकासनगर स्थित एक निजी वेडिंग प्वाइंट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा जनहित में लागू किए गए नेक्स्ट जेन जीएसटी के लिए व आत्मनिर्भर भारत (हर घर स्वदेशी, घर घर स्वदेशी) अभियान विकासनगर विधानसभा का सम्मेलन कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में प्रतिभाग किया।

कार्यक्रम में स्थानीय विधायक मुन्ना सिंह चौहान एवं जिला अध्यक्ष भाजपा मीता सिंह सहित सभी प्रबुद्धजनगणों, व्यापारी, जिले में निवासरत प्रदेश कार्यसमिति सदस्य, प्रदेश मोर्चा पदाधिकारी, प्रदेश प्रकोष्ठ संयोजक, सह संयोजक, शक्तिकेंद्र संयोजक, बूथ अध्यक्ष, जिला मोर्चा अध्यक्ष आदि उपस्थित रहे। अपने संबोधन में कैबिनेट मंत्री जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 11 वर्षों में देश ने अभूतपूर्व विकास कार्य किए हैं। उन्होंने कहा कि आज भारत आत्मनिर्भर बन चुका है और सैन्य, रक्षा, खाद्य सहित अनेक क्षेत्रों में निरंतर प्रगति कर रहा है। कैबिनेट मंत्री जोशी ने कहा कि उत्तराखण्ड में भी आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को साकार करने के लिए कार्य हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से लोकल उत्पादों को वैश्विक पहचान दिलाने के लिए "हाउस ऑफ हिमालयाज" ब्रांड के तहत राज्य के स्थानीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुँचाया जा रहा है।

कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि आज हम प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में लागू किए गए नेक्स्ट जेन जीएसटी और आत्मनिर्भर भारत अभियान पर गर्व महसूस करते हैं। उन्होंने कहा कि नेक्स्ट जेन जीएसटी ने कर प्रणाली को सरल, पारदर्शी और जनहितकारी बनाया है। अब व्यापारियों को सुविधा मिली है, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा है, और डिजिटल इंडिया की दिशा में एक नया अध्याय जुड़ा है। यह सुधार देश की अर्थव्यवस्था को गति देने और ईमानदार करदाताओं को सम्मान देने का कार्य कर रहा है।

मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि आत्मनिर्भर भारत अभियान प्रधानमंत्री की उस भावना का प्रतीक है, जिसमें उन्होंने कहा 'लोकल के लिए वोकल बनो।' उन्होंने कहा कि आज हर घर स्वदेशी, घर घर स्वदेशी का मंत्र अब देशव्यापी आंदोलन बन गया है।

जोशी ने कहा कि हमारा उत्तराखण्ड राज्य इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। हमारे गांवों में कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प और जैविक खेती आत्मनिर्भरता के प्रतीक बन चुके हैं। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने सभी से आव्हान करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के इस संकल्प को आगे बढ़ाएँ और भारत को विकसित, सशक्त और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में स्थापित करें। इस दौरान स्थानीय विधायक मुन्ना सिंह चौहान ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

इस अवसर पर स्थानीय विधायक मुन्ना सिंह चौहान, जिला अध्यक्ष भाजपा मीता सिंह, जिला प्रभारी सतेंद्र राणा, मंडल अध्यक्ष भाजपा सचिन बंसल, मंडल महामंत्री भाजपा आदित्य वर्मा, ब्लॉक प्रमुख नारायण ठाकुर, नगर पालिका हरबर्टपुर की अध्यक्ष नीरू देवी, जिला महामंत्री अमित डबराल, यशपाल नेगी, शुभम् गर्ग, व्यापार मण्डल अध्यक्ष संजय गुप्ता, अनिल जैन, कमला चौहान, उपासना, सुमन काश्व, रचिता ठाकुर, सुनीता चौधरी, विनोद कश्यप, संतोष रावत आदि उपस्थित रहे।

प्रगतिशील किसान सम्मान से नवाजे गए जौनसार के सुरेंद्र सिंह

शाह टाइम्स संवाददाता

साहिया। गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर में 10 अक्टूबर से 13 अक्टूबर तक आयोजित 118 वें अखिल भारतीय किसान मेले में जौनसार के चिबऊ गांव निवासी सुरेंद्र सिंह को राज्य पाल गुरमीत सिंह और कृषि मंत्री गणेश जोशी ने सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। सुरेन्द्र सिंह कृषि के नवीनतम विकसित तकनीक अपनाकर आय में वृद्धि करने और अन्य किसानों को वैज्ञानिक विधि से खेती करने के लिए प्रेरित करने के लिए अखिल भारतीय किसान मेला के अवसर पर प्रगतिशील कृषक सम्मान से विभूषित किया गया। यह सम्मान जिला देहरादून के कालसी ब्लाक के चिबऊ गांव निवासी सुरेंद्र सिंह को मिला है।

हरिपुर कालसी संगम पर अवैध खनन बेखौफ जारी

शाह टाइम्स संवाददाता

कालसी। हरिपुर कालसी क्षेत्र में यमुना और अमलावा नदी के संगम पर इन दिनों अवैध खनन जोरों पर है। बावजूद इसके जिम्मेदार विभाग कुंभकर्णी नींद में सोए हुए हैं।

स्थानीय लोगों के अनुसार रात के अंधेरे में ट्रैक्टर-ट्रॉली और भारी मशीनों से रेत-बजरी की अवैध निकासी लगातार की जा रही है। पुलिस विभाग, खनन विभाग, आरटीओ और फॉरेस्ट विभाग को इसकी जानकारी होने के बावजूद कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जा रही है। इससे जहां नदी का प्राकृतिक स्वरूप बिगड़ रहा है, वहीं पर्यावरणीय असंतुलन और भूमि कटाव का खतरा भी बढ़ता जा रहा है। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से तुरंत कार्रवाई की मांग की है ताकि नदियों को बर्बादी से बचाया जा सके।

टिहरी में शुरू हुआ पोलियो टीकाकरण अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। जिला चिकित्सालय बौराड़ी में पोलियो अभियान का शुभारंभ निदेशक, राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन उत्तराखंड डॉ. रश्मि पंत और नगर पालिका अध्यक्ष मोहन सिंह रावत ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर निदेशक ने 18 अक्टूबर तक चलने वाले पोलियो अभियान की तैयारियों की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। उन्होंने अभियान को सफल बनाने के लिए टीम भावना के साथ कार्य करने पर जोर दिया।

जनपद स्तरीय शुभारंभ के बाद डॉ. रश्मि पंत ने आयुष्मान आरोग्य मंदिर, बादशाहीथौल और चोपड़ियाल गांव का भ्रमण कर बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई और स्थानीय लोगों से मिलकर उन्हें पोलियो उन्मूलन के महत्व के बारे में जागरूक किया। उन्होंने कहा कि भारत को पोलियो मुक्त बनाए रखने के लिए प्रत्येक नागरिक की भागीदारी आवश्यक है। किसी भी बच्चे को पोलियो की खुराक से वंचित नहीं रहना चाहिए। इस दौरान डॉ. पंत ने जिला चिकित्सालय का विस्तृत निरीक्षण किया। उन्होंने जनरल वार्ड, आईसीयू, स्त्री एवं प्रसूति वार्ड सहित विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों की स्थिति का जायजा लिया। साथ ही उन्होंने अस्पताल में स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने और अनटाइड फंड का पारदर्शी रूप से उपयोग करने के निर्देश दिए। निदेशक ने स्पष्ट कहा कि प्रत्येक नवजात शिशु का पूर्ण टीकाकरण सुनिश्चित किया जाए और जन्म खुराक सहित सभी टीकों का समय पर सर्वेक्षण एवं फॉलो-अप किया जाए।

उन्होंने यह भी निर्देश दिए कि यदि किसी दूरस्थ क्षेत्र में कोई बच्चा बीमार पाया जाता है, तो उसकी नियमित निगरानी स्वास्थ्य टीम द्वारा की जाए और आवश्यकता पड़ने पर ऐसे बच्चों को तुरंत निकटतम स्वास्थ्य केंद्र में रेफर किया जाए, ताकि समय पर उचित उपचार उपलब्ध हो सके।

मुख्य चिकित्साधिकारी टिहरी, डॉ. श्याम विजय ने बताया कि जनपद में पोलियो अभियान को सफल बनाने के लिए कुल 523 बूथ बनाए गए हैं, जहां 0 से 5 वर्ष आयु वर्ग के 45,822 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जाएगी। उन्होंने बताया कि अभियान के पहले दिन लगभग 72 प्रतिशत बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जा चुकी है और शेष बच्चों तक पहुँचने के लिए स्वास्थ्यकर्मी लगातार कार्यरत हैं। कार्यक्रम में अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. जितेंद्र भंडारी, डॉ. बृजेश डोभाल, कार्यवाहक मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. शैलेश बर्थवाल, चिकित्साधिकारी डॉ. पुखराज सिंह सहित एनएचएम के कर्मचारी, आशा, एएनएम और सीएचओ उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर पोलियो मुक्त समाज के लक्ष्य को साकार करने का संकल्प लिया।

एक नजर ....

कचटा में चालदा महाराज के आगमन को लेकर बैठक, समितियों का गठन

चकराता। खत कोरु के कचटा में स्थित चालदा महाराज मंदिर प्रांगण में आज एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें आगामी महीनों में होने वाले चालदा महाराज के आगमन की तैयारियों पर चर्चा की गई। बैठक में निर्णय लिया गया कि महाराज के आगमन से पूर्व सभी आवश्यक व्यवस्थाओं के लिए अलग-अलग समितियों का गठन किया जाएगा, ताकि आयोजन को सफलतापूर्वक संपन्न किया जा सके।

खत कोरु के सदर स्याणा सुनील दत्त जोशी की अध्यक्षता में संपन्न हुई बैठक में उन्होंने बताया कि यातायात समिति, पार्किंग समिति, भोजन समिति, और भंडारा समिति सहित कई समितियां बनाई गई हैं। इन समितियों को अपने-अपने कार्यों की जिम्मेदारी स्वतंत्र रूप से निभानी है। सभी समितियां आयोजन से पूर्व अपनी तैयारियां पूरी कर लेंगी, ताकि भक्तों के आगमन पर कोई असुविधा न हो। बैठक में सदर स्याणा सुनील जोशी, मंदिर समिति के अध्यक्ष सीताराम चौहान, श्याम सिंह राठौड़, राजेंद्र दत्त शर्मा, सरदार सिंह चौहान, अमर सिंह चौहान, केसर सिंह चौहान, संदीप चौहान, राजेंद्र चौहान, कलम सिंह, राजवीर राठौर, धाम सिंह चौहान, हाकम सिंह, भारत चौहान, संसार सिंह चौहान, विरेंद्र सिंह चौहान, बारु सिंह चौहान, सुल्तान सिंह चौहान, स्वराज सिंह, गंभीर सिंह चौहान, रणवीर सिंह चौहान, शमशेर सिंह चौहान, केदार सिंह चौहान, राजेंद्र सिंह चौहान सहित अनेक ग्रामीण शामिल थे।

वॉलीबाल प्रतियोगिता में शारीरिक शिक्षा विभाग विजेता

श्रीनगर। अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के उपलक्ष्य में गढ़वाल विश्वविद्यालय के खेल मैदान में वालीबाल प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता में कुल 16 टीमों ने प्रतिभाग किया। विवि की शारीरिक शिक्षा विभाग की टीम ने प्रतियोगिता को अपने नाम किया। वालीबाल कोच शिवा चौधरी ने बताया कि प्रतियोगिता में डांगचौरा, श्रीकोट, एसजीआरआर, बीपीएड सहित कुल 16 टीमों ने प्रतिभाग किया। फाइनल मुकाबला श्रीनगर वालीबाल क्लब और गढ़वाल विवि के शारीरिक शिक्षा विभाग के बीच खेला गया। रोमांचक मुकाबले में शारीरिक शिक्षा विभाग की टीम ने 25-21, 25-23, 19-25, 27-25 अंकों से जीत दर्ज की, जबकि श्रीनगर क्लब उपविजेता रहा। विजेता व उपविजेता टीमों को कैबिनेट मंत्री डा. धन सिंह रावत ने पुरस्कृत किया। प्रतियोगिता के अजय राणा, अभिषेक कुमार, शेखर ने सहयोग प्रदान किया।

लोकगायिका हेमा के गानों पर जमकर थिरके युवा

श्रीनगर। सहकारिता मेले के पांचवें दिवस कि सांस्कृतिक संध्या प्रसिद्ध लोकगायिका हेमा नेगी करासी के नाम रही। इस दौरान करासी के गानों में युवाओं ने जमकर थिरकते हुए पूरा पंडाल लोक रंगों में सराबोर कर दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत आरसी. मेमोरियल उफल्डा पब्लिक स्कूल के बैंड की शानदार प्रस्तुति से हुई। जिसने दर्शकों की खूब सराहना बटोरी। मौके पर मुख्य अतिथि इफको के अध्यक्ष दिलीप संघाणी ने बच्चों के उत्साहवर्धन हेतु प्रत्येक छात्र को इक्कीस सौ रूपये की पुरस्कार राशि भेंट की। संघाणी ने कहा कि उत्तराखंड में सहकारिता के क्षेत्र में हाल के वर्षों में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। जब दिल्ली या गुजरात में सहकारिता की चर्चा होती है और उत्तराखंड का नाम लिया जाता है, यह गर्व का विषय है।

गढ़वाल विवि के भौतिकी विभाग कि अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आज से

श्रीनगर। हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग के ओर से हिमालयी क्षेत्र में एरोसोल, वायु गुणवत्ता एवं जलवायु परिवर्तन पर तृतीय बहुविषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आज (कल) से स्वामी मनमंथन प्रेक्षागृह में शुरू होगी। हिमालयी क्षेत्र में एरोसोल, वायु गुणवत्ता, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय स्थिरता से जुड़े बहुआयामी मुद्दों पर वैज्ञानिक विमर्श को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से होने वाली दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में देश-विदेश से पहुंचने वाले विषय विशेषज्ञ अपने अनुभव एवं शोध प्रस्तुत करेंगे। संगोष्ठी का शुभारंभ उत्तराखंड राज्य पूर्व सैनिक कल्याण परामर्श समिति एवं संस्थापक एंव यूथ फाउंडेशन उत्तराखंड के संस्थापक कर्नल कोठियाल करेंगे। कार्यशाला के समन्वयक डॉ. आलोक सागर गौतम ने बताया कि संगोष्ठी में लगभग 20 विषयगत सत्र आयोजित किए जाएंगे।

नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

शाह टाइम्स संवाददाता

चकराता। सिटी न्यूरो स्पाइन अस्पताल देहरादून के तत्वावधान में तथा छावनी परिषद चकराता के सहयोग से कैंट इंटर कॉलेज परिसर में नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में पहुंचे करीब दो सौ मरीजों की जांच कर उन्हें नि:शुल्क दवाएं वितरित की गईं।

शिविर का शुभारंभ छावनी परिषद के सदस्य अनिल चांदना तथा क्षेत्र पंचायत सदस्य प्रतिभा चौहान (मंगरोली) ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर अस्पताल से आए विशेषज्ञ चिकित्सकों डॉ. नागेंद्र सिंह रावत, डॉ. दीपिका नेगी और प्रवीण रावत ने मरीजों को विभिन्न बीमारियों के संबंध में परामर्श दिया तथा आवश्यक उपचार प्रदान किया।

छावनी परिषद सदस्य अनिल चांदना ने कहा कि जनजातीय क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण ऐसे शिविर गरीब और जरूरतमंद लोगों के लिए बेहद लाभकारी सिद्ध होते हैं। उन्होंने अस्पताल प्रबंधन का आभार जताया।शिविर के दौरान गुलफसा, संदीप जोशी (कार्यालय अधीक्षक, छावनी परिषद चकराता), प्रतिभा जोशी (बीडीसी सदस्य मंगरोली), शिक्षक विनोद, जयेन्द्र, राजेंद्र नौटियाल, संदीप रावत, विपिन डोभाल सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

किसानों को दी आधुनिक कृषि की जानकारी

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। कृषि विज्ञान केंद्र रानीचौरी में रबी कृषि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में किसानों ने भाग लिया। इस अवसर पर विशेषज्ञों ने गेहूं, सरसों, तोरिया सहित अन्य रबी फसलों की बुआई, बीज चयन और वैज्ञानिक तकनीकों पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि किसानों को बीज की बुआई से पहले अपने क्षेत्र की जलवायु परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त बीज का चयन करना चाहिए, क्योंकि सही बीज ही अच्छी उपज की कुंजी होता है।

रानीचौरी में आयोजित इस कृषक गोष्ठी का शुभारंभ वानिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. टीएस मेहरा, मुख्य पशुचिकित्साधिकारी डॉ. डीके शर्मा और कृषि रक्षा अधिकारी सोमांश गुप्ता ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। गोष्ठी में विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे पीएम किसान सम्मान निधि, पीएम कृषि सिंचाई योजना, कृषि यांत्रिकीकरण, पीएम धन धान्य योजना और दलहन आत्मनिर्भरता मिशन की विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही पशुओं में खुरपका-मुंहपका रोग के टीकाकरण और बीमा योजनाओं के बारे में भी बताया गया।

13 खिलाड़ी राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयनित

थत्यूड़। प्रतिभा कभी छिपती नहीं ख्र इसका प्रमाण पेश किया है पीएम श्री राइका भवान जौनपुर के छात्र-छात्राओं ने। विद्यालय के 13 खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए राज्य स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता के लिए अपना स्थान पक्का किया है। विद्यालय के अध्यापक महावीर प्रसाद ने बताया की नई टिहरी में हाल ही में हुए जनपद स्तरीय क्रीड़ा प्रतियोगिता में पीएम श्री राइका भवान, जौनपुर के खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। विद्यालय की टीम ने वॉलीबॉल बालक वर्ग और खो-खो बालिका वर्ग में बाजी मारते हुए ट्रॉफी अपने नाम की।

धर्म संस्कृति के पालन से जीवन मर्यादित:घिल्डियाल

श्रीनगर। सिद्धपीठ कटकेश्वर महादेव (घसियामहादेव) मंदिर में चल रही शिवमहापुराण में प्रसिद्ध कथावाचक आचार्य मधुसूदन घिल्डियाल ने बुद्धि सिद्धि के दाता भगवान गणेश के महात्म्य पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। कहा कि धर्म संस्कृति को धारण करने से व्यक्ति मर्यादित होकर जीवन यापन करता है। कहा कि परमात्मा ही सत्य स्वरूप है। मनुष्य ही धर्म को धारण करने में सामर्थ्यवान है। उन्होंने कहा कि हमारी हिंदू संस्कृति विराट है। आचार्य मधुसूदन घिल्डियाल ने कहा कि अनेक पुण्यों और ईश्वर कृपा से मानव जीवन मिलता है।

रोजगार मेले में युवाओं को अवसर, महिला सशक्तिकरण पर जोर

शाह टाइम्स संवाददाता

नई टिहरी। सरस मेला 2025 के अवसर पर पूर्णानंद स्टेडियम, मुनिकीरेती में भव्य रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्घाटन टिहरी सांसद माला राज्य लक्ष्मी शाह ने मुख्य अतिथि के रूप में किया। इस अवसर पर विधायक टिहरी किशोर उपाध्याय, जिला पंचायत अध्यक्ष इशिता सजवाण, मुख्य विकास अधिकारी वरुणा अग्रवाल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

रोजगार मेले के सातवें दिन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माला राज्य लक्ष्मी शाह ने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे विकासोन्मुख मेलों से न केवल युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं, बल्कि स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ होती है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का उद्देश्य महिलाओं को सशक्त बनाना है और सरस मेला इस दिशा में एक प्रभावी मंच बनकर उभरा है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2023 में भी इसी स्थल पर सरस मेला आयोजित किया गया था, जिसकी सफलता को देखते हुए उत्तराखंड सरकार ने इस वर्ष भी इसका आयोजन किया है।

विधायक किशोर उपाध्याय ने कहा कि रोजगारोन्मुख मेलों का नियमित आयोजन प्रदेश के युवाओं के लिए अत्यंत उपयोगी है। इससे युवाओं को रोजगार के अवसर मिलते हैं और उनके कौशल में निखार आता है।

उन्होंने इस प्रकार के आयोजनों को प्रदेश के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बताया।जिला सेवायोजन कार्यालय, टिहरी गढ़वाल के तत्वावधान में आयोजित इस रोजगार मेले में मुख्य विकास अधिकारी वरुणा अग्रवाल ने बताया कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। अब तक जिले में 1974 युवक एवं युवतियाँ इस योजना के माध्यम से रोजगार प्राप्त कर चुके हैं, जबकि वर्तमान में 208 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। यह योजना ग्रामीण युवाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही है।रोजगार मेले ने न केवल युवाओं को अवसरों से जोड़ने का काम किया, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भरता और विकास की राह पर अग्रसर करने की प्रेरणा भी दी। यह आयोजन प्रदेश में रोजगार सृजन और महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सशक्त कदम सिद्ध हुआ।

पीड़ितों को दें मानवता का परिचय : बहुगुणा

शाह टाइम्स संवाददाता

रुद्रप्रयाग। जनपद भ्रमण पर पहुंचे प्रभारी मंत्री सौरभ बहुगुणा ने रविवार को आपदा से क्षतिग्रस्त परिसंपत्तियों एवं आपदा से प्रभावित क्षेत्रों के संबंध में जनपद स्तरीय अधिकारियों की बैठक की। बैठक के दौरान उन्होंने विभागवार कार्यों की समीक्षा करते हुए आपदा के समय विभागीय स्तर पर किए गए कार्यों की सराहना की। साथ ही अधिकारियों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने के भी निर्देश दिए।

जिला कार्यालय के सभागार कक्ष में आयोजित बैठक के दौरान जनपद प्रभारी मंत्री बहुगुणा ने बीते मानसून सत्र की अवधि में जनपद में हुई क्षति का विभागवार जायजा लिया। उन्होंने जनपद में प्रभावित सड़कों सहित, सिंचाई नहरों, पेयजल योजनाओं, स्वास्थ्य व अन्य विभागों की समीक्षा करते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। साथ ही मानसून सत्र में आपदा के दौरान अधिकारियों की कार्यकुशलता व तत्परता की सराहना भी की। उन्होंने अधिकारियों को सुझाव देते हुए कहा कि जिन योजनाओं के लिए शासन को प्रस्ताव भेजे गए हैं, उन पर स्थानीय विधायकों से लगातार संपर्क कर योजना को स्वीकृत कराने का भरसक प्रयास किया जाए। कहा कि आपदा से प्रभावित अथवा पीड़ितों को मानकों के अनुरूप यथासंभव सहायता उपलब्ध कराने के साथ-साथ ही मानवता का भी परिचय दिया जाना आवश्यक है। हर आपदा पीड़ित को आवश्यता के अनुसार लाभान्वित करना ध्येय होना चाहिए। रुद्रप्रयाग विधायक भरत सिंह चौधरी ने कहा कि पीएमजीएसवाई के तहत ऐसे बहुत से मोटर मार्ग हैं जो बनकर तैयार तो हैं, लेकिन पुल निर्माण का कार्य ब्रिज एंड रूफ एजेंसी को देने से मोटर मार्ग उपयोग में नहीं आ पाए हैं इसका कारण उक्त पुल निर्माण एजेंसी के द्वारा पुल निर्माण का कार्य पूर्ण नहीं किया जा सका है। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष पूनम कठैत, भाजपा जिलाध्यक्ष भारत भूषण भट्ट, प्रभागीय वनाधिकारी रजत सुमन, मुख्य विकास अधिकारी राजेंद्र सिंह रावत, अपर जिलाधिकारी श्याम सिंह राणा, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. रामप्रकाश, मुख्य शिक्षा अधिकारी प्रमेंद्र कुमार बिष्ट, जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार, परियोजना निदेशक विमल कुमार, जिला कार्यक्रम अधिकारी अखिलेश मिश्रा, जिला पर्यटन अधिकारी राहुल चौबे, अधिशासी अभियंता जल निगम नवल कुमार, सिंचाई खुशवंत सिंह चौहान, जिला उद्योग केंद्र महेश प्रकाश, जिला पूर्ति अधिकारी केएस कोहली सहित अन्य विभागीय अधिकारी व अन्य मौजूद रहे।

वनस्पति विज्ञान विभाग में विभागीय परिषद गठन एवं आपदा प्रबंधन गोष्ठी

शाह टाइम्स संवाददाता

विकासनगर। वीर शहीद केसरी चंद राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डाकपत्थर के वनस्पति विज्ञान विभाग में विभागीय परिषद् का गठन किया गया। बी.एससी प्रथम, तृतीय एवं पंचम सेमेस्टर के छात्र-छात्राओं ने सर्वसम्मति से पदाधिकारियों का चयन किया। चयनित पदाधिकारियों में अध्यक्ष ज्योति जोशी, उपाध्यक्षरू समीर, सचिवरू लक्की, सह सचिव त्रिवली शर्मा एवं कोषाध्यक्ष अभिजीत सिंह।

इस अवसर पर आपदा प्रबंधन विषय पर एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन वनस्पति विज्ञान विभाग प्रभारी डॉ. पी.एस. चौहान ने किया। डॉ. सुशील सती ने फाइटोकैमेस्ट्री और पेड़-पौधों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला, वहीं रसायन विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ. अरविंद मोहन पैन्यूली ने चरकसंहिता और उसकी औषधीय महत्ता पर चर्चा की। वाणिज्य विभाग के डॉ. आर.पी. बडोनी ने पेड़-पौधों के आर्थिक महत्व को रोजगारपरक कार्यक्रमों से जोड़ने की बात कही। मुख्य शास्ता डॉ. केष्टवाल ने गणितीय दृष्टिकोण से वनस्पतियों की उत्पादक क्षमता पर विचार रखे। डॉ. परवेज आलम ने देश की आर्थिक स्थिति और प्राकृतिक संसाधनों के महत्व को रेखांकित किया, जबकि डॉ. नेहा कुकरेती ने आपदा से बचाव के उपायों पर जोर दिया।

प्रभारी प्राचार्य प्रो. आर.एस. गंगवार ने शास्त्रों में वर्णित औषधीय साहित्य और प्राकृतिक संसाधनों के अनावश्यक दोहन से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में उन्होंने चयनित पदाधिकारियों एवं समस्त छात्र-छात्राओं को बधाई दी। इस कार्यक्रम में डॉ. दीप्ति बगवाडी, डॉ. सीमा पुंडीर, बलबीर सिंह पंवार और सुनील मैठानी उपस्थित रहे।

ज़मीन के फर्जीबाड़े में फंसे रसूदखदार

जिला पंचायत अध्यक्ष समेत सात प्रभावशाली लोगों पर मुकदमा

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। गौलापार क्षेत्र में करोड़ों रुपये मूल्य की सरकारी जमीन को फर्जी दस्तावेज और भ्रष्टाचार के सहारे हड़पने का बड़ा मामला सामने आया है। इस घोटाले में नैनीताल की जिला पंचायत अध्यक्ष, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष के बेटे समेत सात प्रभावशाली लोगों और तत्कालीन राजस्व अधिकारियों पर गंभीर आरोप लगे हैं। आईजी रिद्धिम अग्रवाल के निर्देश पर काठगोदाम पुलिस ने सभी के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा 420 (धोखाधड़ी) के तहत मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बता दें कि शिकायतकर्ता रविशंकर जोशी द्वारा पुलिस को दी गई तहरीर के अनुसार यह मामला हल्द्वानी तहसील के देवला तल्ला पजाया गांव की 3.107 हेक्टेयर लगभग 7.6 एकड़ सरकारी भूमि से जुड़ा है। आरोप है कि बलवंत सिंह नामक व्यक्ति ने झूठे

पूर्व विस अध्यक्ष के बेटे पर भी केस

शपथ-पत्र के माध्यम से यह दावा किया कि उसके पास 12.5 एकड़ से अधिक भूमि नहीं है, जबकि उसके नाम पहले से ही हल्द्वानी, गौलापार, कुंवरपुर व हल्द्वानी खास में इससे कहीं ज्यादा ज़मीन दर्ज थी। बावजूद इसके, राजस्व अधिकारियों ने इस तथ्य को नजरअंदाज कर उसे जमीन का मालिक बना दिया। वर्ष 1991 में तत्कालीन जिलाधिकारी ने बलवंत सिंह के कब्जे को अवैध मानते हुए उसकी बेदखली का आदेश दिया था। मगर 2011 से 2016 के बीच जब जमीन के विनियमितीकरण की प्रक्रिया दोबारा शुरू हुई, तो इस आदेश को जानबूझकर छिपा लिया गया और जमीन रेगुलराइज कर दी गई। विनियमितीकरण के बाद 10 मार्च 2016 को बलवंत सिंह ने पूरी जमीन कमलुवागांजा निवासी रविकांत फुलारा के नाम दान कर दी। शिकायतकर्ता का आरोप है कि फुलारा की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है, बावजूद इसके उसने 19 लाख रुपये का भारी-भरकम स्टांप शुल्क जमा किया जो काले धन के इस्तेमाल की आशंका को बल देता है। सबसे हैरान करने वाली बात यह है कि दान के सिर्फ दो महीने बाद 9 मई 2016 को रविकांत फुलारा ने पूरी जमीन सात हिस्सों में बांटकर सात प्रभावशाली लोगों को बेच दी। इन खरीदारों में नैनीताल की जिला पंचायत अध्यक्ष दीपा दरम्वाल, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष के पुत्र हरेन्द्र सिंह कुंजवाल, मीनाक्षी अग्रवाल, अजय गुप्ता, चेतन गुप्ता, अनिता गुप्ता और अरविंद मेहरा के नाम शामिल हैं। शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि इन सौदों से कुल 3.25 करोड़ रुपये की बड़ी रकम मिली, लेकिन आशंका जताई जा रही है कि यह रकम फुलारा से जबरन वापस ले ली गई। यहां तक कि फुलारा को धमकी देकर जमीन बेचने के लिए मजबूर किया गया। काठगोदाम थानाध्यक्ष विमल मिश्रा ने पुष्टि की है कि डीआईजी के आदेश पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

सांप ने बच्चे को डसा, मौत

हल्द्वानी। रात में सोते समय एक आठ साल के बच्चे को सांप ने डस लिया। जिससे आनन आनन फानन में उपचार के लिए अस्पताल लाया गया। बच्चे की हालत नाजुक देखते हुए उसे सुशीला तिवारी अस्पताल रेफर कर दिया। जहां बच्चे ने उपचार के दौरान मौत हो गई। घटना के बाद बच्चे के घर में कोहराम मच गया। रविवार को पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराके शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया। जानकारी के अनुसार अंबेडकरनगर वार्ड-3 जगतपुरा टनकपुर चंपावत निवासी राजू वर्मा का आठ साल का बेटा दीपक बीते शनिवार की रात खाना खाने के बाद सो गया। परिजनों ने बताया कि रात करीब 11 बजे दीपक की चीखने की आवाज आई और बोला उसे काट लिया। इतना सुनते ही परिजनों के होश उड़ गए और उन्होंने सांप को जाते देखा। आनन फानन में परिजन उसे टनकपुर अस्पताल लाए जहां पर चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार देने के बाद उसे सुशीला तिवारी रेफर कर दिया। जहां पर उसने उपचार के दौरान दम तोड़ दिया।

चोर गैंग की बुआ-भतीजी गिरफ्तार

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। करवाचौथ की खरीदारी के दौरान महिलाओं के पर्स चुराने वाली बुआ-भतीजी की जोड़ी को मंगलपड़ाव पुलिस ने महज दो घंटे में चोरी के सामान के साथ गिरफ्तार कर लिया। पकड़ी गई बुआ भतीजी के पास से चोरी किया हुआ सामान भी बरामद किया है। पुलिस ने दोनों के खिलाफ कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है। बता दें दमुवाढूंगा काठगोदाम निवासी सुशीला आर्या पति रमेश चन्द ने पुलिस को दी तहरीर में कहा था बीते 9 अक्टूबर को वह करवाचौथ की खरीदारी के लिए बाजार गई थीं। तभी साहुकारा लाइन मंगलपड़ाव में खरीदारी के दौरान दो महिलाओं ने उनके कपड़े के थैले से पर्स चोरी कर लिया, जिसमें 3000 रूपये की नगदी, आधार कार्ड, रिज्यूमे और एटीएम कार्ड था। कोतवाली पुलिस ने मामला दर्ज करते हुए चोरों की तलाश शुरू कर दी। जांच के दौरान मंगल पड़ाव चौकी प्रभारी गौरव जोशी ने कंट्रोल रूम प्रभारी जितेन्द्र सिंह की मदद से घटनास्थल व आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगालने शुरू किए। इस दौरान कुछ संदिग्धों की पहचान के बाद सिंधी चौक हल्द्वानी से दो महिलाओं को पकड़ा गया। पकड़ी गई महिलाओं ने अपना नाम मिथलेश पत्नी सुरेन्द्र निवासी पूनापुर, बरेली उत्तर प्रदेश, मीना पत्नी रामकिशोर निवासी ट्रांजिट कैंप रुद्रपुर मूल निवासी चौखंडी बरेली बताया। पकड़ी गई महिला चोर ने बताया कि वे त्योहारों के दौरान भीड़भाड़ वाले बाजारों में जाकर महिलाओं के पर्स और जेवरात चुराती हैं। एक महिला को घेरकर उसे बातों में उलझाती हैं, दूसरी चोरी करती है। इससे पहले भी वे हल्द्वानी में चोरी कर चुकी हैं। दोनों आपस में बुआ-भतीजी हैं। जिनके पास से पुलिस ने चोरी किए गए 3 हजार की नगदी, आधार कार्ड, रिज्यूमे और एटीएम कार्ड बरामद किया है। दोनो के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है। गुडवर्क करने वाली टीम में मंगलपड़ाव चौकी प्रभारी गौरव जोशी, कांस्टेबल भूपाल सिंह, संतोष बिष्ट, महिला कांस्टेबल राधा रानी शामिल थे।

वनभूलपुरा थाने में निरीक्षक सुशील कुमार को दी भावभीनी विदाई

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। वनभूलपुरा थाना परिसर में रविवार को प्रभारी निरीक्षक सुशील कुमार के सम्मान में एक भावभीन विदाई समारोह आयोजित किया गया। सुशील कुमार को रामनगर कोतवाली का प्रभारी निरीक्षक नियुक्त किया गया है। इस अवसर पर थानाध्यक्ष सुनील जोशी, उपनिरीक्षक मनोज यादव सहित थाने के सभी अधिकारी व कर्मचारी ने उन्हें गुलदस्ता और प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया और उनके साथ बिताए गए पलों को याद करते हुए शुभकामनाएं दीं। सभी अधिकारियों ने सुशील कुमार की कार्यकुशलता अनुशासनप्रियता और सरल स्वभाव की सराहना की और विश्वास जताया कि वे अपने नए दायित्व में भी उत्कृष्ट कार्य करेंगे।

डा. लोहिया की दूरदर्शिता आज भी प्रासंगिक: मतीन सिद्दीकी

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। डा. राममनोहर लोहिया की 58वीं पुण्यतिथि के अवसर पर समा. जवादी पार्टी उत्तराखंड के प्रभारी हाजी अब्दुल मतीन सिद्दीकी के कार्यालय 17-आजाद नगर हल्द्वानी में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता एकत्रित हुए और लोहिया जी के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। सभा की अध्यक्षता कर रहे सपा प्रभारी हाजी अब्दुल मतीन सिद्दीकी ने कहा कि डा. राममनोहर लोहिया एक सच्चे समाजवादी विचारक थे। जिन्होंने

महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश की आज़ादी के लिए संघर्ष किया। श्रद्धांजलि सभा में जावेद सिद्दीकी, अरशद अय्यूब, जावेद मिकरानी, अलीम अंसारी, उमैर मतीन, इस्लाम मिकरानी, रेहान मलिक, संजय गुप्ता, आसिम सिद्दीक़ी, अनवर हुसैन, ज़ाहिद ख़ान, विक्की खान, दीपक अग्रवाल, सरताज अंसारी, एडवोकेट जावेद अहमद, नाज़िम सलमानी, अथर खान, मोहम्मद अनस, मोहम्मद अरशद, अज़हर मलिक रहे।

सीएम आज हल्द्वानी में

हल्द्वानी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी कल (आज) जनपद भ्रमण पर रहेंगे। एडीएम के अनुसार मुख्यमंत्री का कार्यक्रम तय हो चुका है। सीएम आज अपराह्न 2.55 बजे देहरादून स्थित जीटीसी हेलीपैड से हेलीकॉप्टर द्वारा प्रस्थान करेंगे और लगभग 3.45 बजे गौलापार हेलीपैड, काठगोदाम पहुंचेंगे। इसके बाद वे अपराह्न 4 बजे सूर्यादेवी बैंक्वेट हॉल, खेड़ा चौराहा, गौलापार में आयोजित विचार गोष्ठी में शामिल होंगे। जिसमें सोशल मीडिया प्रभारियों और भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ संवाद किया जाएगा। गोष्ठी के बाद मुख्यमंत्री सर्किट हाउस, काठगोदाम पहुंचेंगे और अल्प विश्राम करेंगे। इसके पश्चात वे सायं 7.15 बजे कार द्वारा एमबीपीजी कॉलेज के लिए रवाना होंगे, जहां वे कुमाऊं द्वार महोत्सव 2025 में प्रतिभाग करेंगे। वे रात्रि 8.30 बजे सर्किट हाउस काठगोदाम पहुंचेंगे।

अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस पर आयुषी भट्ट को मिला सम्मान

शाह टाइम्स ब्यूरो

लालकुआं। अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के अवसर पर उत्तराखंड की महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने नैनीताल जनपद सहित राज्य भर की मेधावी बालिकाओं को सम्मानित किया। इस दौरान इंटरमीडिएट परीक्षा में नैनीताल जिले की टॉपर रही आयुषी भट्ट को भी विशेष रूप से पुरस्कृत किया गया। बीते शनिवार को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की अध्यक्षता में मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय स्थित मुख्य सेवक सदन में आयोजित बालिका शिक्षा प्रोत्साहन कार्यक्रम में कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या ने सभी जिलों की हाईस्कूल व इंटरमीडिएट की प्रथम तीन टॉपर बालिकाओं को पुरस्कार स्वरूप स्मार्टफोन भेंट किए। आयुषी पत्रकार बीसी भट्ट व गीता भट्ट की पुत्री हैं। उनकी इस उपलब्धि पर क्षेत्रवासियों द्वारा उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी जा रही हैं।

ट्रांसपोर्ट नगर जुआ खेल रहे चार जुआरी धरे

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। दीपावली पर्व को देखते हुए जनपद नैनीताल में अवैध गतिविधियों पर पुलिस द्वारा लगातार सख्त कार्रवाई की जा रही है। बीती शनिवार की रात्रि कोतवाल की अगुवाई में टीपीनगर पुलिस ने सार्वजनिक जगह पर जुआ खेल रहे चार लोगों को गिरफ्तार किया है। जिनके पास से ताश के पत्ते व हजारों की नगदी बरामद हुई।

चारों जुआरियों के खिलाफ पुलिस ने जुआ अधिनियम के तहत कार्रवाई की है। जानकारी के अनुसार बीते शनिवार की रात्रि कोतवाल अमर चन्द्र शर्मा के नेतृत्व में टीपीनगर चौकी प्रभारी मनोज कुमार ने मय टीम के साथ ट्रांसपोर्ट नगर क्षेत्र में छापेमारी की तो चार जुआरी जुआ खेलते हुए रंगेहाथ गिरफ्तार हुए।

जिनके पास से ताश के पत्ते व 14 हजार 920 रूपये की नगदी बरामद हुई। पकड़े गए जुआरियों ने अपना नाम मोहम्मद आमिर निवासी लाइन नंबर 17 बनभूलपुरा, जिसान रजा निवासी समर डीलक्स उत्तर उजाला बनभूलपुरा, सलीम अहमद निवासी इंद्रानगर बड़ी मस्जिद के पीछे बनभूलपुरा, विकल कुमार निवासी खोदतला रामपुर उत्तर प्रदेश बताया। पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ थ्धारा 13जी जुआ अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी। टीम में टीपीनगर चौकी प्रभारी मनोज कुमार, हैड कांस्टेबल दिगंबर सनवाल, पीएसी हैड कांस्टेबल दुर्गा सिंह, कांस्टेबल दीप चन्द्र शामिल रहे।

...इधर बनभूलपुरा में भी दबोचे गए तीन जुआरी

हल्द्वानी। दीपावली पर्व पर हार जीत की बाजी लगाकर जुआ खेल रहे तीन जुआरियों को बनभूलपुरा पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पकड़े गए जुआरियों के पास से ताश के पत्ते व 3380 रूपये की नगदी बरामद की है। जानकारी के अनुसार बीते शनिवार की रात्रि बनभूलपुरा थाना पुलिस क्षेत्र में गश्त कर रही थी तभी पुलिस को सूचना मिली की रेलवे स्टेशन के पास पार्किंग में कुछ युवक जुआ खेल रहे है। सूचना पर एसआई हेमंत कुमार ने मय टीम के साथ बताए गए स्थान पर छापेमारी की तो पुलिस ने तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए जुआरियों ने अपना नाम फजले अहमद निवासी हनीफ होटल लाइन नंबर 8 बनभूलपुरा, मोहम्मद रफी निवासी आजाद नगर गफूर हलवाई के पीछे बनभूलपुरा, जिब्राइल निवासी मोहम्मदी चौक इंदिरानगर बनभूलपुरा बताया। पकड़े गए जुआरियों के पास से 3380 रूपये की नगदी व ताश के पत्ते बरामद हुए है। तीनों के खिलाफ कार्रवाई कर न्यायालय में पेश करने की तैयारी कर रही है।

निशुल्क नेत्र शिविर का लाभ उठाया

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। नारायणी सेवा समिति नारायणी सेना और ज्योति नेत्रालय के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को हीरानगर क्षेत्र में एक वृहद नेत्र जांच शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर में प्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डा. विभोर सहित विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम ने मौजूद लोगों की आंखों की जांच की और नेत्र स्वास्थ्य से जुड़ी उपयोगी सलाह दी। नारायणी सेवा समिति के संस्थापक अध्यक्ष रूद्राक्ष सिंह बिष्ट ने बताया कि यह शिविर समिति के कार्यालय योग पार्क के निकट हीरानगर हल्द्वानी में सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक आयोजित किया गया। शिविर में स्थानीय नागरिकों का उत्साह देखने लायक था और 100 से अधिक लोगों ने नेत्र परीक्षण का लाभ उठाया। कार्यक्रम में ज्योति नेत्रालय संस्था के अध्यक्ष राजीव विशेष रूप से मौजूद रहे। वहीं कांग्रेस पार्टी के प्रदेश सचिव राजेन्द्र सिंह बिष्ट ने भी इस शिविर के आयोजन में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। रूद्राक्ष सिंह बिष्ट ने बताया कि नारायणी सेवा समिति आगे भी समाज सेवा के ऐसे कार्यक्रम आयोजित करती रहेगी ताकि आम जनता को स्वास्थ्य और जागरूकता से जुड़ी सुविधाएं समय-समय पर मिलती रहें। इस मौके पर नारायणी सेना के स्वयंसेवकों में युवराज सिंह संधू, महक चावला, भावेश बिष्ट, प्रवीण मेलकानी, सक्षम खाती, कौशिक, भव्य भंडारी और हर्ष मिश्रा ने शिविर की व्यवस्था और संचालन में अहम भूमिका निभाई।

आरटीआई पर जागरूकता अभियान

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लॉ द्वारा सूचना के अधिकार विषय पर आयोजित सप्ताहीय जनजागरूकता कार्यक्रम रविवार को सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। यह अभियान 5 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक चला और इसे उत्तराखंड राज्य सूचना आयोग के निर्देशानुसार आयोजित किया गया।

इस जागरूकता अभियान के तहत विश्वविद्यालय ने स्थानीय रेडियो स्टेशन हेलो हल्द्वानी 91.2 एफएम के माध्यम से सूचना के अधिकार पर विशेष रेडियो वार्ताओं की श्रृंखला प्रस्तुत की। कार्यक्रम के दौरान एक ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी

संख्या में विद्यार्थियों और नागरिकों ने भाग लिया।

इस क्विज के माध्यम से प्रतिभागियों को न केवल आरटीआई के कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी गई, बल्कि उन्हें इस अधिनियम के व्यावहारिक उपयोग और सामाजिक महत्व को समझने का भी अवसर मिला। कार्यक्रम की सफलता पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने स्कूल ऑफ लॉ की टीम को बधाई देते हुए कहा, सूचना का अधिकार लोकतंत्र की आत्मा है। इस दिशा में नागरिकों को शिक्षित करना उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की सामाजिक जिम्मेदारी है, जिसे हम निरंतर निभा रहे हैं। यह अभियान सुशासन, पारदर्शिता और नागरिक सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

बस सेवा सुचारू करने के लिए सांसद ने लिखा पत्र

हल्द्वानी। पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री सांसद अजय भट्ट ने प्रबंध निदेशक उत्तराखंड परिवहन निगम को पत्र लिखकर कहा है कि उनके संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत अनेक ग्रामीण एवं पहाड़ी क्षेत्रों क्वारब, मोना, दियारी सिमायाल, प्यूड़ा, कफूड़ा, सतोली, सतखोल, छत्तोला, बड़ेत, सिमायाल रैकवाल, गड़गांव, मैयोडा, हरिनगर, नथुवाखान, ल्वेशाल, रामगढ़ आदि में उत्तराखण्ड परिवहन निगम द्वारा पूर्व में अल्मोड़ा से संचालित बस सेवाएं बंद कर दी गई हैं। लोगों को आवाजाही में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए उपर्युक्त क्षेत्रों के लिए पूर्ववत बस सेवाओं को शीघ्र पुनः प्रारंभ करने हेतु आवश्यक कार्रवाई करना सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है।

पूर्व पुलिस महानिदेशक को अहम दायित्व

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। उत्तरांचल टेनिस एसोसिएशन की वार्षिक महासभा एवं कार्यकारिणी पुनर्गठन (चुनाव) का आयोजन एमजे रेजीडेंसी, निकट सीएमआई अस्पताल, आराघर, देहरादून के मीटिंग हॉल में सम्पन्न हुआ। महत्वपूर्ण बैठक में प्रदेशभर के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। बैठक में अशोक कुमार सेवानिवृत्त आईपीएस एवं पूर्व पुलिस महानिदेशक को एसोसिएशन का अध्यक्ष चुना गया। महासचिव पद की जिम्मेदारी अंतरराष्ट्रीय सीनियर टेनिस खिलाड़ी सुमित गोयल रानीखेत, को सौंपी गई। वहीं उपाध्यक्ष पद पर विजेंद्र चौहान, मनोज गुप्ता दोनों देहरादून, एवं देवेंद्र

अशोक कुमार टेनिस एसोसिएशन के निर्विरोध अध्यक्ष बने

सिंह रावत सेवानिवृत्त अतिरिक्त आयकर आयुक्त हल्द्वानी, निर्वाचित हुए। संयुक्त सचिव पद के लिए हेम कुमार पांडेय सेवानिवृत्त फील्ड ऑफिसर, वन विकास निगम हल्द्वानी एवं लोकेश चुग इंजीनियर, देहरादून का चयन किया गया। कोषाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी दिनेश नागपाल देहराद.ून को दी गई। विशिष्ट सदस्य के रूप में अमर जगाती जगाती होटल, नैनीताल वर्तमान में उपसचिव, डिस्ट्रिक्ट टेनिस एसोसिएशन नैनीताल, वरुण वालिया, तुषार शर्मा दोनों देहरादून, नवनीत सिंह वर्तमान एसएसपी, पौड़ी, भावना बिष्ट हल्द्वानी तथा अनुपमा पवार देहरादून को शामिल किया गया। बैठक में विशिष्ट अतिथियों के रूप में रानीखेत से गौरव पांडेय, डिस्ट्रिक्ट टेनिस एसोसिएशन अल्मोड़ा के कोषाध्यक्ष, देहरादून से नरेंद्र कुमार, सुधीर कुमार मत्ता चार्टर्ड एकाउंटेंट, एवं आईटीबीपी के राजीव नेगी सहित कई अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे। नव- निर्वाचित कार्यकारिणी आगामी चार वर्षों तक उत्तराखंड में टेनिस खेल के विभिन्न आयामों में विकास और विस्तार के लिए कार्यरत रहेगी। बैठक में टेनिस के भविष्य, खिलाड़ियों की प्रतिभा विकास, प्रशिक्षण सुविधाओं और टूर्नामेंट्स के आयोजन जैसे विषयों पर भी विस्तृत चर्चा हुई।

आम्रपाली विवि में नवागंतुक छात्रों का स्वागत

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। आम्रपाली विश्वविद्यालय हल्द्वानी में नवप्रवेशी छात्रों के स्वागत के लिए आयोजित अभिनंदन-2025 कार्यक्रम रंगारंग प्रस्तुतियों के साथ उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विभिन्न विभागों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और मंच पर अपनी प्रतिभा की छटा बिखेरी। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि कालाढूंगी विधायक बंशीधर भगत, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डा. नरेन्द्र सिंह बिष्ट और प्रबंधन वर्ग द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। विशिष्ट अतिथियों में विश्व. विद्यालय के अध्यक्ष चानन लाल ढींगरा, सीईओ डा. संजय ढींगरा, सचिव बिंदु चावला, संयुक्त सचिव मयंक ढींगरा सहित विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारी मौजूद रहे। सीईओ डा. संजय ढींगरा ने कहा हम

सपने देखें, उन्हें साकार भी करें: कुलपति

उत्तराखंड के छात्रों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। कुलपति प्रो. नरेन्द्र सिंह बिष्ट ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा आम्रपाली विश्वविद्यालय ने विगत 26 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। नवागंतुक विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपने सपनों को पूर्ण निष्ठा के साथ पूरा करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें। मुख्य अतिथि विधायक बंशीधर भगत ने कहा युवा शक्ति में जोश, उत्साह और ऊर्जा होती है। आम्रपाली विश्वविद्यालय ने हल्द्वानी क्षेत्र में शिक्षा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे न केवल अपनी शिक्षा में बल्कि समाज के प्रति भी उत्तरदायित्व निभाएं। कार्यक्रम में शास्त्रीय नृत्य, कुमाऊंनी नृत्य, बॉलीवुड डांस और भांगड़ा जैसे रंगा. रंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। नवागंतुक विद्यार्थियों में से प्रतिभा वेशभूषा, रैंप वॉक एंव प्रश्नोत्तर के माध्यम से विश्वविद्यालय के मिस्टर एवं मिस फ्रेशर चुने गये। मिस फ्रेशर वंशिका वारियाल एंव मिस्टर फ्रेशर करन चौधरी को, मिस बैस्ट टैलेंट गरिमा गुठोलिया, मिस्टर बैस्ट टैलेंट मनीष टाकुली को चुना गया। मिस बैस्ट पर्सनॉलिटी सौम्या एंव मिस्टर बैस्ट पर्सनॉलिटी तपन बिष्ट ने जीता। मिस बैस्ट ऐटायर पर प्रिया मिश्रा एंव मिस्टर बैस्ट ऐटायर पर शुभम कुमार ने अपना दवा पेश किया। गायन एवं वादन प्रस्तुतियों ने भी माहौल को संगीतमय बना दिया, जिससे पूरे परिसर में उत्सव जैसा वातावरण बना रहा। कार्यक्रम में समन्वयक एवं परीक्षा नियंत्रक प्रो. डा. एमके पाण्डेय, भगवान सहाय, सुरेश भट्ट, हेमंत बगड़वाल, जसवंत सिंह जस्सा, नरेन्द्र सिंह, कुलसचिव डा. अमनजीत सेठी, प्रतिकुलपति प्रो. डा. एसके सिंह सहित बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय प्रशासन, शिक्षकगण एवं छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

'हक देने को तैयार नहीं सरकार'

शाह टाइम्स ब्यूरो

हल्द्वानी। बागजाला को मालिकाना अधिकार देने, निर्माण कार्यों पर लगी रोक हटाने, पंचायत चुनाव के अधिकार को बहाल करने, विकास कार्य शुरू करने, पेयजल योजना चालू करने समेत आठ सूत्रीय मांगों पर अनिश्चितकालीन धरना रविवार 56वें दिन भी जारी रहा। धरने को संबोधित करते हुए भाकपा माले के जिला सचिव डा. कैलाश पाण्डेय ने कहा कि भाजपा सरकार गरीबों को आवास का हक और अधिकार देने को तैयार नहीं है। आवास का अधिकार देना तो दूर रहा बागजाला से लेकर जवाहरनगर हल्द्वानी तक नोटिसों के द्वारा गरीबों को डराने का काम किया जा रहा है। धरना प्रदर्शनल में विमला देवी, वेद प्रकाश, हेमा देवी, खीम राम आर्य, हरक सिंह बिष्ट, हरीश, वन्दना, गणेशराम, भोला सिंह, मीना भट्ट, संजय, परवेज, हेमा आर्य, गोपाल सिंह बिष्ट, हरि गिरी, दौलत सिंह, दीवान राम, सतपाल, नंदी देवी, रेखा देवी, पार्वती देवी, दीवान राम, सुनीता, ललित प्रसाद, शांति देवी, शोभा, दिव्या आर्य, मन्नू देवी, देवकी देवी, गीता, सलमा, बैजंती देवी, सोहन लाल, दुर्गा देवी, रमेश चन्द्र मौजूद रहे।

शाह टाइम्स

स्वामी शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक एस.एन. राना द्वारा शाह पब्लिकेशन प्रा. लि. सुजडू चुंगी, मेरठ रोड, मुजफ्फरनगर से मुद्रित एवं 63/9 ई-राजपुर रोड देहरादून से प्रकाशित।

सम्पादक:
एस.एन. राना
*कार्यकारी सम्पादक
आनन्द बत्रा 'सुमन'
स्थानीय सम्पादक
चेतन गुरूंग

देहरादून कार्यालय 63/9 ई-राजपुर रोड देहरादून
☎0135-2743363
R.N.I. No.UTT HIN 2001/05656
मोबाइल-9720007290
www.shahtimesnews.com
email:shahtimes2015@gmail.com

*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु PRB एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद मुजफ्फरनगर न्यायालय के अधीन ही होंगे।

दिल्ली टेस्टः वेस्टइंडीज का फाइटबैक

● तीसरे दिन का स्कोर 173/2, भारत से 97 रन पीछे, कैम्पबेल शतक के करीब, पहली पारी 248 पर सिमटी

नई दिल्ली, वार्ता। जॉन कैंपबेल (नाबाद 87) और कप्तान शाई होप (नाबाद 66) अर्द्धशतकीय पारियों की मदद से वेस्टइंडीज ने दूसरे टेस्ट मैच के तीसरे दिन रविवार को स्टंप के समय दो विकेट पर 173 रन बना लिए है। हालांकि वह अभी भी भारत के पहली पारी में बनाए गए स्कोर से 97 रन पीछे है। इससे पहले कुलदीप यादव (पांच विकेट) रवींद्र जडेजा (तीन विकेट) की घातक गेंदबा. जी के दम पर भारत ने वेस्टइंडीज को 248 रन के स्कोर पर ढ़ेर कर 270 रनों की बढ़त के साथ उसे फॉलोऑन दिया हैं। दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज को 17 के स्कोर पर मोहम्मद सिराज ने तेजनारायण चंद्रपॉल (10) को आउटकर भारत को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद 15वें ओवर की तीसरी गेंद पर वॉशिंगटन सुंदर ने ऐलेक ऐथनेज (सात) को बोल्ड कर भारत की झोली में दूसरा विकेट डाल दिया। चायकाल तक वेस्टइंडीज ने दो विकेट के नुकसान पर 35 रन बना लिए थे। चायकाल के बाद बल्लेबाजी करने आए कप्तान शाई होप ने जॉन कैंपबेल के साथ पारी को संभाला तथा तेजी के साथ रन भी बटोरे। दिन का खेल समाप्त होने के समय अपने-अपने अर्द्धशतक पूरे कर बड़े स्कोर की नींव रख दी। वेस्टइंडीज ने 49 ओवर में दो विकेट पर 173 रन बना लिए है। जॉन कैंपबेल (नाबाद87) और शाई होप (नाबाद 66) क्रीज पर मौजूद थे। भारत की ओर दूसरी पारी में मोहम्मद सिराज और वॉशिंगटन सुदंर ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले वेस्टइंडीज ने कल के चार विकेट पर 140 रनों से आगे खेलना शुरु किया। आज सुबह के सत्र में वेस्टइंडीज ने कप्तान शाई होप (36) का विकेट मात्र 16 रन जोड़कर गंवा दिया। उन्हें कुलदीप यादव ने बोल्ड आउट किया। इसके बाद टेविन इमलाक (21) और जस्टिन ग्रीव्स (17) को भी कुलदीप ने अपना शिकार बनाया। जोमेल वारिकन (एक) को मोहम्मद सिराज ने बोल्ड आउट किया। इसके बाद खारी पिएर और एंडरसन ने पारी को संभाला। वेस्टइंडीज ने लंच तक आठ विकेट पर 217 रन बना लिए थे और दोनों बल्लेबाजों के बीच लंच तक नौवें विकेट के लिए 42 रनों की साझेदारी हुई थी। लंच के बाद बल्लेबाजी करने उतरी विंडीज को बुमराह ने पियर (23) को आउटकर भारत को नौवीं सफलता दिलाई।

मंधाना ने पूरे किए 5000 वनडे रन

विशाखापत्तनम, वार्ता। भारतीय महिला टीम की उपकप्तान और स्टार बल्लेबाज स्मृति मंधाना रविवार को आस्ट्रेलिया के खिलाफ धमाकेदार प्रदर्शन किया। उन्होंने 80 रनों की शानदार पारी खेलकर रिर्काड्र्स की झड़ी लगा दी। बाएं हाथ की बल्लेबाज ने वनडे में 5000 रन पूरे कर लिए और दुनिया में पांचवीं व भारत के लिए ऐसा करने वाली दूसरी बल्लेबाज बन गईं।

बता दें कि, भारत और आस्ट्रेलिया के बीच महिला विश्व कप का 13वां मुकाबला विशाखापत्तनम में खेला जा रहा है। इस मैच में आस्ट्रेलिया की कप्तान एलिसा हीली ने टास जीतकर मेजबानों को पहले बल्लेबाजी का न्योता दिया है। आस्ट्रेलिया के खिलाफ मुक. ाबले में प्रतिका रावल और स्मृति मंधाना ने भारत को दमदार शुरुआत दिलाई। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 155 रनों की साझेदारी हुई। इस दौरान मंधाना ने 46 और प्रतिका ने 69 गेंदों में अर्द्धशतक पूरे किए।

संक्षिप्त खेल समाचार

अभिषेक पाल और सीमा भारतीयों में विजेता बने

नई दिल्ली, वार्ता। अभिषेक पाल ने रविवार को वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन में तीसरी बार जीत हासिल की, जबकि सीमा ने अपने पहले ही मुकाबले में प्रभावित किया। इंडियन एलीट प्रतियोगिता में अनुभव और उभरती प्रतिभा का प्रदर्शन हुआ, जहां अभिषेक पाल और सीमा ने 4,00,000 रुपये का नकद पुरस्कार जीतकर शीर्ष स्थान हासिल किया। पाल ने पुरुषों की दौड़ में 1:04:17 का समय लेकर जीत हासिल की, जबकि सीमा ने महिलाओं के वर्ग में 1:11:23 का समय लेकर आसानी से जीत हासिल की। यह जीत अभिषेक की दिल्ली हाफ मैराथन में तीसरी जीत थी, जबकि सीमा ने अपने पदार्पण में ही दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित हाफ मैराथन में से एक पर तुरंत प्रभाव डालते हुए प्रभावित किया।

मटाटा व रेंगरुक ने वेंदाता हाफ मैराथन में जीते खिताब

नई दिल्ली, वार्ता। अनुभवी केन्याई धावकों एलेक्स न्ज़िओका मटाटा और लिलियन कासैट रेंगरुक ने आज यहां विश्व एथलेटिक्स गोल्ड लेबल रोड रेस, वेदांता दिल्ली हाफ मैराथन के 20वें संस्करण में उल्लेखनीय केन्याई जीत दर्ज करने के लिए अलग-अलग रणनीतियां अपनाईं। इस आयोजन के इतिहास में यह केवल दूसरी बार था जब केन्याई धावकों ने एक ही संस्करण में पुरुष और महिला दोनों वर्ग के खिताब जीते। फ्रांसिस किबिवोट और लिनेथ चेपकुरुई 2006 में ऐसा सम्मान हासिल करने वाले पहले धावक थे। पिछले साल युगांडा के जोशुआ चेप्टेगी के बाद उपविजेता रहे मटाटा ने अन्य धावकों से अलग होकर एकल दौड़ में भाग लिया। इस साल की शुरुआत में आरएके हाफ-मैराथन में 59:20 के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय के साथ जीत हासिल की।

क्रिकेट के मैदान में एक और क्रिकेटर की मौत

शाह टाइम्स ब्यूरो

मुरादाबाद। यूपी के मुरादाबाद स्थित बिलारी में क्रिकेट मैदान पर खेलते-खेलते एक सीनियर खिलाड़ी की जिंदगी थम गई। रविवार को चल रहे वेटरन क्रिकेट मैच के दौरान 50 वर्षीय अहमर खां की गेंदबा. जी करते वक्त हार्ट फेल होने से मौत हो गई।

अहमर मुरादाबाद के एकता विहार कालोनी के रहने वाले थे। साथी खिलाड़ियों के अनुसार अहमर अपनी टीम की ओर से गेंदबाजी कर रहे थे तभी अचानक मैदान पर गिर पड़े। साथी खिलाड़ियों ने तुरंत उन्हें संभाला और अस्पताल पहुंचाया लेकिन डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। इस खबर के फैलते ही खेल प्रेमियों में शोक की लहर दौड़ गई। अहमर खां लंबे समय तक दिल्ली के सुहानी क्लब और उत्तर प्रदेश की क्रिकेट टीम से खेल चुके थे। वे राज्य स्तर पर सीनियर क्रिकेटर के रूप में जाने जाते थे और कई मौकों पर मशहूर स्पिनर पीयूष चावला के साथ भी मैदान साझा कर चुके थे। उनके निधन पर खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों ने गहरा दुख जताया है।

अहमर खां अपने पीछे दो बच्चों और पत्नी को छोड़ गए हैं। आखिरी ओवर में संभल को जीत के लिए 18 रन चाहिए थे। अहमर ने आखिरी ओवर फेंकते हुए महज पांच रन दिए और मुरादाबाद की टीम को 13 रन से जीत दिलाई। टीम के सभी खिलाड़ी जीत की खुशी मना रहे थे इसी दौरान अहमर जमीन पर गिर पड़े। इससे पहले की लोग कुछ समझ पाते उनकी मैदान पर ही जान चली गई। मौके पर मौजूद लोग अस्पताल लेकर पहुंचे लेकिन तब तक अहमर की मौत हो चुकी थी।

चचेरे भाई वाचेरोट और रिंडरकनेच फाइनल मुकाबले के लिए तैयार

शंघाई, वार्ता। एटीपी रैंकिंग में 204वें स्थान पर काबिज मोनाको के वैलेंटिन वाचेरोट ने शनिवार को सर्बियाई टेनिस दिग्गज नोवाक जोकोविच को 6-3, 6-4 से हराकर 2025 शंघाई मास्टर्स के फाइनल में प्रवेश किया। इस जीत के साथ, वाचेरोट मास्टर्स 1000 एकल फाइनल में पहुंचने वाले पहले मोनेगास्क खिलाड़ी और पुरुष एकल में शीर्ष-10 खिलाड़ी को हराने वाले पहले खिलाड़ी बन गए। वाचेरोट ने कहा कि मुझे समझ नहीं आ रहा है कि क्या हुआ है, इसलिए मैं इस पर कुछ नहीं कह सकता।यह वाकई अद्भुत है। सबसे पहले, कोर्ट के दूसरी तरफ (जोकोविच से) होना एक अविश्वसनीय अनुभव था। मुझे लगता है कि मुझे इस मैच से, उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला है।

कुलदीप यादव अब शीर्ष बाएं हाथ के कलाई के स्पिनरों के क्लब में शामिल

● सिर्फ 15 टेस्ट मैचों में कुलदीप 5 बार 5 विकेट ले चुके हैं, जो दिग्गज जॉनी वार्डल के रिकॉर्ड की बराबरी कर लेते हैं

नई दिल्ली, वार्ता। कुलद. ीप यादव जब मैदान पर उतरते हैं, तो बल्लेबाजों के लिए मुस. ीबतें दूर नहीं होतीं। आज, भारत के बाएं हाथ के कलाई के जाद. ूगर ने दिल्ली टेस्ट के तीसरे दिन अरुण जेटली क्रिकेट स्टेडियम में वेस्टइंडीज को स्तब्ध करते हुए, एक शानदार प्रदर्शन किया। सिर्फ़ 15 टेस्ट मैचों में, कुलदीप पांच बार पांच विकेट ले चुके हैं, जो दिग्गज जॉनी वार्डल के रिकॉर्ड की बराबरी कर लेते हैं, हालांकि वार्डल ने यह कारनामा 28 मैचों में किया था। अब उनके साथ खेलने वाले खिलाड़ी शीर्ष पर हैं, और कुलदीप इसे सम्मान की तरह मानते हैं। निर्णायक क्षण शानदार अंदाज में आया जब जेडन सील्स एलबीडब्ल्यू आउट हो गए। कुलदीप की चतुराई से छिपाई गई गुगली, बल्ले के पास से फिसली, पैड से टकराई और स्टंप्स को चकनाचूर कर गई। सील्स ने रिव्यू लिया, लेकिन रीप्ले से कोई शक नहीं रहा कि वह आउट हो गए। सटीक। निर्दयी। विशुद्ध कलाकारी। उस विकेट ने कुलदीप के पांच विकेट पूरे कर दिए और हर बल्लेबाज को एक कड़ी चेता. वनी दे दी: उनका सामना करना एक ऐसी जंग है जिसे आप हल्के में नहीं ले सकते। सभी फॉर्मेट में, कुलदीप तूफ़ान की तरह हैं। चार टेस्ट मैचों में, उन्होंने 33.8 के स्ट्राइक रेट से 19 विकेट लिए हैं(19 वनडे मैचों में, 27.3 के स्ट्राइक रेट से 33 विकेट(और टी20 में, नौ मैचों में 12.7 के स्ट्राइक रेट से 17 विकेट। यह किस्मत नहीं है-यह महारत है, कलात्मकता है, इसका पूरा पैकेज है। वेस्टइंडीज ने कोशिश की, उन्होंने सचमुच कोशिश की, लेकिन कुलदीप ने उन्हें हर गेंद पर अंदाज़ा लगाने पर मजबूर कर दिया। फ्लाइट, टर्न, छकाना, सब कुछ उनके पास था। स्टेडियम में तालियां बजीं, टीम ने तालियां बजाईं, और कुलदीप ऐसे चले गए जैसे उन्होंने अभी-अभी यह बयान दिया हो: मैं यहां हूं। मैं घातक हूं। और मैं महान खिलाड़ियों में से एक हूं। टेस्ट में अब भारत का पलड़ा भारी है, और कुलदीप का यह स्पेल उन प्रदर्शनों में से एक के रूप में याद किया जाएगा।

नामीबिया ने दक्षिण अफ्रीका को हराया

● नामीबिया ने खेले गए एकमात्र टी-20 मैच में दक्षिण अफ्रीका पर आखिरी गेंद में रोमांचक जीत हासिल की

विंडहोक, वार्ता। रूबेन ट्रम्पेलमैन के हरफनमौला प्रदर्शन (3/28 और 8 गेंदों में 11 रन) और ज़ेन ग्रीन के 23 गेंदों में नाबाद 30 रनों की संयमित पारी की बदौलत, नामीबिया ने शनिवार को विंडहोक में खेले गए एकमात्र टी20 मैच में दक्षिण अफ्रीका पर आखिरी गेंद पर रोमांचक जीत हासिल की। जीत के लिए 135 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए, ग्रीन ने सिमेलाने की आखिरी गेंद पर लो फुलटॉस को स्वीप कर नामीबिया को चार विकेट से जीत दिलाई। 2022 विश्व कप में एडिलेड में नीदरलैंड से हारने के बाद, यह दूसरी बार था जब दक्षिण अफ्रीका किसी एसोसिएट देश से टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में हारा है। पहले बल्लेबाजी करते हुए, दक्षिण अफ्रीका ने पारी की शुरुआत में ही क्विंटन डी कॉक और रीज़ा हेंड्रिक्स के विकेट गंवा दिए। हालांकि, लुआ-ड्रे प्रीटोरियस और रुबिन हरमन ने उस पिच पर पारी को संभाला जहां रन बनाना आसान नहीं था। दोनों ने 30 रन जोड़े, इससे पहले कि ट्रम्पेलमैन ने डीप स्क्वायर लेग पर एक बेहतरीन डाइविंग कैच लपका। जल्दी-जल्दी कुछ और विकेट गिरने से 11वें ओवर में दक्षिण अफ्रीका का स्कोर 5 विकेट पर 68 रन हो गया। जेसन स्मिथ ने निचले क्रम के साथ मिलकर स्कोरिंग गति को बढ़ाया, लेकिन थोड़ी पकड़ और उछाल वाली पिच पर बाउंड्री लगाना मुश्किल था। इसके अलावा, नामीबियाई खिलाड़ियों ने भी अपना अनुशासन बनाए रखा। ब्योर्न फोर्टुइन और गेराल्ड कोएत्ज़ी ने अंत में उपयोगी योगदान देकर दक्षिण अफ्रीका को 130 रनों के पार पहुंचाया, लेकिन अंत में यह पर्याप्त साबित नहीं हुआ। नामीबियाई बल्लेबाजों को भी रन बनाने में थोड़ी परेशानी हुई, लेकिन दक्षिण अफ्रीकी तेज गेंदबाजों, खासकर गेराल्ड कोएत्ज़ी की अनियमित लाइन-अप ने उनकी मदद की, जो अपने दूसरे ओवर की चार गेंदें डालने के बाद कुछ लचता के साथ मैदान से बाहर चले गए। नामीबिया के शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों को रन बनाने में संघर्ष करना पड़ा, लेकिन जब तक दक्षिण अफ्रीका ने अपने पहले तीन विकेट लिए, तब तक नामीबिया ने केवल सात ओवरों में 51 रन बना लिए थे। गेरहार्ड इरास्मस, जेजे स्मिट और जेसन क्रूगर ने बीच के ओवरों में जरूरी मजबूती प्रदान की ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि दक्षिण अफ्रीका को बढ़त न मिले। हालांकि, अंतिम तीन ओवरों में 28 रनों की जरूरत के साथ, नामीबिया के लिए चुनौती अभी भी कठिन थी। ग्रीन और ट्रम्पेलमैन ने एक-एक चौका लगाकर अंतिम ओवर में लक्ष्य 11 रनों तक पहुंचाया।

रवींद्र जडेजा को अब भी 2027 वनडे विश्व कप खेलने की उम्मीद

नई दिल्ली, वार्ता। भारत के शीर्ष ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने हाल ही में ऑस्ट्रेलियाई दौरे के लिए टीम में जगह न मिलने के बावजूद 50 ओवरों का विश्व कप जीतने के अपने सपने को नहीं छोड़ा है। दिल्ली में वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच के दूसरे दिन के खेल के समापन पर बोलते हुए, जडेजा ने यह भी पुष्टि की कि चयनकर्ता और नए कप्तान शुभमन गिल ने टीम की घोषणा से पहले ही उन्हें टीम में शामिल न करने के बारे में सूचित कर दिया था। मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर ने कहा कि वे ऑस्ट्रेलिया में एक श्रृंखला के लिए दो बाएं हाथ के स्पिनरों को शामिल नहीं कर सकते और जडेजा ने इसे स्वीकार किया। जडेजा ने अपने वनडे भविष्य पर कहा कि देखिए, यह मेरे हाथ में नहीं है।

मैं खेलना चाहता हूं, लेकिन आखिरकार, टीम प्रबंधन, चयनकर्ता, कोच, कप्तान सोच रहे होंगे कि मैं इस सीरीज में क्यों नहीं हूं। इसके पीछे कोई न कोई वजह जरूर होगी। और उन्होंने मुझसे बात की। ऐसा नहीं है कि जब टीम की घोषणा हुई तो उन्होंने मुझे चौंका दिया कि मैं उसमें नहीं हूं। यह अच्छी बात है कि कप्तान, चयनकर्ता, कोच ने मुझसे बात की और इसके पीछे कोई न कोई वजह जरूर है। पिछले विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आखिरी पड़ाव पर पिछड़ने वाली टीम का हिस्सा रहे जडेजा, जो 2027 में होने वाले टूर्नामेंट के दौरान लगभग 39 साल के हो जाएंगे, को उम्मीद है कि आखिरकार उन्हें ट्रॉफी मिल ही जाएगी। उन्होंने कहा कि जब भी मुझे मौका मिलेगा, मैं वही करने की कोशिश करूंगा जो मैं इतने सालों से करता आ रहा हूं।और विश्व कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में, अगर मुझे मौका मिलता है, तो उससे पहले कई वनडे मैच खेलने हैं।

● रवींद्र जडेजा ने हाल ही में ऑस्ट्रेलियाई दौरे के लिए टीम में जगह न मिलने के बावजूद 50 ओवरों का विश्व जीतने के अपने सपने को नहीं छोड़ा

अफगानिस्तान ने बांग्लादेश को 81 रनों से हराया

● इब्राहिम जादरान ने 95 रनों की बेहतरीन पारी खेली, कप्तान राशिद खान ने पांच विकेट और ओमरजेई ने तीन विकेट लिए

अबू धाबी, वार्ता। इब्राहिम जदरान (95) की बेहतरीन पारी के बाद कप्तान राशिद खान (पांच विकेट) और अजमतउल्लाह ओमरजई (तीन विकेट) की घातक गेंदबाजी के दम पर अफगानिस्तान ने बांग्लादेश को दूसरे एकदिवसीय मुकाबले में 81 रनों से हरा दिया है। इसी के साथ अफगानिस्तान ने तीन मैचों की सीरीज में 2-0 से अजेय बढ़त बना ली हैं। 190 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश को ओमरजई और राशिद खान के कहर का सामना करना पड़ा। अफगानिस्तान के गेंदबाजी आक्रमण के आगे बांग्लादेश की पारी टीम 28-3 ओवरों में 109 के स्कोर पर ढ़ेर हो गई। अफगानिस्तान ने 81 रनों से यह मुकाबला जीत लिया। मो-तौहीद हृदोय ने बांग्लादेश के लिए सर्वाधिक 24 रन बनाए। इसके आलवा सैफ हसन (22), जाकेर अली (18) और नरुल हसन (15) दहाई आंकड़े वाले बल्लेबाज रहे। अफगानिस्तान के इब्राहिम जदरान को उनकी 95 रनों की शानदार पारी के लिए 'प्लेयर ऑफ द मैच' से नवाजा गया। अफगानिस्तान के लिए राशिद खान ने पांच विकेट लिए। अजमतउल्लाह ओमरजई को तीन विकेट मिले। नांगेलिया खरोटे ने एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले अफगानिस्तान ने शनिवार रात खेले गए मुकाबले में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी अफगानिस्तान को बांग्लादेश के गेंदबाजों ने 44.5 ओवरों में 190 के स्कोर पर समेट दिया। इब्राहिम जदरान ने अफगानिस्तान के लिए 95 रनों की महत्वपूर्ण पारी खेली। उन्होंने अपनी इस धैर्यपूर्ण पारी 140 गेंदों का सामना किया तथा तीन चौके और एक छक्का भी लगाया। मोहम्मद नबी (22), एएम गजनफर (22), नांगेलिया खरोटे (13) और रहमान उल्लाह गुरबाज (11) दहाई आंकड़े वाले बल्लेबाजों में शामिल रहे। बांग्लादेश के लिए मेंहदी हसन मिराज ने तीन विकेट लिए।

पेगुला ने सबालेंका को हराया

● फाइनल में पेगुला का सामना हमवतन कोको गॉफ से होगा जिन्होंने पहले सेमीफाइनल में इटली की जैस्मिन को हराया था

वुहान, वार्ता। जेसिका पेग. ुला ने एक सेट से पिछड़ने के बाद संघर्ष किया और कई मैच पॉइंट बचाकर शनिवार को शीर्ष वरीयता प्राप्त आर्यना सबालेंका को 2-6, 6-4, 7-6(2) से हराकर वुहान ओपन के फ़ाइनल में प्रवेश किया और बेलारूसी खिलाड़ी के टूर्नामेंट में 20 मैचों के जीत के सिलसिले को भी तोड़ दिया।

रविवार के फ़ाइनल में, पेग. ुला का सामना हमवतन कोको गॉफ से होगा, जिन्होंने पहले सेमीफाइनल में इटली की जैस्मीन पाओलिनी को 6-4, 6-3 से आसानी से हराया था। सबालेंका शुरुआत में पूरी तरह से नियंत्रण में दिखीं और उन्होंने अपनी विशिष्ट बेसलाइन आक्रामकता से पेगुला को परास्त कर पहला सेट 6-2 से जीत लिया। पेगुला ने दूसरे सेट में फिर से वापसी की और निर्णायक मौके पर ब्रेक लेकर मैच बराबरी पर ला दिया। निर्णायक सेट सबालेंका के पक्ष में जाता दिख रहा था जब उसने 5-2 की बढ़त बना ली, लेकिन पेगुला ने शानदार वापसी की और लगातार चार गेम जीतकर 6-5 से आगे हो गई। सबालेंका ने टाईब्रेकर करवाया, लेकिन पेगुला ने 7-2 से जीत हासिल कर ली और दो घंटे से ज़्यादा चले कड़े मुकाबले के बाद जीत पक्की कर ली।

पेगुला ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि मुझे अपने राज़ बताना पसंद नहीं। लेकिन मैं लगातार उसके पैटर्न के बारे में सोचती रहती हूं - बड़े पॉइंट्स पर उसे क्या करना पसंद है, वह कहां सर्विस करना चाहती है, कब वह दिशा बदलने की कोशिश करती है। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं कोर्ट से बाहर हूं, मुझे पता है कि उसे कहां स्लाइस या ड्रॉप शॉट लगाना पसंद है।

लक्सर पुलिस ने तीन नशा तस्कर दबोचे

अलग-अलग जगह से भारी मात्रा में प्रतिबंधित कैप्सूल बरामद

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। लक्सर पुलिस ने नशा तस्करों के खिलाफ अभियान चलाकर तीन लोगों को गिरफ्तार कर उनकी निशानदेही पर भारी मात्रा में नशीले कैप्सूल बरामद किया है। आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस में मामला दर्ज कर जेल भेज दिया गया है।

पुलिस द्वारा नशा तस्करों के खिलाफ छापेमारी करते हुए एक नशा तस्कर को गिरफ्तार किया है उसके कब्जे से 270 अवैध नशीले टैबलेट बरामद हुए हैं राजीव रौथान कोतवाली प्रभारी लक्सर ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस टीम गठित की गई। चेकिंग के दौरान एक नशा तस्कर को गिरफ्तार किया गया उसके कब्जे से 285 अवैध नशीले कैप्सूल बरामद हुए पूछताछ करने पर उस व्यक्ति ने अपना नाम साजिद अली पुत्र शौकीन निवासी मोहम्मदपुर कुन्हारी थाना लक्सर बताया उसको पकड़ने वाली पुलिस टीम में रायसी पुलिस चौकी प्रभारी नीरज रावत कांस्टेबल महेंद्र सिंह राजेंद्र सिंह शामिल रहे पकड़े गए व्यक्ति के खिलाफ संबंधित मुकदमा दर्ज कर न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

वहीं दूसरी टीम ने भी युवाओं की नसों में जहर घोलने वाले दो नशा तस्करों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है जो मेडिकल की आड़ में नशीले कैप्सूल बेच रहे थे पुलिस टीम के द्वारा मुखबिर की सूचना पर चेकिंग के दौरान एक मेडिकल संचालक को अवैध नशीले कैप्सूल के साथ गिरफ्तार किया गया जो मेडिकल स्टोर की आड़ में कैप्सूल की तस्करी करता था जानकारी व पूछताछ करने पर अभियुक्त मेडिकल स्टोर की आड़ में नशीली दवाई का कारोबार कर रहे लोगों को नशीले कैप्सूल की सप्लाई करता था दोनों अभियुक्तगणों को गिरफ्तार कर लिया गया पूछताछ करने पर उन्होंने अपने नाम समीर अली पुत्र यूनुस निवासी दौड़वसी नसीरपुर कला थाना पथरी उम्र 24 वर्ष आरिफ पुत्र नूर अली निवासी हाजी अली मस्जिद के पास सुल्तानपुर उम्र 25 वर्ष बताया उनको पकड़ने वाली पुलिस टीम में भीकमपुर पुलिस चौकी प्रभारी वीरेंद्र सिंह नेगी कांस्टेबल वीरेंद्र दिगंबर शामिल रहे।

बोगी से टकराए दो बाइक सवार गंभीर, हायर सेंटर भर्ती

शाह टाइम्स संवाददाता

झबरेड़ा। तेज रफ्तार मोटरसाइकिल सवार दो युवक गन्ने की बोगी में टकराने से गंभीर घायल हो गए घायलों को उपचार के लिए स्थानीय डॉक्टर ने हायर सेंटर रेफर कर दिया। लोगों ने घायल लोगों के परिजनों का नाम पता पूछ कर उनको सूचना दी।

जानकारी के अनुसार तेज रफ्तार मोटरसाइकिल सवार दो युवक गन्ने की बोगी में टकराने से गंभीर घायल हो गए। रविवार को लखनौता देवबंद मार्ग पर गोकुलपुर बॉर्डर के समीप गन्ने की बोगी से टकराने से एक सड़क दुर्घटना हो गई मोटरसाइकिल पर सवार गांव राजुपुर निवासी जिशान व तालिब मोटरसाइकिल पर सवार होकर मंगलौर की ओर जा रहे थे मोटरसाइकिल समारोह के सामने एक गन्ने की ट्रैक्टर बोगी जा रही थी मोटरसाइकिल की रफ्तार इतनी तेज थी कि वह मोटरसाइकिल को संभाल नहीं पाए और गन्ने की बोगी से टकरा गए जिसे मोटरसाइकिल सवार दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गए स्थानीय लोगों ने दोनों घायलों को एक स्थानीय डॉक्टर को दिखाया डॉक्टर ने दोनों को गंभीर घायल बताते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया तभी लोगों ने घायल लोगों के परिजनों का नाम पता पूछ कर उनको सूचना दी। मौके पर पहुंचे परिजन दोनों घायलों को हायर सेंटर ले गए।

करतार सिंह भड़ाना ने भाजपा कार्यकर्ताओं से बूथ की मजबूती को लेकर की चर्चा

शाह टाइम्स संवाददाता

मंगलौर। मंगलौर विधानसभा के मंडावली स्थित कार्यालय हरियाणा के पूर्व केबेनेट मंत्री करतार सिंह भड़ाना ने रविवार को खेड़ा जट के ग्रमीणों के साथ एक मीटिंग कर अपने अपने क्षेत्रों के बूथों को मजबूत करने का आह्वान किया। जिससे साफ तौर जाहिर हो चुका है कि करतार सिंह भड़ाना 2027 के चुनाव को लेकर अभी से करने में जुट गए है।

पूर्व केबिनेट मंत्री करतार सिंह भड़ाना ने बताया कि उन्हें मंगलौर विधानसभा के लोगों से बहुत पहले से प्रेम रहा है और वह इन लोगों के दिलों से जुड़े हुए है और समय समय पर वह यहाँ के लोगों के पास आते रहते है। क्योंकि उन्हें इनका स्नहे हुआ है और आने वाले 2027 में अगर भाजपा उन्हें मौका देती है तो वह चुनाव लड़ेंगे और जितेंगे भी।

उत्तराखंड की सबसे बड़ी मंगलौर गुड़ मंडी के बिगड़े हालात

शाह टाइम संवाददाता

मंगलौर। उत्तराखंड की नम्बर वन के नाम से जाने जानी वाली कृषि उत्पादन मंडी सिमिति यानि मंगलौर गुड़ मंडी अब सुनसान नजर आने लगी है जिसके साथ मंडी में व्यापार करने वाले व्यापारियों की हालत भी खराब होने लगी है प्रशासन और सरकार से कई बार गुहार लगाने के बाद अब गुड़ व्यापारी लाचार नजर आ रहे

रविवार को मंगलौर स्थित गुड मंडी मेंगुड़ व्यापारियों द्वारा एक प्रेस वार्ता की गई जहां पर गुड़ व्यापारी सचिन मदान ने पत्रकारों को जानकारी देते हुए बताया कि हरिद्वार जिले में लगभग 500 कोल्हू है जहाँ पर गुड़ बनाया जाता है पर अब हालात यह हो चुके है कि मात्र 60 ही कोलुहो का गुड़ मंडी तक पहुँच रहा है जिसके चलते उनके साथ साथ गुड़ मंडी में काम करने वाले मजदूरों को भी खर्चे के लाले पड़ने लगे है उन्होंने बताया हरियाणा पँजाब या अन्य जगहाँ से आने वाले व्यापारी गुड़ मंडी से माल ना खरीदकर खुद कोल्हुओं से डायरेक्ट माल खरीद रहे है जिसको लेकर सरकार को तो राजस्व का नुकसान हो रहा है और अब उनको भी आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। वही सुधीर बंसल ने बताया कि सभी व्यापारियों द्वारा कई बार रूडकी जॉइन्ट मजिस्ट्रेट को इस संबंध में ज्ञापन भी दिया गया है लेकिन आज तक कोई समस्या का समाधान नहीं हो पाया है वही मंडी सिमिति के कर्ममचारी खुद बाहर से आने वाले व्यापारियों के साथ मिलीभगत कर सरकार को भी लाखों रुपयों का चूना लगा रहे है।

30 लीटर अवैध शराब के साथ तीन तस्कर गिरफ्तार

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। पुलिस के द्वारा अवैध नशा बेचने वालों के खिलाफ छापेमारी करते हुए तीन नशा तस्करों को गिरफ्तार किया है उनके कब्जे से 30 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद हुई है। राजीव रौथाण कोतवाली प्रभारी लक्सर ने जानकारी देते हुए बताया एसएसपी हरिद्वार द्वारा आगामी पर्व को दृष्टिगत रखते हुए नशीले पदार्थों की अवैध तस्करी बिक्री पर प्रभावी अंकुश लगाये जाने के लिए पुलिस को निर्देशित किया था जिसमें पुलिस टीम गठित की गई गठित पुलिस टीम के द्वारा मुखबिर की सूचना पर छापेमारी करते हुए तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। जिनके नाम सुमित कुमार पुत्र पलटू निवासी ग्राम पीतपुर उम्र 30 वर्ष मांगेराम पुत्र राम सिंह निवासी ग्राम टांडा भागमल उम्र 47 वर्ष चमन पुत्र तुगल निवासी ग्राम लक्सर उम्र 55 वर्ष बताया। उनको पकड़ने वाली पुलिस टीम में हेड कांस्टेबल शूरवीर तोमर शमशेर खान कांस्टेबल रविंद्र चौहान देवेंद्र सिंह संजय पवार होमगार्ड महावीर सिंह शामिल रहे। पकड़े गए व्यक्तियों के खिलाफ संबंधित मुकदमा दर्ज कर न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

विधायक ने किया एनआईएच में दीपावली मेले का उद्घाटन

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। -बच्चों ने दी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति.

रुड़की। राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान में मनोरंजन क्लब का मेला संस्थान के प्रांगण में आयोजित किया गया। मेले का उध्द्घाटन मुख्य अतिथि विधायक प्रदीप बत्रा एवं संस्थान के निदेशक डॉ. वाईआरएस राव ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया।

राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान परिसर में आयोजित मेले में विभिन्न प्रकार के स्टॉल सजाए गए जिसमें लोगों ने जमकर खरीदारी की इसके साथ ही व्यंजनों का आनंद भी लिया। ब्लैक बॉडी बताने कहा कि इस प्रकार के मेले सामूहिक रूप से पर्व मनाने के लिए हमें बढ़ावा देते हैं और त्योहार के मजे को चार गुना कर देते हैं। संस्थान के निदेशक डॉ. वाईआरएस राव ने कहा कि अपने नियत कार्यों के अलावा संस्थान अपनी संस्कृति और परंपरा को बढ़ाने का कार्य करता है। दीपावली मेले में संस्थान कर्मियों के परिवार एवं अन्य शहरवासी मिलकर पर्व मनाते हैं और खुशियों को आपस में साझा करते हैं। प्रचार समिति सदस्य पवन कुमार ने बताया कि मेले में संस्थान के कार्यों के प्रस्तुतिकरण के साथ-साथ बच्चों के लिए फैंसी ड्रेस एवं डांस प्रतियोगिता, तंबोला, खाने-पीने की दुकान, लक्की ड्रा, झूला इत्यादि की दुकाने लगाई गई जिसमें सभी बढ़चढ़कर प्रतिभाग किया सभी बच्चों की प्रस्तुति ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।उध्द्घाटन समरोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में मुख्य प्रबन्धक भारतीय स्टेट बैंक अंशु श्रीवास्तव, निर्णायक मंडल में मनीषा बत्रा, वाई हराती, डा. सुहास खोब्रागडे आदि मौजूद रही। मनोरंजन क्लब के अध्यक्ष डॉ. सोबन सिंह रावत ने संस्थान के सभी परिवारों को मेले में बढ़-चढ़कर प्रतिभाग करने के लिए धन्यवाद किया। इस अवसर डॉ. ए. आर. सैन्थिल कुमार, डॉ. मनीष कुमार नेमा, डॉ. विनय त्यागी, कालजंग छोडेन, डॉ. अश्वनी रानाडे, डॉ. मुकेश शर्मा, डॉ. संतोष मुरलीधर पिंगले, प्रिया गगनेजा, चारू पाण्डेय, नीलम बोहरा, इफ्तखारुल हसन, प्रदीप कुमार, काजल पाल, महेन्द्र सिंह सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे।

शिक्षक राजेश को डॉक्टरेट की उपाधि से किया सम्मानित

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। वासुदेव लाल मैथिल सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज हरिद्वार रोड रुड़की में प्रधानाचार्य एवं राधा कृष्ण सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज बाजपुर उधम सिंह नगर के पूर्व शिक्षक राजेश कुमार सिंह को मैजिक एंड आर्ट विश्वविद्यालय फरीदाबाद की ओर से मानद डॉक्टरेट उपाधि से सम्मानित किया गया यह सम्मान फरीदाबाद स्थित कास्टल आफ आर्ट थियेटर, दशमेश प्लाजा में आयोजित समारोह में फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ सीपी यादव ने प्रदान किया यह सम्मान शिक्षा प्रबंधन समाज सेवा पर्यावरण और विगत 27 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में अनुकरणीय योगदान के लिए दिया गया है।

लंढौरा-नारसन रोड पर चलाया चेकिंग अभियान

ओवरलोडिंग के 33 ट्रैक्टर ट्राली के चलान, 10 सीज

शाह टाइम संवाददाता

मंगलौर। जिलाधिकारी के निर्देशों के क्रम में, आज इंटरसेप्टर हरिद्वार एवं इंटरसेप्टर रुड़की द्वारा नरसन व लंधौरा और हरिद्वार मार्ग पर एक प्रात:कालीन प्रवर्तन अभियान संचालित किया गया। जिसमें ट्रैक्टर-ट्रॉलियों पर विशेष रूप से फोकस किया गया। अभियान के दौरान कुल 33 चालान किए गए तथा 10 ट्रैक्टर-ट्रॉलियां सीज की गईं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार जिलाधिकारी के निर्देशों पर इंटरसेप्टर हरिद्वार एवं इंटरसेप्टर रुड़की द्वारा नरसन व लंधौरा मार्ग पर एक प्रवर्तन अभियान संचालित किया गया। यह उल्लेखनीय है कि चालू वित्तीय वर्ष में अब तक हरिद्वार एवम रुड़की के प्रवर्तन दलों द्वारा 250 से अधिक ट्रैक्टर-ट्रॉलियों के चालान किए जा चुके हैं, जो विभाग की सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने एवं ओवरलोडिंग तथा असुरक्षित परिवहन के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

शांति व्यवस्था भंग करने पर एक युवक को पकड़ा

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। सिविल लाइन पुलिस ने शांति व्यवस्था भंग करने पर एक युवक को गिरफ्तार किया है। जिसे न्यायालय में पेश किया जा रहा है।

राशिद पुत्र नासिर। ग्राम केलनपुर कोतवाली रुड़की जनपद हरिद्वार को वाहन चेकिंग के दौरान रोका गया जिसके द्वारा मोटरसाइकिल पर तीन सवारी बिठाकर चल रहा था जिसका पुलिस द्वारा अंतर्गत धारा 128.39.192.129.3/181.146.196.207 मोटर वाहन अधिनियम में चालान कर मोटरसाइकिल को सीज किया गया अभियुक्त के द्वारा चालन पर हस्ताक्षर करने से इनकार किया गया और धमकी देते हुए मोटरसाइकिल पर आग लगाने के लिए मोटरसाइकिल का पाइप खोलने लगा जिसे पुलिस द्वारा रोका गया परंतु अभियुक्त अत्यधिक उग्र होकर हंगामा करने लगा जिसे काफी समझाने का प्रयास किया गया परंतु नहीं माना शांति व्यवस्था कायम रखने हेतु कोई और चारा ना देख अभियुक्त को अंतर्गत धारा 170 में गिरफ्तार किया गया यदि इसे गिरफ्तार नहीं करते तो कोई संज्ञेय अपराध कारित कर सकता था। अभियुक्त को न्यायालय पेश किया जा रहा है।

खेलो में कैरियर बनाने की अपार संभावनाएंः सुबोध राकेश

शाह टाइम्स संवाददाता

भगवानपुर। भगवानपुर ब्लॉक की 25 वीं ब्लॉक स्तरीय विद्यालय एथलेटिक्स एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का समापन अचीवर्स स्पोर्ट्स अकैडमी करौंदी भगवानपुर में सादगीपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे उत्तराखंड के पूर्व राज्य मंत्री तथा वरिष्ठ भाजपा नेता सुबोध राकेश ने कहा कि आज खेलों में कैरियर बनाने की अपार संभावनाएं हैं। एक खिलाड़ी, खिलाड़ी के रूप में,खेल पत्रकार के रूप में,कमेंटेटर के रूप में तथा खेल विश्लेषक के रूप में अपना कैरियर बना सकता है। इस दौरान उन्होंने सभी अध्यापक और प्यारे बच्चों को बहुत-बहुत बधाई शुभकामनाएं दी।इस शुभ अवसर पर अचीवर्स अकैडमी करौंदी के मालिक राजकुमार सिंधु, संजू मेनवाल, दीपक चौधरी,व्यायाम शिक्षक अरुण मलिक,ओम सिंह विनीत सिंह,जतिन त्यागी, अमित सैनी,ओ पी सोनकर, मनीष सक्सेना, विपुल कुमार प्रदीप कुमार,भीम सिंह,सुधीर सैनी,नवीन सैनी,संजय पाल,नेत्रपाल,रजत बहुखंडी,पुष्पराज सिंह चौहान,रजनीश, धनंजय,सैयद त्यागी, महिला व्यायाम शिक्षक रीना देवी, संगीता, उजमा, कल्पना सैनी, शालिनी मनी, सुप्रिया गोड़,पारुल निधि, कु तनु,कु शहरीन, कु हिमांशी,कु पायल आदि उपस्थित रहे

रोटरी क्लब व आईआईटी ने संयुक्त रूप से चलाया सफाई अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। रोटरी क्लब मिडटाउन ने आईआईटी रूड़की और नगर निगम रूड़की के सहयोग से स्वच्छता और जागरूकता अभियान चलाया। सुबह चले इस अभियान की शुरुआत आंचल डेयरी से शुरू होकर आईआईटी मुख्य गेट और जामुन रोड को जोड़ने वाले क्रॉसिंग पर सम्पन्न हुई।

अभियान के दौरान सिर्फ गलियों की सफाई ही नहीं की गई, बल्कि जामुन रोड के निवासियों और आम जनता को प्लास्टिक के सही निपटान और घर में कचरा प्रबंधन के बारे में जागरूक किया गया। स्वयंसेवकों ने लोगों को अपने घर के आसपास सफाई रखने और कचरा अलग-अलग करने के फायदे समझाए। सभी प्रतिभागी एकजुट होकर, साफ-सुथरे और हरे-भरे मोहल्ले के लिए काम करते नजर आए। सभी के सामूहिक प्रयासों और उत्साह ने सेवा भावना को उजागर किया। इस अभियान में रोटरी रूड़की मिडटाउन के 20 से ज्यादा सदस्य,आईआईटी रूड़की के डॉ. एएस मौर्या व 18 छात्रो की उनकी टीम ने सक्रिय भागीदारी की। रोटरी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रवि प्रकाश और उनकी पत्नी शालिनी प्रकाश ने भी अभियान में भाग लेकर कार्यक्रम में भाग ले कर सबका मनोबल बढ़ाया।

प्रोजेक्ट चेयर समीक्षा जैन और कनिका गुप्ता के नेतृत्व में, क्लब अध्यक्ष डॉ. विकास त्यागी और क्लब सचिव अनुभव गुप्ता सहित शोरब जैन, ऋचा अहलावत, राजीव धम्मी, ऋतिका गुप्ता, सारिका सिंघल, सुधांशु गोयल, डॉ. सुधीर चौधरी, अक्षय प्रताप सिंह, विवेक कुमार गुप्ता, राजेश गुप्ता, हिमांशु पुंडीर, नेहा सिंह और डॉ. नवनीत शर्मा ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। रोटरी रूड़की मिडटाउन के सभी सदस्यों ने नारा दिया कि "आइए, हम सब मिलकर रूड़की को और स्वच्छ और सुंदर बनाएं।

पुलिस ने चलाया सत्यापन अभियान

शाह टाइम्स संवाददाता

लक्सर। बाहरी व्यक्तियों के विरुद्ध पुलिस ने सत्यापन अभियान चलाया है जिससे अवैध रूप से रह रहे लोगों में खलबली मच गई।

राजीव रौथाण कोतवाली प्रभारी लक्सर ने जानकारी देते हुए बताया एसएसपी हरिद्वार द्वारा थाना क्षेत्र में बिना सत्यापन के रह रहे किराएदारों पर बाहरी व्यक्तियों गुड चर्खियों के मालिको उसमें कार्य करने वाले संदिग्ध व्यक्तियों वाहनों की गहनता से चेकिंग कर प्रभावी कार्रवाई के लिए पुलिस को निर्देशित किया था जिनके अनुपालन में कोतवाली लक्सर पुलिस द्वारा टीम गठित की गई। गठित पुलिस टीम के द्वारा होटल ढाबा व गुड चरखी के मालिक को उसमें कार्य करने वाले बाहरी व्यक्तियों की चेकिंग की गई जिसमें कुल 105 व्यक्तियों का सत्यापन किया गया। मौके पर 15 चालान 81 पुलिस एक्ट नकद किए गए जिनसे 3750 रुपए संयोजन शुल्क वसूला गया।

एसो. ऑफ एलायंस ने मनाया दीपावली पर्व

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। एसोसिएशन ऑफ एलायंस क्लब इंटरनेशनल के द्वारा दीपावली महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्था के पदाधिकारी और सदस्यों ने कविताएं, गीत और चुटकुलों आदि की प्रस्तुति दी। इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के खेलों में भी प्रतिभाग किया।

देहरादून रोड स्थित एक होटल में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व अंतराष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश चंद्र ओरी और पूर्व गवर्नर नीलम ओरी ने कहा कि त्योहारों को मिलजुलकर मनाना हमारे देश की परंपरा रहा है,और क्लब इसी परम्परा को आगे बढ़ाने का काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि क्लब का प्रत्येक सदस्य इस प्रकार के कार्यक्रमों में आगे बढ़कर हिस्सेदारी करे और अपनी खुशियों को ऐसे ही सेलिब्रेट करें। अंतराष्ट्रीय निदेशक अरविंद गुप्ता एवं डिस्ट्रिक गवर्नर एली अनीता गुप्ता ने कहा कि क्लब समाजसेवा के साथ देश कि संस्कृति और परंपरा को बढ़ावा देने का काम कर रहा और आने वाली पीढ़ी को देश की संस्कृति से जोड़ने का प्रयास क्लब का है। इस अवसर पर क्लब के पदाधिकारियों और सदस्यों ने कविताएं,भजन, चुटकुलों आदि की प्रस्तुति देकर सभी को गुदगुदाया। इसके साथ ही कपल गेम,तंबोला,अंताक्षरी आदि खेलों में प्रतिभाग किया। कार्यक्रम का संचालन सुरभि ने किया। इस अवसर पर अध्यक्ष योगेश सिंघल,सचिव योगेश गोयल,कोषाध्यक्ष राजीव गोयल, अभिषेक चंद्रा, प्रवीण सिंधु,विशाल गोयल,विवेक गुप्ता,आकाश जैन, दलीप प्रधान,मनीषा सिंघल, गोविंद विकास अग्रवाल,नरेंद्र आहूजा,डॉक्टर रविंद्र कपूर,गोपाल गोयल,मनीषा अग्रवाल,पूनम चंद्रा,मनु गोयल,निधि गोयल,सोनिया आहूजा,मीनू प्रधान,नीरा गोयल,ऋतु अग्रवाल,शैलेन्द्र कुमार,प्रमोद गोयल आदि मौजूद रहे।

अवैध स्मैक के साथ एक नशा तस्कर दबोचा

शाह टाइम्स संवाददाता

रुड़की। सिविल लाइन कोतवाली पुलिस ने 4.87 ग्राम अवैध स्मैक के साथ एक नशा तस्कर को दबोच कर जेल भेज दिया है।

जानकारी के अनुसार मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड महोदय के ड्रग्स फ्री देवभूमि मिशन 2025 के दृष्टिगत वरिष्ठ पुलिस अध ीक्षक जनपद हरिद्वार' के निर्देशन में मादक पदार्थ (अवैध शराब/ स्मैक/ चरस/गांजा/आदि) तस्करों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम मैं श्रीमान पुलिस अध ीक्षक ग्रामीण महोदय हरिद्वार एवं श्रीमान पुलिस उपाधीक्षक रुड़की हरिद्वार महोदय की पर्यवेक्षण में श्रीमान प्रभारी निरीक्षक मनीष उपाध्याय कोतवाली रुड़की हरिद्वार के कुशल नेत्तृव में दौरान चेकिंग कोतवाली रुड़की पुलिस द्वारा दिनांक 11.10.2025 को गस्त व चौकिंग के दौरान फ्लावर के पास लाल कुर्ती मोहनपुरा से एक अभियुक्त मय 4.78 ग्राम अवैध स्मैक के साथ गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त से नाम पता पूछा तो अभियुक्त ने अपना नाम अजीत कुमार पुत्र रतन सिंह निवासी गोलबट्टा पोस्ट मिलाप नगर कोतवाली रुड़की जनपद हरिद्वार बताया अभियुक्त के विरुद्ध कोतवाली रुड़की पर मुकदमा अपराध संख्या 367/25 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट पंजीकृत किया अभियुक्त को मा0न्यायालय के समक्ष पेश किया जा रहा है।

पाक की बेचैनी

इस समय अफगानिस्तान के विदेश मंत्री सात दिवसीय भारत के दौरे पर आए हुए हैं। इस बीच ऐसी भी खबरें आ रही हैं कि पाक व अफगानिस्तान के बीच बढ़ते तनाव को लेकर इशारा करती है। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में काफी अंदर घुसकर तहरीके तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) पर सर्जिकल स्ट्राइक की है। जाहिर है टीटीपी पर सर्जिकल स्ट्राइक तो एक बहाना लगती है असल मकसद इसके पीछे कुछ और लगता है। लगता है कि पाकिस्तान अफगानिस्तान के साथ भारत की बढ़ती नजदीकी को पचा नहीं पा रहा है। हालांकि टीटीपी और पाक के बीच संघर्ष कोई नया नहीं है। टीटीपी को हमेशा पाकिस्तान अपने लिए खतरा मानता है और वह यह आरोप भी लगाता रहता है कि उसको शह अफगानिस्तान से मिल रही है। ताजा मामले में भी यही कह रहा है कि टीटीपी के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई की है। इसी तरह अफगानिस्तान के विदेश मंत्री ने नई दिल्ली में पत्रकारों के सामने विस्तार से बात की है। मुत्ताकी ने पाक पर आरोप लगाया और कहा कि उसने खुद ही अपने कबालाई इलाकों में सैन्य अभियान चलाकर हजारों लोगों को बेघर किया था, जिनमें से कई शरणार्थी के रूप में अफगानिस्तान में रह रहे हैं। मुत्ताकी ने बताया कि ये लोग पाक से आए हैं और अफगान धरती पर शरणार्थी बनकर रह रहे हैं और ये लोग तब आए थे जब अमेरिका और उसकी समर्थित सरकार अफगानिस्तान में थी, तब इन्हें जगह दी गई थी और अब ये लोग हमारी देखरेख में शांति से रह रहे हैं। मुत्ताकी का यह भी कहना था कि पाकिस्तान अफगान सीमा जिसे ड्यूरंड लाइन के नाम से भी जाना जाता है, 2400 किमी से ज्यादा लंबी है और इसको नियंत्रित करना आसान नहीं है। उन्होंने याद दिलाया कि न इसे चंगेज खां नियंत्रित कर सका और न ही अंग्रेज। इसको ताकत के बलबूते नहीं संभाला जा सकता। उन्होंने चेतावनभरे लफ्ज में कहा कि पाक के पास बड़ी फौज और बेहतरीन खुफिया एजेंसी हैं फिर भी वे इसे खुद क्यों नहीं रोक पा रहे हैं। इस समय कतर और सऊदी अरब के हस्तक्षेप से दोनों देशों के बीच कोई सैन्य कार्रवाई नहीं हो रही है, लेकिन मुत्ताकी ने साफ कहा कि अगर पाक शांति व अच्छे रिश्ते नहीं चाहता तो अफगानिस्तान के पास और भी विकल्प मौजूद हैं, लेकिन अफगानिस्तान शांति में विश्वास रखता है। बड़ी बात मुत्ताकी ने कही वह यह है कि पाक अपने यहां आतंकी समूहों को क्यों काबू नहीं कर पा रहा है और अपने ही लोगों को खतरे में डालकर कुछ लोगों को खुश करने की क्यों कोशिश कर रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ ताकतें दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ा रही हैं। जहां तक बात भारत की है, अफगानिस्तान के साथ इस तरह की पहल बेहतर संबंधों को उसने की है व अफगान विदेश मंत्री ने उसको सराहा है यह बड़ी सफलता है।

निजी कॉलेज परिसर में सुरक्षा सुनिश्चित करें

पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में मेडिकल छात्रा के साथ हुए दुष्कर्म की वारदात चौंकाने वाली है, हमारी सरकार ऐसी घटनाओं को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करती, वारदात में शामिल तीन आरोपी गिरफ्तार कर लिए गए हैं, पुलिस अन्य की तलाश कर रही है, किसी को भी बख्शा नहीं जाएगा, निजी कॉलेजों को परिसर के भीतर और आसपास सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए, वह लड़की निजी मेडिकल कॉलेज में पढ़ रही थी, इसलिए निजी मेडिकल कॉलेज बताए कि वह रात के 12.30 बजे कैसे बाहर आ गई, ओडिशा में तीन सप्ताह पहले समुद्र तट पर तीन लड़कियों के साथ बलात्कार हुआ, ओडिशा सरकार ने क्या कार्रवाई की और बंगाल में अगर महिलाओं के साथ कुछ भी होता है तो हम इसे सामान्य मामला नहीं मानते, यह एक गंभीर मामला है।

–ममता बनर्जी, सीएम, पश्चिम बंगाल

जल संकट की दस्तक दिल्ली से दूर नहीं

विनीत नारायण

इस वर्ष देश भर में हुई भारी बारिशों और जल प्रलय के बावजूद भारत के शहरी क्षेत्रों में जल संकट अब कोई दूर की आशंका नहीं, बल्कि एक कठोर सच्चाई बन चुका है। दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बेंगलुरु जैसे महानगर, जो आर्थिक प्रगति और आधुनिक जीवनशैली के प्रतीक हैं, अब जल प्रबंधन की विफलता के गंभीर परिणाम झेल रहे हैं। हाल ही में दिल्ली के वसंत कुंज क्षेत्र में तीन बड़े मॉल और आसपास की कॉलोनियों में पानी की सप्लाई पूरी तरह ठप हो जाने से यह संकट फिर सुर्खियों में आया। इन प्रतिष्ठानों को बंद करने की नौबत इसलिए आ गई है क्योंकि टैंकरों से इनकी जल आपूर्ति रुक गई, जबकि भूजल दोहन (ग्राउंड वॉटर बोरिंग) पर पहले से ही एनजीटी ने प्रतिबंध लगा रखा है। यह स्थिति केवल अस्थाई तकनीकी समस्या नहीं, बल्कि एक गहरे प्रशासनिक और नैतिक संकट की ओर संकेत करती है। पिछले सात दशकों में खरबों रुपया जल प्रबंधन पर खर्च किए जाने के बावजूद ऐसा क्यों है?

दिल्ली जैसे शहर में जहां जनसंख्या 2 करोड़ से अधिक है, जल आपूर्ति व्यवस्था लंबे समय से दबाव में है। दिल्ली जल बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, शहर में प्रतिदिन करीब 1,000 मिलियन गैलन पानी की मांग है, जबकि उपलब्धता मुश्किल से 850 मिलियन गैलन तक पहुंच पाती है। वसंत कुंज जैसे पॉश इलाकों में भी पिछले कुछ वर्षों से पानी की टंकियों और निजी टैंकरों पर निर्भरता बढ़ी है। परंतु इस बार स्थिति पहले से कहीं अधिक भयावह हो गई क्योंकि प्रशासन ने सुरक्षा और ट्रैफिक कारणों से टैंकरों की आवा.जाही पर रोक लगा दी। इस निर्णय का सबसे बड़ा असर व्यापारिक केंद्रों जैसे मॉल्स, रेस्तरां और दुकानों पर पड़ा है। इन मॉल्स में हजारों कर्मचारी काम करते हैं और प्रतिदिन लाखों ग्राहक आते हैंय बिना पानी के ऐसी व्यवस्था एक दिन भी नहीं चल सकती। शौचालय, सफाई, भोजनालय, अग्निशमन प्रणाली, सब कुछ जल आपूर्ति पर निर्भर हैं। जब टैंकरों की आपूर्ति रुकी, तो केवल व्यापार ही नहीं, आसपास के आवासीय समाज भी संकट में पड़ गए। दिल्ली सरकार ने कुछ वर्ष पहले भूजल दोहन पर सख्त प्रतिबंध लगाया था। उद्देश्य यह था कि गिरते जलस्तर को रोका जाए। यह पहल पर्यावरणीय दृष्टि से आवश्यक थी, क्योंकि लगातार बढ़ते दोहन ने दिल्ली के अधिक.ांश क्षेत्रों में भूजल को 300 फीट से भी अधिक नीचे पहुंचा दिया था। लेकिन सवाल यह है कि क्या वैकल्पिक व्यवस्था पर्याप्त रूप से विकसित की गई? जब सरकार ने ग्राउंड वॉटर बोरिंग को गैरकानूनी घोषित किया, तब उसे समानांतर रूप से मजबूत टैंकर नेटवर्क, पुनर्चक्रण संयंत्र और रेन वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम विकसित करने चाहिए थे। दुर्भाग्यवश, नीतियां बनीं पर उनका कार्यान्वयन अधूरा रह गया। परिणामस्वरूप, लोग न तो कानूनी तरीके से पानी निकाल सकते हैं, न सरकारी वितरण पर भरोसा कर सकते हैं। सोचने वाली बात ए है कि यदि जाड़ों में यह हाल है तो गर्मियों में क्या होगा? दिल्ली ही नहीं, बल्कि पूरे देश में पानी की आपूर्ति से जुड़ा टैंकर कारोबार वर्षों से विवादों में रहा है। कई जगह यह सार्वजनिक सेवा से अधिक निजी व्यवसाय बन चुका है। अधिकारियों और टैंकर ठेकेदारों के बीच मिलीभगत के आरोप नए नहीं हैं। दिल्ली में जल आपूर्ति में आई यह हालिया बाधा भी ऐसे ही भ्रष्टाचार की परतें उजागर करती प्रतीत होती है। त्योहारों के मौसम में जब पानी की मांग बढ़ जाती है, घरों में सजावट, साफ-सफाई और उत्सव आयोजन अधिक होते हैं।ऐसे समय पर टैंकरों की आवाजाही पर प्रतिबंध या 'तकनीकी समस्या' का बहाना बना देना संदेह उत्पन्न करता है। कई स्थानीय निवासियों का कहना है कि कुछ जल एजेंसियों ने टैंकरों की उपलब्धता को कृत्रिम रूप से सीमित कर कीमतें बढ़ाने की कोशिश की है। इससे न केवल आम नागरिकों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ा, बल्कि मॉल्स और व्यापारिक प्रतिष्ठानों को बंद करने की स्थिति आ गई। अगर ए आरोप सही साबित होते हैं, तो यह सिर्फ प्रशास.निक लापरवाही नहीं, बल्कि नैतिक दिवालियापन का उदाहरण होगा। जल जैसी बुनियादी संपदा के साथ ऐसा बर्ताव किसी नागरिक समाज में अक्षम्य अपराध है। भारत में जल नीति के कई स्तर हैं। केंद्र सरकार, राज्य सरकारें और नगरपालिका निकाय सब अपने ढंग से काम करते हैं। लेकिन इन सबमें तालमेल का अभाव है। राष्ट्रीय जल नीति (2012) यह कहती है कि हर नागरिक को पर्याप्त और गुणवत्तापूर्ण जल मिलेगा, पर छोटे शहरों को तो छोड़ें, दिल्ली जैसे शहरों में भी वास्तविकता इसके उलट है। नगर पालिकाएं रेन वॉटर हार्वेस्टिंग की अनिवार्यता घोषित तो करती हैं, पर अधिकांश इमारतों में यह प्रणाली केवल कागजों पर मौजूद है। जल पुनर्चक्रण संयंत्रों की क्षमता भी इस संकट का सामना करने के लिए अपर्याप्त है। यमुना का प्रदूषण भी दिल्ली की जल आपूर्ति पर सीधा असर डालता है। यदि यमुना से शुद्ध जल नहीं मिलेगा, तो शहर को बाहरी स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ेगा, जिससे राजनीतिक टकराव भी बढ़ते हैं। हालांकि नीति-निर्माण और कार्यान्वयन की बड़ी जिम्मेदारी सरकार पर है, नागरिक भी पूरी तरह निर्दोष नहीं हैं। शहरी समाज में जल का अनावश्यक उपयोग आम बात है। बागवानी में अत्यधिक पानी, कार धोने में व्यर्थ बहाव, और रिसाव की अनदेखी। स्वच्छ भारत मिशन या हर घर जल जैसे अभियानों की सफलता तभी संभव है जब लोग खुद बदलाव का हिस्सा बनें। रेन वॉटर हार्वेस्टिंग और ग्रे-वॉटर रीसाइक्लिंग जैसे उपाय व्यक्तिगत और साम.ुदायिक स्तर पर अपनाए जा सकते हैं। मॉल्स और हाउसिंग सोसाइटीज में यह व्यवस्था अनिवार्य की जानी चाहिए, ताकि टैंकरों पर निर्भरता घटे। दिल्ली का वर्तमान संकट केवल एक चेतावनी है। आने वाले वर्षों में ऐसी घटनाएं और बढ़ सकती हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक, यदि ठोस कदम नहीं उठाए गए तो 2030 तक देश के आधे बड़े शहर 'जल-विहीन' क्षेत्रों की श्रेणी में आ सकते हैं। इसलिए अब समय है कि सरकार और समाज दोनों मिलकर दीर्घकालिक रणनीति अपनाएं। गौरतलब है कि अकबर की राजधानी फतेहपुर सीकरी पानी के अभाव के कारण मात्र 15 सालों में ही उजड़ गई थी। महानगरों में वर्षा जल संग्रहण प्रणाली को सख्ती से लागू करना। जल पुनर्चक्रण संयंत्रों की संख्या और क्षमता बढ़ाना। टैंकर संच.ालन को पारदर्शी और जीपीएस-नियंत्रित बनाना ताकि रिश्वतखोरी पर रोक लगे। यमुना जैसी नदियों की सफाई और पुनर्जीवन को प्राथमिकता देना। पानी की बर्बादी रोकने के लिए सख्त कानून और जनजागरूकता अभियान चलाना। इन कदमों के साथ-साथ यह भी सुनिश्चित करना होगा कि जल प्रबंधन केवल संकट आने पर चर्चा का विषय न बने, बल्कि शहरी नियोजन की मूल नीति का हिस्सा हो। दिल्ली पर आई जल संकट की दस्तक यह याद दिलाता है कि पानी केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार है। जब-जब हम इसे समझने में चूक करते हैं, तो सभ्यता के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लग जाता है। यदि सरकार और नागरिक समाज अब भी इस संकट को गंभीरता से नहीं लेते, तो 'जल युद्ध' भविष्य का नहीं, वर्तमान का शब्द बन जाएगा। जलसंकट का समाधान केवल योजनाओं से नहीं, ईमानदार नीयत और सामूहिक प्रयासों से ही संभव है।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

पेंशन का अधिकार शिक्षकों की मांग

शहज़ाद अली

भारतीय शिक्षा प्रणाली के मूल में शिक्षक ही हैं, जो नई पीढ़ी को ज्ञान की ज्योति प्रदान करते हैं, लेकिन हाल के वर्षों में सरकारी नीतियों और न्यायिक फैसलों ने शिक्षकों के समक्ष नई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं। एक ओर पुरानी पेंशन योजना की बहाली की मांग सरकारी कर्मचारियों, विशेषकर अध्यापकों के बीच जोर पकड़ रही है, तो दूसरी ओर सुप्रीम कोर्ट के हालिया आदेश ने टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट TET को अनिवार्य कर दिया है। ये दोनों मुद्दे शिक्षकों की आर्थिक सुरक्षा और पेशेवर योग्यता से जुड़े हैं। इस लेख के माध्यम से हम इन मांगों को सरकार एवं सरकारी संस्थाओं का ध्यानाकर्षण करेंगे, जो न केवल अध्यापकों की वर्तमान स्थिति को प्रभावित कर रहे हैं, बल्कि भविष्य की नीतियों को भी आकार दे रहे हैं। पुरानी पेंशन योजना सरकारी कर्मचारियों की लंबे समय से चली आ रही वह व्यवस्था थी, जिसमें सेवानिवृत्ति के बाद कर्मचारी को अंतिम वेतन का 50 प्रतिशत पेंशन के रूप में मिलता था, जिससे वह अपना शेष जीवन सम्मान से व्यतीत कर पाता था। 2004 के बाद यह लाभ छीन लिया गया, जिससे कर्मचारियों को एक तगड़ा शॉक लगा। हालांकि सरकारी नौकरी के लालच में सरकारी नौकर इस हानि को देखता और सहन करता रहा। अध्यापक समुदाय, जो मुख्य रूप से सरकारी या सहायता प्राप्त स्कूलों में कार्यरत हैं, इस बदलाव से सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। दूसरी तरफ अन्य विभागों की ओर भी यदि देखा जाए तो वहां पर भी सेवारत कर्मचारियों / अधिकारी वर्ग को इस प्रकार के री फ्रेशर कोर्स कराने की आवश्यकता होनी चाहिए मगर ऐसा नहीं है? क्यों कार्य क्षमता कसौटी अध्यापकों के लिए ही नियत हो? पचपन वर्ष की अवस्था पूर्ण कर रहे सभी प्रशासनिक,विधि, राजनीतिक व्यक्तियों के लिए कोई आकलन प्रक्रिया हो जाए तो इन क्षेत्रों में भी जनमानस को अपेक्षाकृत बेहतर सुविधाएं प्राप्त हो सकती हैं।

सरकार की नई पेंशन योजना के संबंध में अध्यापकों का तर्क है कि NPS में निवेश जोखिमपूर्ण है और मुद्रास्फीति के साथ पेंशन की राशि अपर्याप्त साबित हो रही है। फरवरी 2025 के एक फैसले में कोर्ट ने सेवानिवृत्ति से ठीक पहले वेतन वृद्धि (नोटिशनल इंक्रीमेंट) को पेंशन में शामिल करने का निर्देश दिया, जिससे हजारों पूर्व कर्मचारियों को राहत मिली। अध्यापकों की मांग अब OPS की पूर्ण बहाली पर केंद्रित है सुप्रीम कोर्ट के हालिया आदेश OPS की नैतिक और कानूनी वैधता को रेखांकित करते हैं। शिक्षक संघो द्वारा मांग की जा रही है कि पुरानी पेंशन योजना को बहाल किया जाए। यूनिफाइड पेंशन स्कीम 2025 के तहत सरकार ने कुछ राहत दी है, लेकिन अध्यापक इसे अपर्याप्त मानते हैं। पेंशन को अनुच्छेद 21 के तहत एक मौलिक अधिकार माना गया है, क्योंकि यह सेवानिवृत्त व्यक्तियों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करता है।

TET अनिवार्यता

सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला और अध्यापकों की चिंताएं, शिक्षा का अधिकार अधि.नियम 2009 के तहत 2011 से TET को शिक्षक भर्ती के लिए अनिवार्य बनाया गया था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के 1 सितंबर 2025 के फैसले ने इसे और सख्त कर दिया। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि कक्षा 1 से 8 तक के गैर-माइनॉरिटी स्कूलों में कार्यरत सभी अध्यापकों,चाहे वे RTE से पहले नियुक्त हुए हों,को TET पास करना होगा। प्रमा.ेशन के लिए भी TET अनिवार्य है। जिन अध्यापकों के पास 5 वर्ष से कम सेवा शेष है, उन्हें छूट दी गई है, वे सेवा जारी रख सकते हैं, लेकिन प्रमोशन नहीं पा सकेंगे। शेष को 2 वर्ष का समय दिया गया है, अन्यथा सेवा समाप्ति या अनिवार्य सेवानिवृत्ति हो सकती है। नियुक्ति के समय निर्धारित योग्यता पूर्ण मानते हुए ही कोई सरकारी विभाग व्यक्ति को नियुक्त करता है, इन अध्यापकों ने भी ऐसा ही किया है। अब नियुक्ति के बाद निर्गत आदेशों को सेवारत शिक्षक पर लगाया जाना औचित्यपूर्ण नहीं है हालांकि उक्त फैसला अंजुमन इशाअत-ए-तालीम ट्रस्ट बनाम महाराष्ट्र राज्य मामले में आया, जिसमें कोर्ट ने त्ज्म की धारा 23 का हवाला देते हुए कहा कि ज्म्ज शिक्षण योग्यता का न्यूनतम मानक है।इस आदेश का प्रभाव स्कूलों में 20-30 लाख अध्यापकों पर पड़ेगा। तमिलनाडु में ही 3 लाख से अधिक अध्यापक प्रभावित हैं, जहां ज्म्ज पास रेट मात्र 10-20: है। शिक्षको की मांग हैं कि त्ज्म लागू होने से पहले नियुक्त अध्यापकों को ज्म्ज से छूट दी जाए, क्योंकि उनकी अनुभव और प्रशिक्षण को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। शिक्षा विभाग समय-समय पर विषय आधारित एवं अन्य कौशलों पर आधारित प्रशिक्षण कराता है।उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री महोदय ने 16 सितंबर 2025 को इस फैसले के खिलाफ रिव्यू पिटिशन दायर करने का निर्देश दिया, स्वागत योग्य पाजिटिव पहल है जिससे आशा की किरण जगी है। अध्यापक मांग कर रहे हैं पुरानी पेंशन योजना को बहाल एवं लागू किया जाए एवं शिक्षा का अधिक.ार अधिनियम 2009 जो कि जौलाई 2011 को लागू हुआ इससे पहले नियुक्त किसी भी शिक्षक पर टैट नही थोपा जाए।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

राहुल को जेपी का स्मरण कराया भी जा सकता है

श्रवण गर्ग

बिहार में परिवर्तन की जो आंधी इस समय चल रही है उसमें उस संपूर्ण क्रांति की झलक तलाश की जा सकती है जो 1974 में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में हुई थी और जिसके परिणामस्वरूप 1977 में आजादी के बाद पहली बार केंद्र में एक गैर-कांग्रेसी सरकार की स्थापना हुई थी।

एक बड़ा फर्क तब और अब में यह है कि उस समय जो राजनीतिक सत्ता यानी सत्तारूढ़ कांग्रेस खलनायक के रूप में मौजूद थी वह इस समय राहुल की अगुवाई में नायकत्व की भूमिका में है। जिन सांप्रदायिक तत्वों यानी तब जनसंघ और आरएसएस ने अपने राजनीतिक हितों के लिए जेपी के 1974 के छात्र-आंदोलन पर कब्जा कर लिया था वे इस समय खलनायकों के रोल में हैं। राहुल की उम्र उस समय चार-पांच साल की रही होगी। राजीव गांधी और सोनिया गांधी तब सत्ता की राजनीति से कोसों दूर थे। दिल्ली में सत्ता के सारे सूत्र संजय गांधी और उनकी अतिविश्वस्त कोटरी के हाथों में थे। जेपी के साथ 1972 में हुए चंबल घाटी के ऐतिहासिक दस्यु आत्म-समर्पण के समय से जुड़े होने के कारण मैं बिहार आंदोलन के दौरान भी लोकनायक के साथ सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ था। बिहार चुनावों को लेकर यूट्यूब चैनलों पर होने वाली बहसों के माध्यम से और राहुल गांधी की टीम से नजदीक से जुड़े एक सांसद के जरिए राहुल तक एक संदेश पहुंचाने की कोशिश मैंने पिछले दिनों की थी। राहुल गांधी तक संदेश यह पहुंचवाना था कि उन्होंने युवा शक्ति के माध्यम से मोदी की हुकूमत के खिलाफ लड़ाई की शुरुआत बिहार की क्रांति-उर्वरा धरती से की है। इंदिरा गांधी के खिलाफ जेपी की संपूर्ण क्रांति में लालू प्रसाद यादव प्रमुख छात्र नेता थे। राहुल की लड़ाई में उनके प्रमुख सहयोगी लालू के बेटे तेजस्वी यादव हैं। राहुल के समर्थन में बिहार के युवा भी उसी तरह से समर्पित हैं जिस तरह 1974 में जेपी के प्रति थे।

राहुल गांधी पटना सहित बिहार के अन्य स्थानों की यात्राएं लगातार कर रहे हैं। उनकी ऐतिहासिक वोटर अधिकार यात्रा का समापन भी पटना में ही हुआ था। विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक की पहली बैठक भी पटना में ही हुई थी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार उस बैठक के आयोजक थे। केजरीवाल भी उस बैठक में उपस्थित थे। बाद में इंडिया ब्लॉक को धोखा देकर बीजेपी से हाथ मिला लिया। मेरा सुझाव यह था कि राहुल अपनी किसी पटना यात्रा के दौरान अगर जेपी के कदम कुआं स्थित निवास स्थान पहुंचकर संपूर्ण क्रांति के नायक को अपने श्रद्धासुमन अर्पित कर देंगे तो उसका संदेश बिहार के गांव-गांव तक पहुंच जाएगा। बिहार के संवेदनशील युवाओं के साथ राहुल का बांड और मजबूत हो जाएगा। केंद्र की वर्तमान गैर-कांग्रेसी सरकार हालांकि जेपी के उसी संपूर्ण क्रांति आंदोलन की देन है पर नरेंद्र मोदी, अमित शाह और जेपी नड्डा से इस तरह की कोई अपेक्षा नहीं की जा सकती। आश्चर्य नहीं हुआ कि राहुल गांधी की ओर से सुझाव को गौर करने योग्य नहीं समझा गया। मैं यह भी मानने को तैयार हूं कि संदेश उन तक नहीं पहुंच पाया होगा। इस तरह का विचार तो राहुल या उनकी टीम के लोगों के मन में स्वत: भी आ सकता था। राहुल बिना किसी पूर्व-घोषणा और मर्जी से अलग-अलग जगहों पर जाते रहते हैं। लोगों से मिलते हैं, उन्हें गले लगाते रहते हैं ! बिहार में युवा क्रांति की अगुवाई कर जननायक बनने वाले नेता को तो अपनी पहली ही पटना यात्रा में कदम कुंआ के ठिकाने की याद आ जानी चाहिए थी। अगर नहीं आई तो दिलाई भी जा सकती थी। मैं जिस पूर्वाग्रह से मुक्त होना चाहता हूं वह यह है कि राहुल गांधी को गुस्सा भी आता है और उनकी ही पार्टी और सहयोगी दलों के नेता उनसे खौफ भी खाते हैं। संपूर्ण क्रांति के लोकनायक जेपी का अगर राहुल ने पटना में स्मरण नहीं किया तो उसमें उनकी चुनावी स्ट्रेटेजी की कमी भी तलाशी जा सकती है। आश्चर्य ही व्यक्त किया जा सकता है कि 1974 के आंदोलन की ही उपज लालू यादव के प्रति अगर राहुल के मन इतना सम्मान है तो जेपी के प्रति उसका चुनावी-प्रदर्शन भी क्यों नहीं हो सकता।

राहुल गांधी पटना सहित बिहार के अन्य स्थानों की यात्राएं लगातार कर रहे हैं। उनकी ऐतिहासिक वोटर अधिकार यात्रा का समापन भी पटना में ही हुआ था। विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक की पहली बैठक भी पटना में ही हुई थी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार उस बैठक के आयोजक थे। केजरीवाल भी उस बैठक में उपस्थित थे। बाद में इंडिया ब्लॉक को धोखा देकर बीजेपी से हाथ मिला लिया। मेरा सुझाव यह था कि राहुल अपनी किसी पटना यात्रा के दौरान अगर जेपी के कदम कुआं स्थित निवास स्थान पहुंचकर संपूर्ण क्रांति के नायक को अपने श्रद्धासुमन अर्पित कर देंगे तो उसका संदेश बिहार के गांव-गांव तक पहुंच जाएगा।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

58 पाक सैनिक मारे गिराए: अफगान

25 चौकियों पर कब्जा भी किया, कहा: आईएसआई के आतंकियों को पनाह दे रहा पाकिस्तान

काबुल। अफगानिस्तान ने दावा किया कि उसकी सेना ने शनिवार रात को पाकिस्तान सीमा पर हुई झड़प में 58 पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया है। यह कार्रवाई पाकिस्तान की ओर से किए गए हवाई उल्लंघन के जवाब में की गई।

तालिबान सरकार के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने कहा कि अफगान सुरक्षा बलों ने पाकिस्तान की 25 सैन्य चौकियां कब्जे में ले ली हैं। इस कार्रवाई में 58 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए, जबकि 30 अन्य घायल हुए हैं। अफगान रक्षा मंत्रालय ने कहा: हमारा आपरेशन आधी रात को खत्म हो गया। अगर पाकिस्तान ने फिर से अफगानिस्तान सीमा का उल्लंघन किया, तो हमारी सेना देश की रक्षा के लिए पूरी तरह तैयार है। अफगान अधिकारियों ने पाकिस्तान पर राजधानी काबुल और देश के पूर्वी इलाके के एक बाजार पर बमबारी करने का आरोप लगाया था।

हालांकि पाकिस्तान ने इस हमले की जिम्मेदारी नहीं ली थी। जबीहुल्लाह मुजाहिद ने रविवार को प्रेस कान्फ्रेंस कर पाकिस्तान के खिलाफ चलाए गए आपरेशन की जानकारी दी। तालिबान ने पाकिस्तान पर आरोप लगाया है कि वह अपनी जमीन पर आईएसआई के आतंकियों को शरण दे रहा है। मुजाहिद ने इन आतंकियों को अफगानिस्तान समेत पूरी दुनिया के लिए खतरा बताते हुए उन्हें पाकिस्तान से निकालने या अफगानिस्तान के हवाले करने के लिए कहा। तालिबान प्रवक्ता ने बताया कि अफगानिस्तान ने अस्थिरता फैलाने वाले सभी तत्वों को खत्म कर दिया था, लेकिन अब उनके नए ठिकाने पाकिस्तान के पख्तूनख्वा इलाके में बना दिए गए हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि इन ठिकानों पर कराची और इस्लामाबाद एयरपोर्ट के जरिए नए लड़ाकों को लाया जा रहा है और यहीं पर उन्हें ट्रेनिंग दी जा रही है। मुजाहिद ने यह भी दावा किया कि ईरान और रूस में हुए हमलों की योजना भी इन्हीं पाकिस्तानी ठिकानों से बनाई गई थी। उन्होंने कहा, पाकिस्तानी गृह मंत्रालय की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि अफगानिस्तान को भी भारत की तरह मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा, ताकि वह पाकिस्तान की ओर बुरी नजर से देखने की हिम्मत न कर सके। गृह मंत्री मोहसिन नकवी ने कहा है कि हालिया हमलों के बाद पाकिस्तान चुप नहीं बैठेगा, ईंट का जवाब पत्थर से दिया जाएगा। वहीं, पाकिस्तानी मीडिया डान के अनुसार, पाक सेना ने अफगानिस्तान की 19 सीमा चौकियों पर कब्जा कर लिया। रेडियो पाकिस्तान के अनुसार, अफगान हमले सीमा के करीब छह इलाकों में हुए। पाकिस्तान के खैबर-पख्तूनख्वा प्रांत के एक अधिकारी ने मीडिया को बताया कि पाकिस्तानी सेना ने भी जवाब में भारी गोल. ीबारी की। लड़ाई के दौरान पाकिस्तानी सेना ने 3 अफगान ड्रोन मार गिराए, आशंका जताई गई है कि ये ड्रोन बम ले जा रहे थे। सऊदी अरब ने इस लड़ाई पर चिंता जताई है। सऊदी सरकार ने दोनों देशों से शांति और बातचीत के जरिए मामला सुलझाने की अपील की है और तनाव बढ़ाने से बचने को कहा है। दरअसल 9 अक्टूबर को अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में तहरीक-ए-तालिबान पाक के ठिकानों पर हवाई हमले हुए थे। तालिबान का कहना था कि ये हमले पाकिस्तान ने किए थे। हालांकि पाकिस्तान ने साफ तौर पर ये नहीं कहा कि ये हमले उसने किए, लेकिन उसने तालिबान को चेतावनी दी कि वह अपनी जमीन पर टीटीपी को पनाह न दे।

■ अफगान को भी भारत की तरह मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा: पाकिस्तानी गृह मंत्रालय का दावा

खैबर पख्तूनख्वा में दो आतंकवादी मारे गए

इस्लामाबाद। उत्तर पश्चिम पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में चलाये गए एक अभियान में दो आतंकवादी मारे गए और दो अन्य घायल हो गए हैं। पुलिस ने रविवार को इसकी जानकारी दी। कैपिटल सिटी पुलिस अधिकारी पेशावर मियां सईद ने एक बयान में कहा कि यह घटना शनिवार को खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के पेशावर जिले के हसन खेल इलाके में हुई, जहां आतंकवादियों ने पुलिस थाने पर हमला करने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि पुलिस ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की और हमलावरों के साथ घंटों तक भारी गोलीबारी होती रही। संदिग्धों का पीछा करने के लिए इलाके में अतिरिक्त बल भेजा गया है।

नई दिल्ली। अफगान दूतावास में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान बोलते अफगानिस्तान के विदेश मंत्री आमिर खान मुत्ताकी।

सूडान में आरएसएफ के ड्रोन हमले, 60 से ज्यादा की मौत

खार्तूम। पश्चिमी सूडान के एल फशर शहर में अर्धसैनिक रैपिड सपोर्ट फोर्स (आरएसएफ) द्वारा किए गए ड्रोन हमलों में शनिवार को 60 से जयादा नागरिक मारे गए। यह जानकारी एक स्वयंसेवी समूह ने दी है। एल फशर में प्रतिरोध समितियों के समन्वय ने एक बयान में कहा कि दार अल-अरक़म आश्रय स्थल को एक रणनीतिक ड्रोन और आठ से जयादा आग लगाने वाले बमों से निशाना बनाया गया, जिससे शवों के ढेर ऐसे बिखरे पड़े थे जिसका वर्णन करना मुश्किल है। एक चिकित्सा सूत्र ने बताया कि आरएसएफ ने सुबह दार अल-अरक़म आश्रय स्थल और ओमदुरमान इस्लामिक विश्वविद्यालय पर व्यवस्थित ड्रोन हमले किए, जिसमें बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों सहित 30 से जयादा नागरिक मारे गए और कई लोग घायल हुए। सूत्र ने बताया कि शवों को अल फशर स्थित सऊदी अस्पताल लाया गया। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि ड्रोन हमलों का सीधा निशाना दक्षिणी अल फशर स्थित दार अल-अरकम आश्रय गृह था जहां कुछ लोग आश्रय गृह के अंदर जलकर मर गए।

संक्षिप्त समाचार

अदालत ने रोक दी ट्रम्प की नेशनल गार्ड तैनाती

वाशिंगटन। अमेरिका में इलिनाय राज्य में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा भेजी गई नेशनल गार्ड की टुकड़ियां अब राज्य में रह सकती हैं, लेकिन फिलहाल उन्हें किसी भी फेडरल प्रापर्टी की सुरक्षा या गश्त पर तैनात नहीं किया जा सकता। यह आदेश अपील्स कोर्ट ने सुनाया। इससे पहले फेडरल जज एप्रिल पेरी ने गुरुवार को नेशनल गार्ड की तैनाती को कम से कम दो सप्ताह के लिए अस्थाई रूप से रोक दिया था। जज ने यह भी कहा कि ट्रम्प के इमिग्रेशन क्रैकडाउन के दौरान इलिनाय में विद्रोह का कोई स्पष्ट खतरा मौजूद नहीं है। अपील्स कोर्ट ने इस मामले में सुनवाई को रोकते हुए आगे के तर्कों की प्रतीक्षा करने का आदेश दिया।

बांग्लादेश में सेना के 15 अधिकारियों को लिया हिरासत में

ढाका। बांग्लादेश से एक बड़ी खबर सामने आ रही है। जहां 15 सेना के अधिकारियों को हिरासत में लिया गया है। मामले में बांग्लादेश की सेना ने कहा कि देश के अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण के आदेश पर 15 सेवा में रह रहे अधिकारियों को हिरासत में लिया गया है। इन अधिकारियों पर पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के शासनकाल में कथित मानवता के खिलाफ अपराधों का आरोप है। सेना के एडजुटेंट जनरल मेजर जनरल मोहम्मद हाकिमुज्जामान ने बताया कि कुल 16 अधिकारियों को सेना मुख्यालय में हाजिर होने के निर्देश दिए गए थे, जिनमें से 15 ने हाजिरी लगाई।

अमेरिकी सैन्य संयंत्र में विस्फोट में 16 लोगों की मौत

न्यूयॉर्क। अमेरिका के टेनेसी में शुक्रवार को एक सैन्य संयंत्र में हुए विस्फोट में 16 लोगों के मारे जाने की आशंका है। हालांकि विस्फोट में कोई भी जीवित नहीं बचा है। स्थानीय अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। टेनेसी आपातकालीन प्रबंधन एजेंसी (टीईएमए) ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि यह विस्फोट सैन्य विस्फोटकों के उत्पादन वाली कंपनी एक्यूरेट एनर्जेटिक सिस्टम्स, एलएलसी में स्थानीय समयानुसार सुबह लगभग 7:45 बजे नैशविले, टेनेसी के दक्षिण-पश्चिम में हुआ। विस्फोट के कारणों की जांच अभी जारी है। विज्ञप्ति के अनुसार काफी मात्रा में मलबे और विस्फोटक पदार्थों की संभावित उपस्थिति के कारण प्रतिक्रिया अभियान धीरे-धीरे और व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ रहा है।

चीन 100% टैरिफ पर उठाएगा सख्त कदम

दुर्लभ खनिज निर्यात पर प्रतिबंध का किया बचाव, वैश्विक शांति की रक्षा में जायज कदम बताया

बीजिंग। चीन ने रविवार को दुर्लभ खनिजों और उनसे जुड़ी वस्तुओं पर अपने नए निर्यात नियंत्रण उपायों का बचाव किया और कहा कि यह वैश्विक शांति की रक्षा के लिए उठाया गया जायज कदम है। इसके साथ ही चीन ने अमेरिका को चेतावनी दी कि अगर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प चीनी निर्यात पर सौ फीसदी टैरिफ लगाने की धमकी को अमल में लाते हैं, तो वह सख्त कदम उठाएगा।

बीजिंग ने दुर्लभ खनिजों, लिथियम बैटरियों और इन खनिजों से बनी अत्यधिक कठोर सामग्री के खनन और प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) से जुड़ी तकनीकों और उपकरणों के निर्यात पर नए प्रतिबंधों की घोषणा की थी। ये नए नियंत्रण उपाय तत्काल प्रभाव से लागू हो गए और इसमें उत्पादन तकनीकों का विदेशी स्थानांतरण भी शामिल है। इन नियंत्रण उपायों (जो तत्काल प्रभाव से लागू हो गए) में उत्पादन तकनीकों का विदेशी स्थानांतरण भी शामिल है। चीन ने कहा कि यह फैसला इस वजह से लिया गया है, क्योंकि कुछ विदेशी कंपनियां चीन से मिली सामग्री का उपयोग सैन्य उद्देश्यों के लिए कर रही थीं। चीन के इस कदम पर प्रतिक्रिया देते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने एक नवम्बर से चीनी वस्तुओं पर 100 फीसदी टैरिफ लगाने की धमकी दी। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि वह 'सभी जरूरी साफ्टवेयर' के निर्यात पर रोक लगा सकते हैं।

ट्रम्प की मौजूदगी में होगी इजरायली बंधकों की रिहाई

मिस्र में 20 से ज्यादा देशों के नेता जुटेंगे

तेल अवीव। गाजा सीजफायर समझौते के पहले चरण के तहत 48 बंधकों की रिहाई सोमवार सुबह से शुरू हो सकती है, जिनमें से 20 जीवित व्यक्ति और 28 शव सौंपे जाएंगे। इजरायली सेना ने शुक्रवार दोपहर तक गाजा से अपनी प्रारंभिक वापसी पूरी कर ली, जिसके बाद हमास को 72 घंटे का समय दिया गया है।

वहीं, सोमवार को मिस्र में गाजा युद्ध समाप्त करने के समझौते पर चर्चा होगी। इसमें अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प सहित 20 से अधिक विश्व नेता भाग लेंगे। दूसरी ओर, हमास ने मिस्र में सोमवार को होने वाले गाजा पीस समिट के आधिका. रिक हस्ताक्षर समारोह (दूसरा चरण) में शामिल होने से इन्कार कर दिया है। संगठन के वरिष्ठ नेता होस्साम बडरान ने कहा कि वे अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की योजना के कुछ हिस्सों से असहमत हैं। बडरान ने कहा कि फलस्तीनियों को (हमास का सदस्य हो या नहीं) उनकी जमीन से निकालने की बात बेतुकी है। उन्होंने समझौते के दूसरे चरण की बातचीत को जटिल और कठिन बताया। हमास के एक दूसरे अधिकारी ने कहा कि संगठन का निरस्त्रीकरण (हथियार छोड़ना) बिल्कुल असंभव है, भले ही वे गाजा की सत्ता छोड़ दें। इजरायल लगभग 2,000 फलस्तीनी कैदियों को रिहा करेगा। टाईम्स आफ इजरायल के मुताबिक, अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रास समिति इस अदला-बदली की देखरेख करेगी। रिपोर्ट में कहा गया कि अगर हालात अनुकूल रहे तो रिहाई रविवार रात से भी शुरू हो सकती है।

हमास का गाजा पीस समिट में शामिल होने से इन्कार

अमेरिका के नए राजदूत ने पीएम मोदी से की मुलाकात

ट्रम्प के साइन वाली तस्वीर भी प्रधानमंत्री को भेंट की, इस पर लिखा: पीएम मोदी आप महान हैं

नई दिल्ली। अमेरिका के नए नामिनेटेड राजदूत सर्जियो गोर ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। गोर ने पीएम मोदी को एक तस्वीर भी भेंट की। इस तस्वीर में मोदी और ट्रम्प प्रेस कान्फ्रेंस करते नजर आ रहे हैं। इस पर ट्रम्प का संदेश और हस्ताक्षर थे, जिसमें लिखा था: प्रधानमंत्री मोदी आप महान हैं। पीएम मोदी ने इस मौके पर कहा कि उन्हें विश्वास है कि गोर के कार्यकाल में भारत-अमे. रिका के संबंध और मजबूत होंगे।

प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया पर लिखा कि अमेरिका के राजदूत-निर्धारित सर्जियो गोर का भारत में स्वागत करके खुशी हुई। मुझे भरोसा है कि उनके कार्यकाल में भारत-अमेरिका की साझेदारी और मजबूत होगी। पीएम मोदी ने इस साल जनवरी में ट्रम्प के शपथग्रहण के बाद अमेरिका का दौरा किया था। इस दौरान नेताओं ने प्रेस कान्फ्रेंस की थी। इससे पहले सर्जियो गोर ने आज विदेश मंत्री जयशंकर और विदेश सचिव विक्रम मिसरी से भी मुलाकात की। इन बैठकों में दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी पर चर्चा हुई। अमेरिका के राजदूत गोर का अमेरिकी दूतावास ने भी आधिकारिक रूप से स्वागत किया और कहा कि वह भारत-अमेरिका संबंधों को और मजबूत बनाने के लिए काम करेंगे। गोर ने अमेरिकी दूतावास के बाहर खड़े होकर तस्वीर भी खिचाई। इसे दूतावास ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर शेयर किया है।

अमन-मुहब्बत, सुकून, भाईचारे की जगह है आगरा की शहीद-ए-सालिस की दरगाह

-शहीद-ए-सालिस की दरगाह देती है इंसानियत और भाईचारे का पैगाम
-दरगाह की पहचान हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आते हैं मन्नतें व मुरादें मांगने

उत्तर प्रदेश का शहर आगरा जहां एक ओर ताजमहल जैसी विश्व धरोहर के लिए मशहूर है, वहीं दूसरी ओर यह शहर अपनी रूहानी हस्तियों और सूफी संतों की वजह से भी खास पहचान रखता है। इसी सिलसिले की एक महान शख्सियत हैं हजरत शहीद-ए-सालिस रहमतुल्लाह अलैह। उनकी दरगाह आज भी हर उस इंसान के लिए रोशनी का चिराग है, जो अमन, मुहब्बत और सुकून व भाईचारे को तलाश करता है।

इतिहास और जीवन- माना जाता है कि हजरत शहीद-ए-सालिस अपनी जिन्दगी में बड़े परहेजगार, इंसान-नवाज और खुदा के नेक बंदों में से थे। उन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी इंसानियत की सेवा, नेक सलाह और मुहब्बत फैलाने में गुजारी। उनकी तालीमात यही कहती है कि इंसान का असल धर्म मुहब्बत और भलाई है।

उनकी शहादत ने उन्हें 'शहीद' का दर्जा दिलाया और उनकी याद आज भी लोगों के दिलों में ताजा है। आगरा की इस दरगाह पर लोग हर रोज दुआओं के लिए आते हैं और अपनी मुरादें मांगते हैं।

मजलिसों व अकीदत का केंद्र-शहीद-ए-सालिस की दरगाह पर हर साल मजलिसों का आयोजन होता है। आगरा ही नहीं बल्कि देश के अलग-अलग हिस्सों से जायरीन पहुंचते हैं। चादरपोशी, कुरआनख्वानी से माहौल रूहानी रंग में रंग जाता है। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भाईचारे और मोहब्बत का पैगाम देने वाला एक बड़ा सामाजिक उत्सव भी है।

मजहब और जाति से परे अकीदत-दरगाह की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यहां आने वालों पर कोई बंधन नहीं है। चाहे वह हिंदू हों, मुसलमान, सिख हो या ईसाई सब यहां एक ही मकसद से आते हैं और वह है दुआ और सुकून। यह दरगाह इंसानियत की उस मिसाल को पेश करती है, जो सदियों से भारत की गंगा-जमुनी तहजीब की पहचान रही है।

आज के दौर में अहमियत-आज जब समाज में नफरत और दूरी पैदा करने की कोशिशें होती हैं, ऐसे समय में शहीद-ए-सालिस की दरगाह मुहब्बत और अमन का झंडा बुलंद करती नजर आती है। यहां आने वाला हर शख्स यही पैगाम लेकर लौटता है कि इंसानियत सबसे बड़ा मजहब है।

शहीद-ए-सालिस (तीसरे शहीद) का संक्षिप्त परिचय

पूरा नाम: काजी नूरुल्लाह शुस्तरी, उपनाम- शहीद-ए-सालिस (तीसरे शहीद) जन्म:1549 ईस्वी (956 हिजरी), शुस्तार, ईरान, भारत आगमन: मशहद से होकर आगरा आए, जहां उन्होंने अकबर के दरबार में न्याय व्यवस्था में योगदान दिया।

मुकदमा और शहादत- जब जाहिरुद्दीन मुगल (जहांगीर) सत्ता में आए, काजी की धार्मिक किताबों विशेषकर अहकाक-उल-हक को आधार बनाकर उन पर बहिष्कार हेरिसी का आरोप लगाया गया और उन्हें खुदा-खुद दंडित कर शहीद कर दिया गया (1610)। मजार का प्रयास: उनके शव को पहले नीलाम कर छोड़ा गया, लेकिन बाद में कुछ अफगान अनुयायियों और एक ईरानी सरदार ने उनके दफन का प्रबंध किया, जो आज आगरा में उनकी दरगाह के रूप में स्थित है। विरासत- आगरा में उनकी दरगाह पर आज भी सबकी आस्था का केंद्र है, जहां विविध धर्म और तबके के लोग सिर झुकाकर श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

आगरा में शहीदे सालिस की चार दिवसीय मजलिसे होंगी 20 अक्टूबर 25 से शुरू

मौलाना डा. मिर्जा शफ़ीक हुसैन शफ़क बनाए गए हैं मजलिसों के कॉर्डिनेटर

आगरा/लखनऊ। आगामी माह अक्टूबर की 20 तारीख से 23 अक्टूबर 2025 तक चार दिवसीय मजलिसों की तैयारियां का अंतिम दौर चल रहा है। आगरा में दयाल बाग रोड स्थित मज़ार शहीद-ए-सालिस पर हर साल की तरह इस साल भी मजलिस प्रोग्राम तय हो गए हैं। मजलिस कार्यक्रम के कॉर्डिनेटर मौलाना डा. मिर्जा शफ़ीक हुसैन शफ़क ने जानकारी देते हुए बताया कि आगामी माह अक्टूबर 2025 की 20, 21, 22 व 23 तारीख पर चार दिवसीय सालाना मजलिसें शुरू हो जाएंगी, जिसके लिए तैयारियां भी जारी हैं और चार दिवसीय मजलिस में उलेमाओं के तकरीर देने के कार्यक्रम भी तय किए जा चुके हैं। उन्होंने बताया कि मौलाना सैयद कल्बे जव्वाद के ज़ेरे परस्त में आयोजित होने वाली मजलिसों व दूरदराज से आने वाले जायरीनों के लिए अच्छे इंतज़ाम किए जा रहे हैं। पूरे प्रोग्राम शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड उप्र लखनऊ के चेयरमैन अली ज़ैदी की देखरेख में आयोजित होंगे। डा. मिर्ज़ा शफ़ीक हुसैन 'शफ़क' ने जानकारी देते हुए बताया कि सालाना मजालिस बयादे शहीदे सालिस 'काजी नुरुल्लाह शूस्तरी' आगरा की याद में होंगी। इसके अलावा मैनेजर अली अब्बास रिज़वी भी मजलिसों के प्रोग्राम को सफल बनाने की तैयारियों में लगे हुए हैं। उन्होंने बताया कि 21 अक्टूबर को रात्रि आठ बजे महफिल-ए-मिदहत प्रोग्राम भी होगा।

ज़िया अब्बास ज़ैदी
वरिष्ठ पत्रकार
मोबाइल नंबर-9837776610,
ई-मेल- ziaabbaszaidist@gmail.com

अमेरिका के साथ निष्पक्ष बात करने को तैयार: ईरान

तेहरान। ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने शनिवार को कहा कि उनकी सरकार अमेरिका से निष्पक्ष और संतुलित बात करने के लिए तैयार है। अराघची ने सरकार समर्थित आईआरआईबी टीवी पर दिए अपने साक्षात्कार में परमाणु मुद्दे पर अमेरिका के साथ दोबारा बातचीत शुरू करने और प्रतिबंधों को हटाने के संबंध में ईरान का रुख बताया। उन्होंने कहा कि अगर अमेरिका ईरान के हितों की सुरक्षा करने की कोई सक्षम योजना पेश करता है, तो निश्चित रूप से उस पर गौर किया जाएगा। उन्होंने कहा कि अमेरिका के सामने हमारा रुख हमेशा स्पष्ट रहा है।

इराक ने की अमेरिकी प्रतिबंधों की आलोचना

बगदाद। इराक ने शनिवार को उसकी संस्थाओं पर हाल ही में लगाए गए अमेरिकी प्रतिबंधों की आलोचना की और इस कदम को एक 'बेहद खेदजनक' और एकतरफ़ा कार्रवाई बताया। इराकी सरकार के प्रवक्ता बसीम अल-अवदी ने एक बयान में कहा कि अमे. रिकी कानूनी उपायों के अधीन पक्षों के साथ उनके कथित संबंधों के बहाने इराकी संस्थाओं पर अमेरिकी प्रतिबंध बिना किसी पूर्व परामर्श या बात. चीत के लगाए गए, जो सहयोगी देशों के बीच संबंधों के प्रति दृष्टिकोण में एक नकारात्मक मिसाल पेश करता है।